13. भारत पर मुस्लिम आक्रमण (Muslim invasion of India)

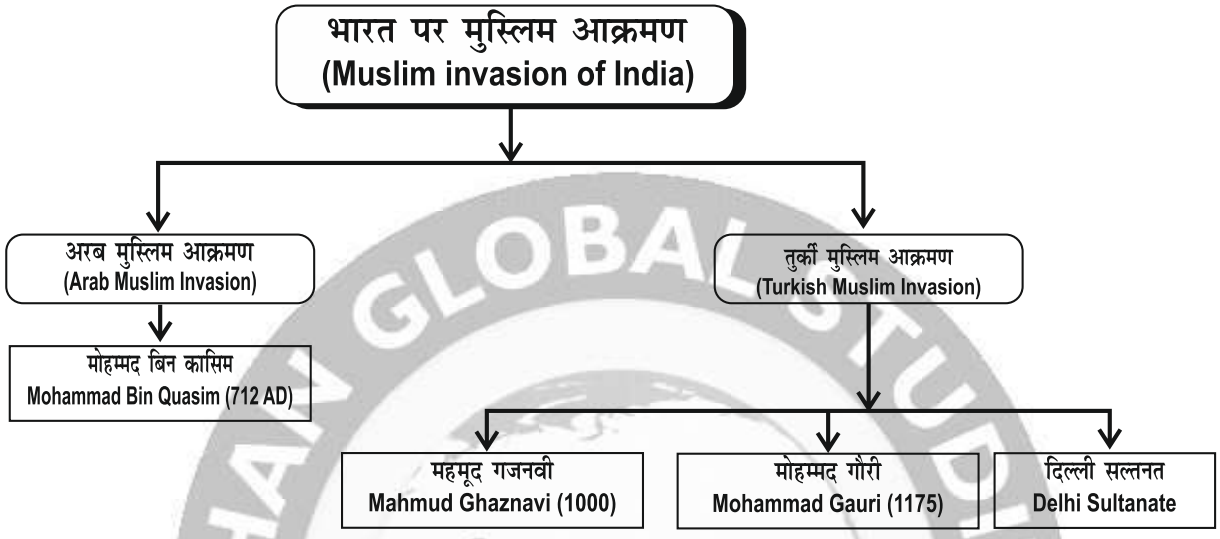

भारत पर अरब मुस्लिम आक्रमण

- भारत पर सबसे पहले मुस्लिम आक्रमण 711 ई. में बुदैला और उबैदुल्ला के नेतृत्व में हुआ। ये दोनों ही आक्रमण असफल हुए।
- भारत पर पहला सफल आक्रमण करने वाला अरब का मुस्लिम शासक **मोहम्मद-बिन-कासिम** था।
- इसने 712 ई. में रावड़ के युद्ध में सिंध के राजा दाहिर को पराजित कर दिया। राजा दाहिर 'चच' का वंशज था। उस समय सिंध की राजधानी ब्राह्मणवाद/आरोह थी।
- अरबों की सिंध विजय का प्रमाण फारसी ग्रंथ 'चचनामा (फतहनामा)' नामक ग्रंथ में मिलता है। जिसकी रचना 'अली अहमद' ने किया। इस पुस्तक की अरबी भाषा में रचना अबु मुआसिर ने किया।
- इसका भारत पर आक्रमण करने का उद्देश्य धन-दौलत लूटना और इस्लाम धर्म का प्रचार-प्रसार करना था न कि राज्य विस्तार का।
- मोहम्मद-बिन-कासिम ने 713 ई. में मुल्तान को जीत लिया और यहाँ से उसे इतना अधिक सोने का भंडार मिला कि मुल्तान को इतिहास में 'स्वर्ण नगरी' कहा जाने लगा।
- इसने जीते हुए क्षेत्र की राजधानी ''अलमन्सूरा'' को बनाया।
- मोहम्मद-बिन-कासिम के आक्रमण के फलस्वरूप अरबी संस्कृति को भारतीयों ने और कुछ भारतीय संस्कृति को अरबवासियों ने अपनाया।
- अरब और हिन्दु संस्कृति के मिश्रण के परिणामस्वरूप अरबवासियों ने भारत से खगोलशास्त्र, अंकगणित, चिकित्साशास्त्र और दर्शन के क्षेत्र में बहुत कुछ सिखा और इसका प्रचार-प्रसार पूरे यूरोप में किया।
- सर्वप्रथम अरबवासियों (मुस्लिमों) ने भारतीयों को हिन्दू कहकर संबोधित किया था और इस देश का नाम हिन्दुस्तान कहा था। अरब आक्रमण के फलस्वरूप भारत में पर्दा-प्रथा का तीव्र गति से विकास हुआ। इसके साथ ही जजिया, जकात और खराज (भू-राजस्व) नामक कर के बारे में जानकारी प्राप्त हुआ।
- **मोहम्मद-बिन-कासिम** ने भारत में सर्वप्रथम जजिया कर लगाया।
- जजिया गैर मुसलमानों से लिया जाने वाला एक प्रकार का सुरक्षात्मक कर था।

➢ **मुहम्मद बिन कासिम ने जजिया कर से 5 लोगों को मुक्त रखा–**

(i) बच्चा
(ii) बूढ़ा
(iii) ब्राह्मण
(iv) विकलांग
(v) औरत

- **फिरोज-शाह-तुगलक** ने ब्राह्मणों पर भी जजिया कर लगा दिया।
- मुगल बादशाह अकबर ने **1564 ई.** में जजिया कर समाप्त कर दिया।
- **औरंगजेब** ने 1679 ई. में पुन: जजिया कर लगा दिया।

नोटः- एकमात्र मुगलबादशाह औरंगजेब थे जिसने अंग्रेजों से भी जजिया कर वसूला।

- जजिया कर को अंतिम रूप से **मोहम्मद शाह (रंगीला बादशाह)** ने समाप्त किया।
- अरबों ने सिंध में ऊंट पालने की प्रथा तथा खजूर की खेती को प्रारंभ किया।
- चचनामा ग्रंथ के अनुसार सुलेमान के आदेश पर मुहम्मद बिन कासिम की हत्या करवा दी गई थी।

भारत पर तुर्क आक्रमण

- भारत में मुस्लिम सत्ता की स्थापना का श्रेय तुर्कों को दिया जाता है।
- तुर्क चीन की उत्तरी-पश्चिम सीमाओं पर निवास करने वाले एक लड़ाकू एवं बर्बर जाति था। जो उमैय्या वंशी शासकों के संपर्क में आने के बाद ईस्लाम धर्म अपना लिया।
  उनका उद्देश्य एक विशाल मुस्लिम साम्राज्य स्थापित करना था।
- अलप्तगीन ने 932 ई. में अफगान प्रदेश में गजनी साम्राज्य की स्थापना किया। जिसकी राजधानी गजनी थी।
- गजनी वंश का अन्य नाम यामिनी वंश भी है।
- भारत पर पहला तुर्क आक्रमणकारी सुबुक्तगीन था।
- प्रथम तुर्क आक्रमण के समय पंजाब में शाही वंश का शासक जयपाल शासन कर रहा था।
- सुबुक्तगीन अलप्तगीन का गुलाम था। जो बाद में अलप्तगीन का दामाद बना।
- इसने 986 ई. में हिन्दू शाही वंश के शासक जयपाल को पेशावर में पराजित कर दिया।

महमूद गजनवी

- सुबुक्तगीन का पुत्र महमूद गजनवी था, जो अफगान के गजनी का रहने वाला था। महमूद गजनवी 998 ई. में गद्दी पर बैठा।
- अपने पिता के काल में महमूद गजनवी खुरासान का शासक था।
- सर हेनरी इलियट के अनुसार इसने 1000 ई. से 1027 ई. के बीच कुल 17 बार भारत पर आक्रमण किया।
- इसने मध्य एशिया में एक बड़े साम्राज्य की स्थापना के लिए धन प्राप्त करने के उद्देश्य से भारत पर आक्रमण किया।
- इसने 1001 ई. में पंजाब के हिन्दूशाही वंश के ऊपर आक्रमण किया। उस समय इसकी राजधानी वैहिंद अथवा उदभाण्डपुर थी। इस समय यहाँ के शासक जयपाल थे।
- जयपाल एकमात्र शासक है जो पराजित होने पर आत्महत्या कर लिया।
- 1005 ई. में महमूद ने मुलतान पर आक्रमण किया और वहाँ के शासक करामिता सम्प्रदाय के फतहदाउद को पराजित किया।
- इसने पुनः 1008 ई. में नगरकोट पर हमला किया और ज्वालामुखी मंदिर को तोड़कर उसके अवशेष को गजनी ले जाकर मस्जिद की सिढ़ियों पर फेंक दिया।
- 1018 ई. में महमूद गजनवी ने सर्वप्रथम गंगा घाटी के क्षेत्र पर आक्रमण किया और इस समय यहाँ गुर्जर प्रतिहार शासक राज्यपाल का शासन था इसकी राजधानी कन्नौज थी।
- महमूद गजनवी को बूत शिकन (मूर्ति भंजक) कहा जाता था।
- भारत में महमूद गजनवी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अभियान 1025 से 1026 में सोमनाथ मंदिर (गुजरात के सौराष्ट्र प्रांत) पर आक्रमण था। यह एक शिव मंदिर था।
- उस समय वहाँ का शासक भीम प्रथम था। इस युद्ध में 50 हजार से अधिक लोग मारे गए थे। महमूद इस मंदिर को पूर्णतः नष्ट कर दिया तथा इसकी कुल संपत्ति को लेकर सिंध के रेगिस्तान से वापस लौट गया।
- 1027 ई. में इसने जाट के विरुद्ध अपना अंतिम आक्रमण किया और उन्हें पराजित कर दिया। क्योंकि सोमनाथ को लूटकर वापस जाते समय महमूद को जाटों ने क्षति पहुँचायी थी।
- फारूखी, उत्बी, फिरदौसी और अलबरूनी जैसे विद्वान गजनवी के दरबार में रहते थे।
- उत्बी ने किताब-उल-यामिनी की रचना की थी।
- उत्बी ने महमूद गजनवी के आक्रमणों को जेहाद की संज्ञा दी है।
- फिरदौसी ने शाहनामा लिखा, जबकि अलबरूनी ने अरबी भाषा में किताबुल हिन्द (तहकीक-ए-हिन्द) लिखा।
- अलबरूनी इतिहासकार, दार्शनिक और संगीतज्ञ था तथा इसका वास्तविक नाम अबूरेहान मुहम्मद बिन अहमद था।
- अलबरूनी खीवा (ख्वारिज्म) का रहने वाला था।
- पुराणों का अध्ययन करने वाला प्रथम मुसलमान अलबरूनी था।
- चांदी के सिक्का पर संस्कृत मुद्रालेख गजनवी ने प्रारंभ किया था। जिसके एक तरफ अरबी भाषा तथा दूसरी तरफ संस्कृत भाषा का प्रयोग हुआ था।
- महमूद गजनवी को बगदाद के खलीफा अल-कादिर-बिल्लाह ने सुल्तान कहकर संबोधित किया। खलीफा ने इसको यामिन-उद्दौला और यामिन-उद्-बिल्लाह की उपाधि से सम्मानित किया।
- महमूद गजनवी के सिक्कों पर अमीर महमूद शब्द अंकित मिलता है।
- 1030 ई. में महमूद गजनवी का असाध्य रोग (मलेरिया) से मृत्यु हो गई।
- महमूद गजनवी प्रथम शासक था जिसने सुल्तान की उपाधि धारण की थी।
- महमूद गजनवी का सेनापति अयाज सुल्तान था।
- महमूद ने बहुजातीय सेना का गठन किया, इसकी सेना में अरब, तुर्क, अफगान और हिन्दू सैनिक भी शामिल थे जिसमें से उसका एक हिन्दू सेनापति **तिलक** भी था।

- गजनवी वंश का अंतिम शासक खुसरो मलिक था जिसकी हत्या मुहम्मद गौरी ने की थी।

तुर्क आक्रमण का दूसरा चरण (महमूद गौरी)

- तुर्क एक जनजाति थी जो अफगानिस्तान के क्षेत्र की थी।
- इसके दूसरे चरण का नेतृत्व मोहम्मद गौरी ने किया।
- इसका पूरा नाम मोहम्मद गौरी या मुईजुद्दीन मुहम्मद बिन शाम (शिहाबुद्दीन)था। इसे गौर वंश का मोहम्मद भी कहा जाता है।
- गौर वंश में जो प्रधान था उसका नाम शंसबनि था। मोहम्मद गौरी इसी वंश का शक्तिशाली शासक था।
- 1173 ई. में मोहम्मद गौरी गौर प्रदेश का शासक बना।
- 1175 ई. में इसने मुल्तान एवं सिंध पर आक्रमण किया।
- 1178 ई. में इसने पाटन (गुजरात) पर आक्रमण किया उस समय वहाँ चालुक्य वंशीय शासक भीम-II (मूलराज्य द्वितीय) का शासन था। जो गौरी को बूरी तरह परास्त किया।
- यह तुर्क आक्रमणकारियों की पहली पराजय थी अर्थात् मोहम्मद गौरी की भारत में पहली पराजय थी।
- मोहम्मद गौरी 1179 ई. में पेशावर, 1181 में लाहौर तथा 1184 ई. में सियालकोट को जीत लिया।
- इसने पंजाब के भटिंडा पर जब अधिकार किया तो पृथ्वीराज चौहान-III से विवाद हो गया।
- 1191 ई. के तराईन के प्रथम युद्ध में पृथ्वीराज चौहान-III ने गौरी को पराजित कर दिया। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान का सेनापति स्कन्द था।
- 1192 ई. के तराईन के द्वितीय युद्ध में मोहम्मद गौरी ने जयचंद्र के सहयोग से पृथ्वीराज चौहान-III को पराजित कर दिया और उनकी हत्या कर दी।
- महमूद गजनवी का सेनापति मल्लिक अयाज सुल्तान था।
- इतिहासकार बी.एस. स्मिथ ने कहा कि तराईन का द्वितीय युद्ध ऐसा निर्णायक युद्ध साबित हुआ जिसमें भारत पर मुसलमानों की आधारभूत सफलता निश्चित कर दिया। बाद में होनेवाले आक्रमण परिणाम मात्र थे।
- तराईन के युद्ध के बाद गौरी ने मेरठ, अलीगढ़ पर अधिकार कर दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया।
- 1194 ई. के चंदावर के युद्ध में (फिरोजाबाद) उसने कन्नौज के शासक जयचंद को पराजित कर दिया।
- मोहम्मद गौरी का गुलाम तथा कुतुबद्दीन ऐबक का सेनापति बख्तियार खिलजी 1198 ई. में नालंदा विश्वविद्यालय को ध्वस्त कर दिया तथा बिहार शरीफ नामक शहर बसाया।
- 1205 ई. में गौरी ने अपना अंतिम अभियान पंजाब के खोखर जातियों के विरुद्ध किया।
- मोहम्मद गौरी का सेनापति मोहम्मद बिन बख्तियार खिलजी ने 1203 ई. में बिहार विजय, 1204-05 में बंगाल विजय तथा 1206 ई. में असम पर आक्रमण किया।
- बिहार को जीतने वाला प्रथम मुस्लिम विजेता बख्तियार खिलजी को माना जाता है। बख्तियार खिलजी ने लखनौती को अपनी राजधानी बनाई थी।
- बख्तियार खिलजी के हत्या उसके ही अधिकारी अलीमर्दान खिलजी ने की थी।
- बख्तियार खिलजी के बंगाल आक्रमण के समय वहाँ सेन वंश की शासक लक्ष्मण सेन का शासन था, जिसकी नदियाँ थी।
- गौरी के समय सिक्कों पर हिन्दु देवी लक्ष्मी तथा नंदी के चित्र का अंकन मिलता है। उनपर देवनागरी लिपि में मोहम्मद-बिन-साम अंकित है।
- मोहम्मद गौरी के साथ प्रसिद्ध चिश्ती संत मोइनुद्दीन चिश्ती भारत आए थे। जिन्होंने भारत में चिश्ती सम्प्रदाय की स्थापना की।
- मोहम्मद गौरी का कोई पुत्र नहीं था तथा जयचंद को पराजित करने के बाद गोरी द्वारा भारत में जीते गए प्रदेशों को कुतुबद्दीन ऐबक को सौंप कर वापस गजनी लौट गया।
- मोहम्मद गौरी ने कुतुबद्दीन ऐबक को प्रथम अक्ता प्रदान किया था।
- 1206 ई. में दमयक नामक स्थान पर रामलाल खोखर ने मोहम्मद गौरी की हत्या कर दी।
- मोहम्मद गौरी को गजनी में दफनाया गया।

➢ **मोहम्मद गौरी के तीन प्रमुख गुलाम थे–**

(i) कुतुबुद्दीन ऐबक
(ii) याल्दोज
(iii) कुबाचा।

Note :– भारत में कागज का उपयोग 12वीं शताब्दी से प्रारंभ हुआ था।

❐❐❐

14. दिल्ली सल्तनत (Delhi Sultanate)

- 1206 ई. से लेकर 1526 ई. तक के कुल 320 वर्षों तक दिल्ली पर मुस्लिम सुल्तानों का शासन रहा।
- भारत पर शासन करने वाले पाँच वंश के सुल्तानों के शासनकाल को दिल्ली सल्तनत या सल्तनत-ए-हिन्द/ सल्तनत-ए-दिल्ली कहा जाता है।

➢ **ये पाँच वंश निम्न थे–**

1. गुलाम वंश (1206-1290)
2. खिलजी वंश (1290-1320)
3. तुगलक वंश (1320-1414)
4. सैयद वंश (1414-1451)
5. लोदी वंश (1451-1526)

- इनमें से चार वंश मूलत: तुर्क थे जबकि अंतिम वंश अफगान था।

Trick :–

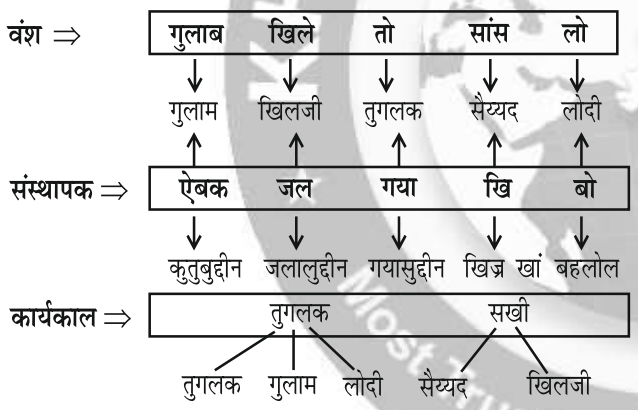

गुलाम वंश (1206 ई.-1290ई.)

- इस वंश को गुलाम वंश इसलिए कहते हैं क्योंकि इसके संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक मोहम्मद गौरी के गुलाम थे।
- गुलामो को फारसी में बंदगा कहा जाता है तथा इन्हें सैनिक सेवा के लिए खरीदा जाता था।
- इस वंश का दरबारी भाषा फारसी था और इस वंश की सबसे प्रमुख भाषा भी थी।
- इस वंश को इलबरी, ममलूक या दास कहा जाता है।

गुलाम वंश के प्रमुख शासक

1. कुतुबुद्दीन ऐबक (कुतुबी वंश)– 1206-1210 ई.
2. आरामशाह – 1210 ई. (कुछ महिने)
3. इल्तुतमिश (शम्सी/इल्बरी वंश)– 1211-1236 ई.
4. रूकनुद्दीन – 1236 ई.
5. रजिया सुल्तान – 1236-1240 ई.
6. बहराम शाह – 1240-1242 ई.
7. अलाउद्दीन मसूद शाह – 1245-1246 ई.
8. नसीरउद्दीन शाह – 1246-1266 ई.
9. बलबन/बहाउद्दीन (बलबनी वंश) – 1266-1286 ई.
10. कैकूबार – 1286-1290 ई.
11. क्यूमर्श – 1290 ई.

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206 ई.-1210 ई.)

- ऐबक मुहम्मद गौरी के तीन प्रमुख गुलामों में से एक था।
- मुहम्मद गोरी की मृत्यु के बाद ऐबक 1206 में स्वयं को लाहौर का स्वतंत्र शासक घोषित किया।
- मुहम्मद गौरी ने कुतुबुद्धीन ऐबक को अमीर-ए-आखुर के पद पर प्रोन्नत कर दिया।
- ऐबक ने अपनी राजधानी की लाहौर को बनाया था।
- ऐबक का अर्थ 'चंद्रमा का देवता' होता है।
- दिल्ली का प्रथम मुस्लिम शासक कुतुबुद्दीन ऐबक था।
- ऐबक को दिल्ली का पहला तुर्क शासक माना जाता है।
- दिल्ली के सुल्तान पद सम्भालने से पहले ऐबक दिल्ली का गवर्नर था।
- इन्होंने सुल्तान की उपाधि नहीं धारण की, न ही अपने नाम का खुतबा पढ़वाया और ना ही अपने नाम के सिक्के चलाये बल्कि इन्होंने केवल मलिक तथा सिपहसलार की उपाधि धारण की।
- ये गरीबों के प्रति दया का भाव रखते थे अत: इन्हें हातिम कहा गया।
- ये लाखों में दान देते थे। अपनी असीम उदारता के कारण इन्हें लाख बख्श भी कहते हैं।
- इन्हें पूरा कुरान याद था इसलिए इन्हें कुरान खान भी कहा जाता है।
- इनके दरबार में मिनहाज-उस-सिराज रहते थे, जिन्होंने तबकात-ए-नासरी पुस्तक लिखी है।
- इनके दरबार मे हसन निजामी भी थे, जिन्होंने ताज-ऊल-नासिर पुस्तक लिखी है।
- ऐबक ने अजमेर विजय के बाद वहाँ पर ढाई दिन का झोपड़ा नामक मस्जिद बनवायी।
- ऐसा माना जाता है कि यह किसी संस्कृत विद्यालय के स्थान पर बनाया गया है।

- ऐबक ने दिल्ली में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद बनवायी।
- इसके प्रांगण में लौह स्तंभ पर चंद्रगुप्त द्वितीय का स्मृति मिलता है।
- इण्डो ईस्लामिक कला का सबसे पहला उदाहरण कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद में मिलता है।
- यह भारत में इस्लामी पद्धति पर निर्मित पहली मस्जिद थी।
- ऐबक के गुरु बख्तियार काकी थे।
- कुतुबमीनार बख्तियार काकी के याद में ऐबक द्वारा बनवाया गया था।
- ऐबक ने अफगानिस्तान के जाम मीनार से प्रेरित होकर दिल्ली (महरौली) में कुतुबमीनार (1193 ई. में) बनवाई किन्तु पूरा नहीं कर सका।
  1. ऐबक कुतुबमीनार को 2 मंजिल बनवाया था, जबकि शेष 3 मंजिल को इल्तुतमिश ने पूरा किया। **मुहम्मद बिन तुगलक** के समय इस मीनार पर बिजली गिर गयी। उसके बाद फिरोज-शाह-तुगलक ने इसका जीर्णोधार किया।
  2. अल्लाउद्दीन खिलजी इस मिनार के प्रतिद्वंद्वी मीनार के रूप में अलाई मीनार बनवाना प्रारंभ किया, किंतु इंजीनियरों की गलती के कारण यह सफल नहीं हुआ।
  3. अलाउद्दीन खिलजी ने कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद के प्रवेश द्वार के रूप में अलाई-दरबार बनवाया।
- 1210 ई. में लाहौर में चौगान (पोलो) खेलते समय घोड़े से गिरने से कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु हो गई।
- ऐबक का सहायक सेनापति बख्तियार खिलजी था।
- ऐबक का मकबरा लाहौर में है।
- ऐबक को घुड़सवारी और धनुर्विद्या अब्दुल अजीज कुफी द्वारा सिखाया गया था।

आरामशाह (1210 ई.-1211 ई.)

- यह ऐबक का उत्तराधिकारी था, किन्तु अयोग्य था।
- 1211 ई. में इल्तुतमिश ने इसे हटाकर खुद शासक बन गया।
- यह मात्र आठ महिने तक शासन किया था।
- इसकी हत्या इल्तुतमिश द्वारा कर दी गयी थी।

शम्सी वंश (इल्तुतमिश 1211 ई.-1236 ई.)

- इसे गुलाम का गुलाम कहते हैं, क्योंकि यह ऐबक का गुलाम था।
- यह 1211 ई० में गद्दी पर बैठा।
- इसके बचपन का नाम अल्तमश था।
- इसका पूरा नाम शम्सउद्दीन इल्तुतमिश था।
- इसके पिता का नाम ईलम खां था जो इलबरी तुर्क था।
- 1215 के तराईन के तृतीय युद्ध में इसने याल्दोज को पराजित कर दिया।
- इसने सुल्तान की उपाधि धारण की तथा अपने नाम का खुतबा पढ़वाया।
- शासक बनने से पहले यह बदायुँ (उत्तरप्रदेश) का सूबेदार था।
- इसने अपनी राजधानी लाहौर से दिल्ली को बनाया।
- इसने शासक बनने के लिए 1229 ई. में खलिफा अल मुनतसीर बिल्लाह से खिल्लत (Degree) हासिल की।
- इल्तुतमिश को गुंबद तथा मकबरा निर्माण का जनक कहते हैं।
- इल्तुतमिश ने अपने पुत्र नसिरूद्दीन महमूद का मकबरा सुल्तान गढ़ी में बनवाया।
- इल्तुतमिश ने न्याय मांगने के लिए लाल वस्त्र पहनने की परंपरा चलवाया।
- इल्तुतमिश ने भारत में इक्ता व्यवस्था का प्रारंभ की। इक्ता एक अरबी शब्द है।
- इक्ता की जानकारी अबु अलीहसन द्वारा रचित सियासतनामा में मिलती है।
- इक्ता व्यवस्था में कर्मचारियों को वेतन के बदले भूमि दिया जाता था।
- इसने 40 तुर्क सरदारों का एक सलाहाकर परिषद् बनाया जिसे तुर्कान-ए-चिहलगानी या चालीसा दल कहते हैं।
- इसके समय ख्वाजरिज्म के शासक जियाउद्दीन मांगबरनी का पीछा करते हुए चंगेज खाँ दिल्ली की सीमा तक पहुँच गया। अत: इल्तुतमिश ने जियाउद्दीन को अपनी शरण नहीं दी।
- इल्तुतमिश को शुद्ध इस्लामिक पद्धति का वास्तविक संस्थापक कहते हैं।
- 1225 ई. में इल्तुतमिश ने बिहार शरीफ तथा बाढ़ पर अधिकार किया।
- यह बिहार में अपना प्रथम सुबेदार मलिक अल्लाउद्दीन जानी को नियुक्त किया था।
- यह शुद्ध अरबी सिक्का चलाने वाला प्रथम शासक था।
- इसने चाँदी का टंका तथा ताँबे का जीतल प्रारंभ किया।
- ख्वाजामुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह को इल्तुतमिश द्वारा बनवाया गया था।
- तबकात-ए-नासिरी पुस्तक के लेखक मिनहास-उस-सिराज है।
- 1236 ई. को इल्तुतमिश की मृत्यु हो गई। इसने अपने जीवन काल में ही रजिया सुलतान को उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया था।
- इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद 40 सरदारों ने रजिया को शासक न बनाकर रूक्नुद्दीन फिरोजशाह को शासक बना दिया।
- उसके शासन काल में सल्तनत की वास्तविक सत्ता उसकी माता शाहर्तुकान के हाथों में था। वह अति महत्वाकांक्षी और निर्दयी महिला थी।
- रजिया ने न्याय के लिए लाल वस्त्र पहनकर मस्जिद के आगे चली गई और जनता के हस्तक्षेप के बाद वह शासिका बनी।

रजिया सुल्तान (1236 ई.-1240 ई.)

- यह भारत की प्रथम महिला शासिका थी। यह पुरुषों की भांति वस्त्र कुबा (कोट) और कुलाह (टोपी) पहनकर दरवार आने लगी जो 40 तुर्क सरदारों को पसंद नहीं था।

- दिल्ली के जलालुद्दीन याकूत (अश्वशाला का प्रधान) के साथ रजिया का घनिष्ठ संबंध थे। इसे अमीर-ए-आखुर नियुक्त किया।
- रजिया सुलतान ने अपने हिसाब से इक्ताओं में परिवर्तन एवं अधिकारियों को नियुक्त किया। इस क्रम में एतगीन को बदायूँ को इक्तादार और फिर **'अमीर-ए-हाजिब'** का पद दिया, अल्तुनिया को सरहिन्द (भटिण्डा) का इक्तादार नियुक्त किया।
- तवरहिन्द (भटिंडा- पंजाब) के इक्तादार मलिक अल्तुनिया ने रजिया की अधीनता मानने से इंकार कर दिया। जिस कारण रजिया ने उस पर आक्रमण कर दिया। किन्तु युद्ध में खुद को हारता देख रजिया ने अल्तुनिया से विवाह कर लिया। किन्तु रास्ते में लौटते समय डाकुओं के हमले में हरियाणा के कैथल में रजिया एवं अल्तुनिया की हत्या हो गई।
- दिल्ली में 40 सरदारों ने याकूत की हत्या कर दी।
- रजिया एक असफल शासिका साबित हुई और इसका प्रमुख कारण इसका महिला होना था।
- इतिहासकारों (एलफिस्टंन) का कहना है कि अगर रजिया महिला न होती तो इसका नाम भारत के महान् शासकों में लिया जाता।
- इतिहासकार (मिनहाज) कहना है कि ''भाग्य ने उसे पुरूष नहीं बनाया वरना उसके समस्त गुण उसके लिए लाभप्रद हो सकते थे। रजिया में वे प्रशंसनीय गुण थे जो एक सुल्तान में होना चाहिए।''

बहराम शाह (1240 ई.-1242 ई.)

- रजिया सुल्तान के बाद बहराम शाह **1240** ई. में दिल्ली के गद्दी पर बैठा।
- बहरामशाह के शासनकाल में ही सल्तनत में प्रथम बार सन् **1241** ई. में मंगोलों ने **''तैर''** के नेतृत्व में भारत पर आक्रमण किया, उसका प्रथम आक्रमण मुल्तान पर था।
- बहराम शाह को दिल्ली के तुर्क सरदारों द्वारा बंदी बनाकर **1242** ई. में उसकी हत्या कर दी गई।

अलाउद्दीन मसूद शाह (1242 ई.-1246 ई.)

- यह दिल्ली के गद्दी पर **1242** ई. में बैठा।
- यह सिक्कों पर बगदाद के अंतिम खलीफा का नाम सर्वप्रथम अंकित करवाया था।
- अलाउद्दीन मसूदशाह के शासनकाल में समस्त शक्ति चालीस अमीरो के समूह **तुर्कान-ए-चिहलगानी** के हाथों में था।
- यह अपना **अमीर-ए-हाजिब** गयासुद्दीन बलबन को नियुक्त किया।
- बलबन के षड्यंत्र के द्वारा **1246** ई. में अलाउद्दीन मसूद शाह को सुल्तान के पद से हटाकर **नसीरूद्दीन महमूद** को गद्दी पर बैठा दिया गया।

नसीर-उद्दीन-शाह (1246 ई.-1266 ई.)

- नासिरूद्दीन महमूद इल्तुमिश का पौत्र तथा शम्सी वंश का अंतिम शासक था।
- यह एक मितव्ययी (कम-खर्चीला) शासक था।
- यह टोपी सिलकर अपना जीवन-यापन करता था।
- इसने एक गुलाम को चालीसा दल में स्थान दिया, यह गुलाम बलवन था।
- बलबन अपनी पुत्री का विवाह सुलतान नासीरूद्दीन शाह से किया था।
- इसने बलबन को उलुग खाँ की उपाधि दिया।
- इसके समय बलबन की शक्तियाँ बहुत ही बढ़ गई थी।
- इसकी मृत्यु 1266 ई. के बाद इसका उत्तराधिकारी गयासुद्दीन बलबन बना।
- नासीरूद्दीन का मकबरा 'सुल्तान गढ़ी' में है।

बलबन (1266 ई.-1286 ई.)

- बलबन का वास्तविक नाम बहाउद्दीन था, वह इलबरी जाति का तुर्क था।
- यह इरान का रहने वाला था।
- इसका पूरा नाम गयासुद्दीन बलबन था।
- दिल्ली के सुल्तान का पद संभालने से पहले बलबन नासिरूद्दीन सुल्तान का प्रधानमंत्री था।
- रजिया सुल्तान के समय बलबन अमीर-ए-शिकार के पद पर था।
- दिल्ली के सुल्तान पद संभालने से पहले बलबन को महमूद शाह सुल्तान ने अपना अमीर-ए-हाजिब बनाया था।
- यह दिल्ली के गद्दी पर 1266 ई. में बैठा।
- इसने सिजदा (घुटने पर बैठकर शीश नवाना) तथा पैबोस (पांव को चूमना) जैसी इरानी पद्धति को भारत में लागू किया।
- इसने नौरोज त्यौहार (फारसी) भी प्रारंभ किया।
- इसने राजा के राजत्व सिद्धांत को लागू किया।
- बलबन के राजत्व सिद्धांत का स्वरूप इरान के फारसी तत्वों से लिया गया है, इसके अंतर्गत बलबन सुल्तान को पृथ्वी पर अल्लाह का प्रतिनिधि मानता था।
- बलबन कहता था कि सुल्तान नियाबत-ए-खुदाई एवं जिल्ल-ए-इलाही है।
- इसने कहा कि राजा ईश्वर का प्रतिनिधि या छाया होता है।
- इसने 'लौह एवं रक्त' की नीति अपनाई अर्थात् आक्रमण नीति को अपनाया।
- बलबन ने चालीसा दल को समाप्त कर दिया।
- बलबन ने नायब के पद को भी समाप्त कर दिया, और वजीर के अधिकार को भी सीमित कर दिया।
- बलवन ने U.P. में एक गढ़-मुक्तेश्वर मस्जिद बनवायी।

- यह अपने दरबार का गठन फारसी पद्धति पर किया था।
- यह अपनी शक्ति को संगठित करने के बाद जिल्लेईलाही का उपाधि धारण किया था।
- बलबन ने स्वयं को नाईब-ई-खुदाई कहा था।
- प्रथम बार ईमारतों में मौजूद शाही मेहराब बलबन के मकबरा में देखा गया था।
- बलबन ने सीमा विस्तार की नीति को नहीं अपनाई।
- इसके शासनकाल में विद्रोह करने वाला तुगरील खां बंगाल का गवर्नर था।
- बलबन दिल्ली का प्रथम सुल्तान था जिसने दरबार में गैर-ईस्लामिक प्रथाओं का प्रचलन किया। इसी के समय सेना को वंशानुगत बना दिया था।
- इसने दीवान-ए-अर्ज नामक सैन्य विभाग की स्थापना किया।
- फारसी कवि अमिर खुसरो और अमिर हसन बलबन के दरबार में रहते थे।
- 1286 ई. में फिरोजशाह ने इसकी हत्या कर दी, जिसे जलालुद्दीन खिलजी भी कहते हैं।
- अगला शासक कैकुबाद बना जो एक अयोग्य शासक था। इसने एक वर्ष तक शासन किया।

कैकूबाद (1287 ई.-1290 ई.)

- यह दिल्ली के गद्दी पर 1287 ई. में बैठा।
- यह मुईयुद्दीन की उपाधि धारण किया था।
- इसके सेनापति का नाम जलालुद्दीन-फिरोज-खिलजी था।
- जलालुद्दीन-फिरोज-खिलजी द्वारा इसकी हत्या करके उसे यमुना नदी में फेंक दिया गया।

शमशुद्दीन कैयूमर्स (1290 ई.)

- कैकूबाद का पुत्र शमशुद्दीन को कैयूमर्स की उपाधि दिया गया था।
- यह गुलाम वंश का अंतिम शासक था।

खिलजी वंश (1290 ई.-1320 ई.)

- खिलजी वंश के स्थापना को इतिहासकारों ने खिलजी क्रांति का नाम दिया है।
- खिलजीयों ने ही भारतीयों को उच्च पदों पर नियुक्ति करने की परम्परा आरम्भ की थी।
- दिल्ली सल्तनत के इतिहास में यह वंश एक नये युग का सूत्रपात था जिसे आगे तुगलकों ने भी अपनाया था।

जलालुद्दीन-फिरोज-खिलजी (1290 ई.-1296 ई.)

- खिलजी वंश के संस्थापक जलालुद्दीन फिरोज खिलजी थे।
- इनकी राजधानी किलोखरी थी।
- इन्होंने जनता के इच्छाओं के अनुरूप ही शासन किया। ये एक उदारवादी शासक थे।
- इन्होंने दक्षिण भारत विजय के लिए अपने भतीजा (दामाद) अलाउद्दीन खिलजी को भेजा।
- अलाउद्दीन खिलजी ने दक्षिण भारत को जीतकर वहाँ से अत्यधिक धन लूटा।
- जलालुद्दीन ने जब इससे धन का हिसाब मांगा तो इसने उसकी हत्या (1296 ई. में) कड़ा मनीकपुर (इलाहाबाद) में कर दी।
- जलाउद्दीन फिरोजशाह खिलजी सल्तनत का पहला ऐसा सुल्तान था जिसकी आंतरिक नीति दूसरो को प्रसन्न करने के सिद्धांत पर आधारित थी।
- जलाउद्दीन कहा करते थे कि मैं एक वृद्ध मुसलमान हूँ और मुसलमानों की रक्त बहाने की मेरी आदत नहीं है।

अलाउद्दीन खिलजी (1296ई.-1316ई.)

- इसके बचपन का नाम अली गुर्शास्प था।
- इनका राज्याभिषेक बलबन के लाल महल में हुआ था।
- इसने सिकंदर की भांति विश्व विजय का अभियान चलाया। अत: इसे द्वितीय सिकंदर या सिकंदर-ए-सानी कहते हैं।
- इसने खलीफा के पद को मान्यता दिया।
- यह एक नया धर्म चलाना चाहता था। किन्तु उलेमा अनाउल्लमुल्क (विद्वान मौलाना) के कहने पर इसने यह निर्णय बदल दिया।
- इसने कुतुबमीनार के प्रतिद्वंद्वी मीनार के रूप में अलाई-मीनार बनवाना प्रारंभ किया परन्तु यह बहुत छोटा बन पाया।
- इसने कुब्बत-उल-इस्लाम मस्जिद के प्रवेश द्वार के रूप में अलाई दरबार नामक दरवाजा बनवाया।
- मार्शल साहब ने इसे इस्लामी स्थापत्य कला के खजाने का सबसे हीरा कहा।
- इसने मूल्य नियंत्रण के लिए बाजार प्रणाली को लाया और सार्वजनिक वितरण प्रणाली को लागू किया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने घोड़ों की पहचान के लिए घोड़ा दागने की परंपरा एवं हुलिया लिखने की प्रथा लागू की।

➢ **इसने शासक बनने के बाद 4 घोषणाएँ की–**

1. स्थायी गुप्तचर की स्थापना।
2. दान में दी गई भूमि को खालसा भूमि (सरकारी भूमि) में परिवर्तन।
3. मद्यपान (नशा/शराब) पर प्रतिबंध।
4. छोटे त्योहार तथा अमीरों के मिलने पर प्रतिबंध लगा दिया।

अलाउद्दीन खिलजी के आर्थिक सुधार

➢ **इसके समय 4 प्रमुख कर थे–**

1. **जजिया–** यह गैर मुसलमानों से लिया जाता था।
2. **जकात–** यह मुसलमानों के आय पर लिया जाता था।
3. **खराज–** यह मुसलमानों का भूमि कर था।
4. **खुम्स–** यह सैनिकों से लूट पर लिया जाने वाला कर था। मकान पर घरी नामक कर तथा चारागाह पर चरी नामक कर लिया जाता था।

- इन्होंने अधिक से अधिक भूमि को खालसा भूमि में परिवर्तन कर दिया गया इसके तहत दान में मिल्क, वक्फ आदि के रूप मे दी गई जमीन को वापस ले लिया।
- इसके समय खालसा भूमि सबसे अधिक विकसित हुई। जो राजा के नियंत्रण में होता था।
- यह सल्तनत काल पहला शासक था जिसने भूमि की पैमाईश (माप) करवाया और उसी आधार पर कर (Tax) का निर्धारण किया।
- इसने भू-राजस्व की दर उपज का 1/3 के स्थान पर कुल उपज का 1/2 (50%) कर के रूप में निर्धारित किया।
- इसके समय लूट प्राप्त धन का 80% राजकर के रूप में लिया जाता था।
- दीवान-ए-मुस्तखराज का प्रारंभ अलाउद्दीन खिलजी ने ही किया था। जिसका संबंध भू-राजस्व से था।
- इसी के समय राशनिंग प्रणाली लागू हुआ।
- यह प्रथम शासक था जिसने भूमि की वास्तविक उत्पादन पर राजस्व निर्धारण किया था।
- अलाउद्दीन खिलजी की आर्थिक नीति की व्यापक जानकारी जियाउद्दीन बरनी की कृति तारीखे फिरोजशाही से मिलती है।

बाजार नियंत्रण प्रणाली

- अलाउद्दीन खिलजी मध्यकालीन भारत का पहला ऐसा शासक था जिसने राजकीय आवश्यकताओं की पूर्त्ति हेतु बाजार की गतिविधियों को भी नियंत्रित किया।
- अलाउद्दीन द्वारा नियुक्त परवाना-नवीस नामक अधिकारी वस्तुओं की परमिट जारी करता था।
- बरनी के अनुसार अलाउद्दीन खिलजी ने बाजार नियंत्रण के लिए तीन प्रकार के बाजारों की स्थापना की।

1. मंडी अथवा गल्ला बाजार

- यह एक प्रकार का अनाज मंडी था।
- उसने नगर के प्रत्येक मोहल्ले में इस प्रकार के बाजार के स्थापना की।
- उसने इसके लिए मलिक कबूल को बाजार का अधीक्षक (शाहना -ए-मंडी) नियुक्त किया।

2. सराय-ए-अदल

- यह अलाउद्दीन द्वारा दूसरा बाजार था। इसमें विदेशों एवं अधीनस्थ प्रदेशों से आने वाली वस्तुओं का व्यापार होता था।

3. घोड़ों, दासों व मवेशियों का बाजार

- इस बाजार में घोड़ों, दासों व मवेशियों की ब्रिक्री होती थी।
- इस बाजार को दलालों से मुक्त कर दिया था।

अलाउद्दीन खिलजी के विभाग

(i) दीवाने आरिज– सैन्य विभाग

(ii) दीवाने इंशा– शाही आदेशों को पालन करवाना/पत्राचार विभाग।

(iii) दीवाने वजारत/विसारत– वजीर/P.M. यह प्रधानमंत्री का पद था, जो वजीर के नियंत्रण में था। यह सबसे महत्वपूर्ण पद था।

(iv) दीवाने रसातल– यह विदेश विभाग था + धार्मिक मामलें।

(v) दीवाने रियासत– यह बाजार पर नियंत्रण रखता था।

अलाउद्दीन खिलजी का सैन्य अभियान

- अलाउद्दीन खिलजी ने उत्तर-भारत तथा दक्षिण-भारत दोनों का अभियान किया।
- इसके समय सर्वाधिक मंगोल आक्रमण हुए। इस आक्रमण के कारण इसकी उत्तरी सीमा असुरक्षित हो गई।
- अलाउद्दीन, खिलजी ने व्यापार के लिए समुद्री मार्ग पर ध्यान दिया और इस उद्देश्य से 1297 ई. में गुजरात के शासक राय कर्ण को पराजित कर दिया। इस आक्रमण का नेतृत्व नुसरत खां कर रहे थे। इसी दौरान 1000 दीनार में मलिक काफूर (चंदराम) नामक हिजड़ा को खरीदा गया।
- मलिक काफूर को हजार दीनारी भी कहते हैं।
- नूसरत खां ने मल्लिक काफूर को खरीदकर 1298 ई. में गुजरात विजय से वापस आने पर अलाउद्दीन को उपहार भेंट किया था।
- गुजरात मार्ग में राजस्थान के शासक बाधा बन रहे थे।
- 1301 ई. में अलाउद्दीन ने रणथम्भौर जीता।
- इसी अभियान के समय नूसरत खां मारा गया।
- 1303 ई. में अलाउद्दीन ने चित्तौड़ जीता।
- 1303 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने सीरी दुर्ग का निर्माण करवाया था।
- चित्तौड़ अभियान अलाउद्दीन ने रानी पद्मावती के लिए किया और यहाँ के राजा रतन सिंह को पराजित कर दिया, किन्तु चित्तौड़ की महिलाओं ने जौहर कर लिया।
- राजपूत महिलाएँ विदेशी आक्रमण से स्वयं के स्वाभिमान की रक्षा के लिए जलती आग में कूद जाती थी, जिसे जौहर कहते हैं।
- इन्होंने चितौरगढ़ का नाम बदलकर खिज्राबाद कर दिया था।
- अलाउद्दीन ने दक्षिण-भारत विजय की जिम्मेदारी मलिक काफूर को दिया।
- मलिक काफूर ने 1307 ई. में देवगिरि के शासक रामचंद्र देव को पराजित कर दिया। किन्तु रामचंद देव की वीरता को देखकर अलाउद्दीन ने उसे गुजरात के नौसारी का जागीरदार बना दिया।
- 1309 ई. में इसने वारंगल के शासक प्रतापरुद्र देव को पराजित कर दिय। प्रताप रूद्र देव ने अपने सोने की मूर्ति बनाई और उसमें जंजीर पहनाकर अलाउद्दीन को भेजा और साथ ही कोहिनूर हीरा भी भेजा एवं अधीनता स्वीकार कर ली।

- 1310 ई. में मलिक काफूर ने होयसल वंश पर आक्रमण किया किन्तु उसकी राजधानी द्वारसमुद्र को नहीं जीत सका।
- 1311 ई. में मलिक काफूर ने पांड्य वंश की राजधानी मदुरै जीत ली।
- इसका उत्तर भारत का अंतिम अभियान 1311 ई. में जालौर के विरूद्ध था।
- अलाउद्दीन जब निजामुद्दीन औलिया से भूमि का हिसाब मांगा तो उसने कहा कि 'मेरे घर में 10 दरवाजे हैं'।

➢ **अलाउद्दीन के 4 प्रमुख सेनापति–**

1. जफर खां
2. नुसरत खां
3. उलुग खां
4. मलिक काफूर

- यह अपने चारों सेनापति की तुलना पैगम्बर के खलीफा से करता था।
- अलाउद्दीन खिलजी ने मंगोल आक्रमण को रोकने के लिए उलुग खाँ, जफर खाँ तथा नुसरत खाँ सेनापतियों की सहायता ली।
- मंगोलों से लड़ते समय जफर खां की मृत्यु 1299 ई. हो गई थी।
- अलाउद्दीन की समय में अंतिम मंगोल आक्रमण 1307 ई. में इकबाल बन्दां कुबक की सेनाओं द्वारा किया गया था जो एक असफल अभियान रहा था।
- अलाउद्दीन खिलजी के समय मंगोल तथा सल्तनत के बीच सिंधु नदी को सीमा बनाया गया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने खलीफा के आदेशों की अवहेलना कर दी।
- इतिहासकार बरनी कहते हैं कि जब अलाउद्दीन शासक बना तो इस्लामिक कानून (शरियत) से खुद को मुक्त (घोषित) कर दिया और एक नए धर्म प्रारंभ करने का प्रयास भी किया।
- अलाउद्दीन खिलजी तुर्क कबीले का था। इसने सैनिकों के लिए वेश-भूषा (ड्रेस) का निर्धारित किया।
- कर चोरी को रोकने के लिए इसने प्रांतों के गवर्नर की शक्ति को समाप्त कर दिया।
- इसने दक्षिण भारत अभियान केवल धन लूटने के लिए किया। यह जिम्मेदारी उसने मलिक काफूर को दी।
- सर्वप्रथम उलेमा वर्ग के प्रभाव से स्वतंत्र होकर शासन करने का श्रेय अलाउद्दीन को प्राप्त था।
- इसके दरबार में प्रमुख विद्वान अमीर खुसरो और हसन देलहवी था।
- यह अपनी राजधानी सिरी (दिल्ली) के पास स्थापित की थी।
- यह नगद वेतन, स्थायी सेना, घोड़ा दागना, सैनिक की हुलिया, बाजार नियंत्रण या मूल्य नियंत्रण प्रारंभ किया।
- उसने मंगोलों से निपटने के लिए रक्त एवं तलवार की नीति अपनाया।
- इसी के शासन काल में सर्वाधिक मंगोल आक्रमण हुआ।
- इसके समय दिल्ली में हाजियों द्वारा विद्रोह किया गया था।
- अमीर खुसरो के प्रसिद्ध पुस्तक खजायनुल-फुतूह में इसे द्वितीय सिकंदर कहा गया।
- यह बिना खलीफा के स्वीकृति से गद्दी पर बैठने वाला प्रथम शासक था।
- इसके मुख्य अधिकारी मुहतसिब कहलाता था।
- सिरी का किला, हजार खंभों वाला महल, अलाई दरवाजा, जमयत खाना मस्जिद का निर्माण करवाया था।
- दिल्ली (मंगोलपुरी) में बसने वाले मंगोल को नवीन मुसलमान कहा गया था।
- इसके समय सेना का गठन दशमलव प्रणाली के आधार पर था।
- भारत में प्रथम अवशिष्ट वास्तविक गुंबद इसी के समय प्राप्त हुआ।
- घोड़े के नाल जैसा मेहराब का सर्वप्रथम प्रयोग इसी के द्वारा किया गया था।
- 1316 ई. में अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु हो गई। उसे दिल्ली की जामा मस्जिद के बाहर मकबरे में दफनाया गया।

कुतुबुद्दीन मुबारक शाह खिलजी (1316 ई.-1320 ई.)

- इसने खलीफा के पद को मान्यता नहीं दी।
- बरनी के अनुसार यह दरबार में कभी-कभी महिलाओं के वस्त्र पहन कर आ जाता था एवं कभी-कभी निर्वस्त्र आ जाता था।
- खिलजी वंश का सेनापति या मुख्यमंत्री खुसरो खां ने इसकी हत्या 1320 ई. में कर दी और खुद शासक बन गया।
- इस प्रकार खिलजी वंश का अंत हो गया।
- खिलजी वंश का कार्यकाल सबसे छोटा था।
- खिलजी वंश के शासक निम्न कबीले से संबंध रखते थे।

नासिरूद्दीन खुसराव शाह (खुसरो खां)

- यह खिलजी वंश का अंतिम शासक था।
- इसने पैगम्बर के सेनापति की उपाधि धारण की थी।
- इसे इस्लाम का शत्रु भी कहा जाता था।

तुगलक वंश (1320 ई.-1414 ई.)

- सल्तनत के इतिहास में तुगलक वंश के शासकों ने ही सबसे अधिक 1320 ई. से 1414 ई. तक अर्थात् 94 वर्षों तक शासन किया।
- तुगलक वंश सल्तनत संक्रमण का काल था।
- इस काल में जहाँ एक ओर साम्राज्य का विस्तार हुआ वहीं दूसरी ओर विघटन भी प्रारंभ हुआ।
- धार्मिक सहिष्णुता की नीति का सर्वप्रथम कार्यान्वयन इसी समय हुआ तथा धार्मिक कट्टरता का भी उदय हुआ।

गयासुद्दीन तुगलक (1320 ई.-1325 ई.)

- गाजी मल्लिक ने तुगलक वंश की स्थापना की और गयासुद्दीन तुलगक के नाम से अपना राज्याभिषेक करवाया।
- यह किसानों के लिए नहर निर्माण का कार्य प्रारंभ किया। अत: इसे नहरों का जनक या पिता माना जाता है। हालांकि सर्वाधिक नहरों का जाल बिछाने का कार्य फिरोजशाह तुगलक ने किया था।
- गयासुद्दीन तुगलक ने अपना पहला अभियान जौना खान के नेतृत्व में तेलंगाना के लिए किया।
- जौना खान ने तेलंगाना जीतकर उसका नाम सुल्तानपुर रख दिया।
- इस विजय के बाद जौना खान को **मुहम्मद बिन तुगलक** कहा गया।
- गयासुद्दीन तुगलक ने खुद के नेतृत्व में बंगाल अभियान किया, किन्तु बंगाल से इसे धन की प्राप्ति नहीं हुई।
- इसने निजामुद्दीन औलिया को संदेश भिजवाया कि मेरे दिल्ली पहुंचने तक दान में दी गई भूमि का हिसाब तैयार रखे।
- इसके उत्तर में निजामुद्दीन औलिया ने कहा कि 'हुनूज दिल्ली दूर अस्त' अर्थात् हुजूर दिल्ली अभी दूर है और वास्तव में हुआ भी वही गयासुद्दीन के दिल्ली आने से पूर्व ही उसका देहांत हो गया।
- **मुहम्मद बिन तुगलक** ने उत्तरप्रदेश के अफगानपुर में गयासुद्दीन तुगलक के विश्राम के लिए लकड़ी का महल बनवाया किंतु इस महल के गिरने से गयासुद्दीन तुगलक की 1325 ई. में मृत्यु हो गई।
- यह गाजी का उपाधि धारण करने वाला प्रथम सुल्तान था।
- गयासुद्दीन तुगलक पर 29 बार मंगोल का आक्रमण हुआ था।
- सुलतान गयासुद्दीन का अंतिम सैन्य अभियान बंगाल का था। इस अभियान के वापसी के दौरान कर्नाट वंश के अंतिम शासक हरि सिंह देव को हराया था।
- दाग और हुलिया प्रथा का प्रणेता अलाउद्दीन खिलजी था तथा उसे प्रभावशाली ढंग से गयासुद्दीन तुगलक ने लागू किया था।
- डाक प्रणाली को पूर्णत: गयासुद्दीन तुगलक ने व्यवस्थित किया था।
- इस समय डाक विभाग के अधिकारी को वरीद-ए-मुबालिक कहा जाता था।
- इसके काल में डाक विभाग सर्वोच्च थी।
- कृषि आपदा या अकाल की स्थिति में राजस्व की छूट देने की नीति गयासुद्दीन तुगलक द्वारा अपनाई गई।
- इसने राजस्व वसुली की इजारेदारी व्यवस्था एवं ठेकेदारी व्यवस्था पर पूर्णत: रोक लगा दी।
- नश्क या गल्लाबटाई प्रथा का संबंध 'भूराजस्व' से था जो गयासुद्दीन तुगलक द्वारा प्रारंभ किया गया था।
- गयासुद्दीन तुगलक ने अलाउद्दीन के समय लिए गए अमीरों की भूमि को पुन: लौटा दिया।
- गयासुद्दीन तुगलक ने दिल्ली के समीप स्थित पहाड़ियों पर रोमन शैली में तुगलकाबाद नामक नगर स्थापित किया।

मुहम्मद बिन तुगलक

- इसका वास्तविक (मूल) नाम जौना खां या उलुग खां था।
- यह दिल्ली के गद्दी पर 1325 ई. में बैठा।
- मध्यकालीन सभी सुल्तानों में मुहम्मद बिन तुगलक सर्वाधिक शिक्षित, विद्वान एवं योग्य व्यक्ति था।
- यह 23 भाषाओं का अच्छा जानकार था, साथ ही ज्योतिष, खगोल तथा गणित का भी अच्छा विद्वान था।
- मुहम्मद बिन तुलगक को अपनी सनक भरी योजनाओं, क्रूर कृत्यों एवं दूसरे के सुख-दुख के प्रति उपेक्षा भाव रखने के कारण स्वप्नशील, पागल एवं रक्तपिपासु कहा गया।
- यह इतिहास में सबसे पढ़ा-लिखा शासक था।
- इसके समय सल्तनत काल की विकास बहुत तेजी से हुआ, साथ ही बिखराव भी तेजी से हुआ।
- इसके समय साम्राज्य को 29 प्रातों में बांटा गया था।

➢ **मुहम्मद बिन तुगलक ने 5 सबसे बड़ी गलतियाँ–**

1. इसने दोआब पर तब करबढ़ा दिया जब वहाँ अकाल पड़ा था। दोआब सल्तनत काल का सबसे उपजाऊ प्रदेश था। किसानों के विद्रोह के कारण इसने किसानों की मदद के लिए एक नये विभाग दीवान-ए-अमीरकोही की स्थापना की जिसका प्रधान अमीर-ए-कोही था।
- अकाल से राहत के लिए सुल्तान ने एक अकाल संहिता तैयार करवाई।
- किसानों के लिए अग्रिम कृषि ऋण (तकावी) की व्यवस्था करवाई।

2. इसने ताँबे की सांकेतिक मुद्रा 1329-30 ई. में चलवाया, किन्तु इस मुद्रा का बड़े पैमाने पर दुरूपयोग होने लगा।
- बरनी कहते हैं कि प्रत्येक हिन्दू का घर टकसाल बन गया था।

3. इसने मंगोल आक्रमण के डर से तथा दक्षिण में इस्लाम के प्रसार के लिए राजधानी दिल्ली से देवगिरि (दौलताबाद) को 1327 ई. में स्थानांतरित किया जो असफल रहा।
- बरनी के अनुसार देवगीरि साम्राज्य के केन्द्र में था जहाँ चारों ओर से दूरी समान थी इसलिए इसे राजधानी के लिए चुना गया था।

4. इसने खुरासान (इरान) पर आक्रमण के लिए 3 लाख सैनिकों की फौज बनायी और उन्हें अग्रिम वेतन भी दिया, किन्तु अंतिम समय में वह खुरासान के शासक से संधि कर लिया।
- इतिहासकारों के अनुसार खुरासान मध्य एशिया का ट्रांस ऑक्सीयाना का क्षेत्र था।
- यह अभियान तरमाशरीन और मुहम्मद तुगलक की मैत्री का परिणाम था।

5. इसने सैनिकों के विद्रोह से बचने के लिए इन्होंने हिमालय की दुर्गम्य चोटी कराचिल अभियान के लिए सैनिक भेजा जहाँ अधिकांश सैनिक आपसी विवाद में लड़कर मर गए।
- 1333 ई. में मोरक्को (अफ्रीका) का यात्री 'इब्नबतुता' 7000 किमी. की यात्रा के बाद दिल्ली पहुंचा।
- 1336 ई. में हरिहर एवं बुक्का ने दिल्ली सल्तनत से टूट कर विजय नगर की स्थापना कर ली।
- 1347 ई. में हसन गंगु ने दिल्ली सल्तनत से टूट कर बहमनी साम्राज्य की स्थापना कर ली।
- 1351 ई. सिंध (थट्टा) विद्रोह को दवाने के लिए सुल्तान स्वयं गये थे जिस दौरान उसकी मृत्यु हो गयी थी।
- उसके मृत्यु पर बदायूँ कहता है कि ''सुल्तान को उसकी प्रजा से और प्रजा को सुल्तान से मुक्ति मिल गयी।''
- रेहला नामक पुस्तक के लेखक इब्नबतुता था।
- मोहम्मद-बिन-तुगल इसकी विद्वता से खुश हुआ और उसे दिल्ली का काजी (जज) नियुक्त किया।
- इब्नबतुता के कहने पर ही **मुहम्मद बिन तुगलक** ने डाक-विभाग प्रारंभ किया।
- इब्नबतुता के नेतृत्व में मुहम्मदबिन तुगलक ने एक दूत मंडल को चीन में भेजा।
- मुहम्मद बिन तुगलक धार्मिक रूप से एक सहिष्णु शासक था, इसके प्रशासन में साईराज नामक एक हिन्दु मंत्री था।
- इन्होंने जैन विद्वान जिनप्रभा सुरी को 1000 गायें दान में दी थी।
- यह पहला सुल्तान था जिसने अजमेर स्थित ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह तथा बहराइच में सलार मसूद गाजी के मकबरे का दर्शन किया था।
- **मुहम्मद बिन तुगलक** होली का त्योहार अपने दरबार में मनाता था।
- **मुहम्मद बिन तुगलक** का कहना था कि मेरा राज्य रूग्ण (बीमार) हो चुका है।
- इसे रक्त पिपाशु या पागल बादशाह भी कहा जाता था।

Note :– मुहम्मद बिन तुगलक के समय बिहार के सुबेदार मज्दुल मुल्क था।

फिरोज-शाह-तुगलक

- यह जौना खाँ का चचेरा भाई था।
- फिरोज शाह तुगलक एक हिन्दु माता, राजपूत रणमल की पुत्री का पुत्र था। अत: इस पर हिन्दु होने का आरोप न लगे इसलिए इसने ब्राह्मणों पर भी जजिया कर लगा दिया।
- इसका राज्याभिषेक 1351 ई. में हुआ।
- इसने अशोक के टोपरा अभिलेख (हरियाणा) को तथा मेरठ अभिलेख (U.P.) को दिल्ली में स्थापित कर दिया।
- इसने अलग से एक निर्माण विभाग बनवाया और 300 से अधिक नगर (शहर) का निर्माण कराया। जैसे– जौनपुर, फिरोजाबाद, हिसार, फतेहाबाद, फिरोजपुर आदि।
- जौनपुर को सिराज-ए-हिन्द के रूप में जाना जाता है।
- इसने 1200 से अधिक फलों के बाग-बगीचे लगवाएं ताकि फलों की गुणवत्ता को सुधारा जा सके।
- इसने नहरों का जाल बिछा दिया।
- इसी के समय सर्वप्रथम सिंचाई कर (Tax) लेना प्रारंभ कर दिया गया था। जो किसान सरकारी नहर से खेती करता था उसे 'हक-ए-शर्ब' (शर्ब) नामक कर (Tax) देना होता था, जो कुल ऊपज का 10% या 1/10 भाग देना होता था।
- इसके समय सर्वाधिक सिंचाई तथा लोकनिर्माण कार्य पर अधिक धन खर्च किया गया था।
- इसी के समय भू-राजस्व वसूली के लिए भूमि को ठेके पर देने की प्रथा प्रारंभ की गई थी।
- फिरोजशाह तुगलक पहला सुल्तान था जिसने राज्य की आमदनी का ब्यौरा तैयार करने का प्रयत्न किया।
- इसी के द्वारा सर्वप्रथम लोक-निर्माण विभाग का स्थापना किया गया था।
- फिरोज-शाह-तुगलक के दरबार में सर्वाधिक दास 1 लाख 80 हजार थे।
- इसने दासों की देखभाल के लिए एक अलग विभाग 'दीवान-ए-बंदगान' बनाया।
- इसने बेरोजगारों को बेरोजगारी भत्ता भी दिया।
- गरीब, असहाय तथा अनाथ की सहायता के लिए इसने एक अलग विभाग दीवान-ए-खैरात बनवाया।
- इसने दर-ऊल-शफा नामक एक मुफ्त अस्पताल बनवाया।
- यह सरकारी खर्च पर हज की यात्रा करवाने वाले पहला भारतीय शासक था।
- विभिन्न धर्मों में आपसी समन्वय के लिए इसने एक अनुवाद विभाग बनवाया।
- फिरोज-शाह-तुगलक को सल्तनत काल का अकबर कहते हैं।
- इसके द्वारा अद्धा एवं विख नामक दो सिक्का चलाया था।
- फिरोजशाह तुगलक ने दिल्ली में कोटला दुर्ग का निर्माण करवाया।
- इसी के समय प्रथम बार हिन्दु धर्म ग्रंथों का फारसी में अनुवाद करना प्रारंभ किया गया था।
- इसी के द्वारा फुतूहात-ए-फिरोजशाही पुस्तक लिखा गया था।
- फिरोजशाह तुगलक के दरबार में बरनी नामक विद्वान रहता था। जिसने फतवा-ए-जहांदारी तथा तारीख़-ए-फिरोजशाही नामक पुस्तक की रचना किया।
- इनकी मृत्यु 1388 ई. में हो गई।
- तुगलक काल में बिहार की राजधानी बिहार शरीफ थी।

➢ सैन्य अभियान

- फिरोजशाह ने 1359 ई. में उड़ीसा के जाजनगर पर चढ़ाई की और जगन्नाथ मंदिर को नष्ट कर काफी धन लूटा।
- 1365 ई. में उन्होंने काँगड़ा (हिमाचलप्रदेश) में स्थित नागरकोट के दुर्ग पर चढ़ाई की और वहाँ के ज्वालामुखी मंदिर को नुकसान पहुचाया।
- इसमें सैन्य पदों को वंशानुगत बना दिया।

नसिरूद्दीन महमूद

- नसिरूद्दीन महमूद के समय तुगलक वंश का बिखराव बहुत तेजी से होने लगा।
- इसके बारे में कहा जाता है कि इसका साम्राज्य दिल्ली से पालम तक था।
- इनके पंजाब का सूबेदार खिज्र खां ने खुद को स्वतंत्र घोषित कर लिया।
- तैमूर मध्य एशिया का एक खूंखार आक्रमणकारी था। 1369 ई. में अपने पिता के मृत्यु के बाद यह समरकंद का शासक बना था।
- 1398 ई. में तैमूर लंग ने भारत पर आक्रमण किया।
- तैमूर लंग के भारत आक्रमण का मुख्य उद्देश्य धन प्राप्ति था।
- तैमूर लंग के डर से यह दिल्ली छोड़ के भाग गया।
- तैमूर लंग ने खिज्र खां को दिल्ली का सूबेदार नियुक्त किया।
- तैमूर के आक्रमण से तुगलक वंश का अंत हो गया। इस प्रकार इस वंश का अंतिम शासक नसीरूद्दीन महमूद था।
- 1414 ई. में खिज्र खां ने इसकी हत्या कर दी।
- यह दिल्ली सल्तनत पर सर्वाधिक समय तक शासन करने वाला वंश था।

सैय्यद वंश (1414 ई.-1451 ई.)

- सैय्यद वंश के संस्थापक खिज्र खाँ थे।
- सैय्यद वंश स्वयं को इस्लाम धर्म के संस्थापक पैगम्बर मोहम्मद साहब का वंशज मानते थे।
- यह सल्तनत काल में शासन करने वाला एकमात्र शिया वंश था।
- 1398 ई. में तैमूर के भारत आक्रमण के समय खिज्र खाँ ने उसकी सहायता की। जिस कारण तैमूर ने भारत से लौटते समय उसे मुल्तान, लाहौर एवं दिपालपुर का सुबेदार नियुक्त किया।
- 1414 ई. में खिज्र खाँ ने दौलत खाँ को पराजित कर दिल्ली की गद्दी पर बैठा।
- खिज्र खाँ ने कभी भी सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की बल्कि इसने स्वयं को रैय्यत-ए-आला कहा।
- खिज्र खाँ ने अपने आप को तैमूर लंग का पुत्र शाहरूख़ का प्रतिनिधि बताया था।
- खिज्र खाँ की मृत्यु 1421 ई. में हो गई।
- इस वंश का शासक मुबारक शाह ने सुल्तान की उपाधि धारण की।
- मुबारक शाह ने अपने नाम के स्वयं खुतबा पढ़वाया और अपने नाम का सिक्के चलवाया। साथ ही खुतबे से तैमूर वंशजों और सिक्कों से तुगलक वंश के शासकों का नाम हटवा दिया।
- इसने सिक्कों पर अपना नाम मुइज-उद-दीन मुबारक खुदवाया।
- इसने 1433 ई. में यमुना नदी के किनारे मुबारकाबाद नामक शहर की स्थापना किया।
- तारीख-ए-मुबारकशाही पुस्तक की रचना याहियाबीन अहमद द्वारा किया गया था। जो मुबारकशाह के शासनकाल में किया गया था। जिससे इस वंश की जानकारी मिलती है।
- भटिंडा तथा दोआब का विद्रोह मुबारकशाह के समय में हुआ था।
- मुबारक शाह के वजीर सरवर-उलमुल्क ने षडयंत्र द्वारा 1434 में मुबारक शाह की हत्या कर दी।
- मुबारक शाह के बाद उसका दत्तक पुत्र मुहम्मद शाह शासक बना। यह एक अयोग्य शासक था इसलिए इसके समय शासन की बागडोर वजीर सरवर-ए-मुल्क के हाथों में था।
- मुहम्मद शाह ने उसे खान-ए-जहाँ की उपाधि दिया था।
- इस वंश का अंतिम शासक अलाउद्दीन आलम शाह था।
- अलाउद्दीन आलम शाह इस वंश में सर्वाधिक समय तक शासन करने वाला शासक था।
- 1451 ई. में बहलोल लोदी ने इसकी हत्या कर दी और लोदी वंश की स्थापना कर दी।

लोदी वंश (1451 ई.-1526 ई.)

- यह भारत का पहला शुद्ध अफगान वंश था।
- इस वंश के संस्थापक बहलोल लोदी अफगानिस्तान कबिले कि शाहुखेल शाखा से संबंधित था।
- दिल्ली सल्तनत के सभी सुल्तानों में से बहलोल लोदी सर्वाधिक समय (38 वर्ष) तक शासन किया।

बहलोल लोदी (1451 ई.-1489 ई.)

- तारीख-ए-दाउदी के लेखक अब्दुल्ला के अनुसार बहलोल लोदी अन्य सुल्तानों की तरह सिहासन पर नहीं बैठता था। यह अपने दरवारियों के सम्मान में खड़ा रहता था और उनके बैठने के बाद बैठता था।
- इसने एक सिक्का चलाया जिसे बहलोली सिक्का कहते हैं।
- बहलोली सिक्का अकबर के काल तक प्रचलन में था।
- बहलोल लोदी अपने सरदारों को मकसद-ए-अली कहकर पुकारता था।
- इसने जौनपुर पर आक्रमण करके उसे जीत लिया।
- बहलोल लोदी के सबसे बड़ी सफलता जौनपुर के विरुद्ध थे।
- 1479 ई. में इसने जौनपुर की शर्की शासक हुसैन शाह को पराजित कर जैनपुर को सलतनत काल में शामिल कर लिया।
- बहलोल लोदी ने ग्वालियर का शासक रायकर्ण को 1487 ई. में पराजित किया। यह उसका अंतिम अभियान था।
- बहलोल लोदी का प्रशासन समानता के सिद्धांत पर आधारित था।

सिकंदर लोदी (1489 ई.-1517 ई.)

- अगला शासक सिकंदर लोदी बना। यह इस वंश का सबसे योग्य शासक था।
- इसने 1504 ई. में आगरा शहर की स्थापना की और इसे 1506 ई. में अपनी राजधानी बनायी।
- आगरा में ही सिकंदर लोदी ने एक किले का निर्माण करवाया जो बादलगढ़ के किले नाम से मशहूर था।
- इसने गुलरूखी नामक पत्रिका लिखी।
- इनके आज्ञा से आयुर्वेदिक ग्रंथों का **फरहंग-ए-सिकंदरी** नाम से फारसी अनुवाद करवाया गया था तथा इसके ही शासन काल में गायन संबंधित एक ग्रंथ **लज्जत-ए-सिकंदर शाही** की रचना हुई थी जो भारतीय संगीत पर पहला फारसी ग्रंथ था।
- इसने जमीन की पैमाईश के लिए गज-ए-सिकन्दरी नामक एक मापक बनाया जो 30 इंच के बराबर होता था।
- इसने खाद्यान्न (खाद्य पदार्थ) पर से जकात कर समाप्त कर दिया।
- इसने ताजिया निकालने तथा महिलाओं के मजार पर जाने पर प्रतिबंध लगा दिया।
- सिकंदर लोदी के गवर्नर मियां भूआँ ने दिल्ली में मोठ मस्जिद का निर्माण करवाया था जो लोदी स्थापत्य का सर्वश्रेष्ठ नमूना है।

इब्राहिम लोदी (1517 ई.-1526 ई.)

- इस वंश का अंतिम शासक इब्राहिम लोदी था।
- इसने अफगान परंपरा के अनुसार सम्राज्य का विभाजन किया और अपने छोटे भाई जलाल खाँ को जौनपुर का साम्राज्य दिया।
- इब्राहिम लोदी की सबसे बड़ी सफलता ग्वालियर विजय थी जिसे बहलोल लोदी एवं सिकंदर लोदी दोनों ने जितने का प्रयास किया था।
- ग्वालियर विजय इब्राहिम लोदी 1517 ई. में वहाँ के शासन विक्रमजीत को पराजित करके किया था।
- इसे 1517 ई. में मालवा की प्राप्ति हेतु खतोली के युद्ध में राणा सांगा ने इन्हें पराजित कर दिया।
- इब्राहिम लोदी के संबंधी आलम खान एवं दौलत खान (पंजाब) ने इब्राहिम लोदी को मारने के लिए बाबर को आमंत्रित किया।
- पानीपत के प्रथम युद्ध 1526 ई. में बाबर ने इब्राहिम लोदी की हत्या कर दी और लोदी वंश के स्थान पर मुगल वंश की स्थापना कर दी।
- इब्राहिम लोदी दिल्ली सल्तनत का एकमात्र शासक था जिसे युद्ध के मैदान में मार दिया गया।

दिल्ली सल्तनत की सामाजिक-आर्थिक स्थिति

- दिल्ली सल्तनत पर इस्लामिक कानून लागू थे। किन्तु अधिकांश जनसंख्या मुसलमान नहीं थी। इसी कारण इतिहासकार बरनी ने सल्तनत काल को वास्तविक इस्लाम नहीं कहा है सल्तनत काल के अधिकतर अधिकारी अमीर तथा सुल्तान तुर्क कबीले के थे।
- इस समय समाज में दास प्रथा मौजूद थी जिसमें पुरुष एवं महिला दोनों को दास के रूप में रखे जाते थे।
- सल्तनत कालीन राजस्व व्यवस्था की जानकारी की मुख्य स्रोत अबु-याकुब की पुस्तक किताब-उल-खराज में मिलती है।

वित्तीय व्यवस्था

- इस समय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि एवं व्यापार था।
- भारत में तुर्क आगमन के साथ ही सिंचाई के लिए रहट प्रणाली के शुरूआत हो गई थी।

➢ **इस समय 5 सबसे प्रमुख कर थे–**

(i) उश्र
(ii) मुत्तई
(iii) खराज
(iv) चरी
(v) घरी।

Note :– खुम्स को मुख्य राजस्व नहीं मानते थे, क्योंकि यह लूट का धन था।

- इस समय धार्मिक कर को **सदका** कहा जाता था।
- जजिया, जकात को भी मुख्य राजस्व नहीं मानते थे, क्योंकि यह धार्मिक कर था।

➢ **मसाहत**

- इसे अल्लाउद्दीन खिलजी ने शुरू किया था जिसमें भूमि के माप के आधार पर कर का निर्धारण होता था।
- कर वसूलने वाला सबसे छोटा ग्रामिक अधिकारी चौधरी होता था, जबकि सबसे बड़ा अधिकारी इक्तादार होता था।
- जब इक्तादार निश्चित कर से भी अधिक कर वसूल कर लेता था, तो इस अतिरिक्त आय को फवाजिल कहा जाता था।
- कर वसूलने में हो रहे भ्रष्टाचार के निगरानी के लिए अलाउद्दीन खिलजी ने दीवान-ए-मुस्तखराज नामक विभाग बनवाया।
- सल्तनत काल में टंका, शसगनी, ताँबा तथा जीतल चाँदी के प्रमुख सिक्के थे।
- गुलाम वंश के शासक अलाउद्दीन महमूद शाह ने अपने सिक्के पर खलीफा का चित्र बनवाया।
- इस काल में व्यापारियों के समूह को तुज्जार-ए-खास कहा जाता था।
- बरनी के अनुसार राजधानी दिल्ली में शराब, अवध से कपड़ा एवं मालवा से पान आता था।
- मार्कोपोलो ने लाहौर से इस्पात के निर्यात किये जाने का उल्लेख किया है।
- इस काल में लाहौर एवं बयाना नील के लिये बहुत प्रसिद्ध थे।
- इस समय फसलों की भूसी से अन्न के कणों को अलग करने के लिये पवन चक्की की उपयोग होने लगा।

- भारत में चरखे का प्रथम लिखित उल्लेख इसामी की फुतुह-उस-सलातीन में मिलता है।
- रेशम के कीड़े पालने की प्रथा दिल्ली सल्तनत में ही प्रचलित हुई। बर्तनों के ऊपर कलई, टिन की परत लगाना आदि तकनीकी विकास इसी काल की देन है।
- इस समय सूती वस्त्र को किरपास एवं मलमल के कपड़े को सबनम व गंगाजल कहा जाता था।
- जहाजरानी के क्षेत्र में दिशासूचक यंत्र का प्रयोग फिरोजशाह तुगलक के काल में हुआ तथा शीशा उत्पादन तकनीक एवं शराब बनाने की आसवान तकनीक का प्रयोग इसी काल की देन है।
- सल्तनत काल में देवल (करौंची) अंतर्राष्ट्रीय बंदरगाह के रूप में प्रसिद्ध था।

सल्तनत कालीन प्रशासन व्यवस्था

- सल्तनतकालीन केन्द्रीय प्रशासन का प्रधान सुल्तान होता था। प्रशासन की सम्पूर्ण शक्ति उसी के हाथों में केन्द्रित थी।
- इसे सलाह देने के लिये एक विशेष संस्था होती थी, जिसे मजलिस-ए-खलवत कहा जाता था।
- बरनी के अनुसार सल्तनतकालीन प्रशासन के चार प्रमुख अंग थे–

➢ दीवान-ए-विजारत (वित्त विभाग)

- केन्द्रीय प्रशासन का सर्वोच्च अधिकारी वजीर होता था।
- इसका मुख्य कार्य लगान बंदोबस्त के लिये नियम बनाना, राज्य के आय-व्यय पर नियंत्रण रखना।
- तुगलक काल को मुस्लिम भारतीय विरासत का स्वर्णकाल माना जाता है।
- तुगलक वंश के अंतिम शासक नासिरूद्दीन महमूद ने वकील-ए-सुल्तान नामक पद का सृजन किया।

➢ दीवान-ए-अर्ज (सैन्य/रक्षा विभाग)

- इस विभाग की स्थापना बलबन ने की थी। इसका अध्यक्ष आरिज-ए-मुमालिक कहलाता था।
- इसका प्रमुख कार्य सैनिकों की भर्त्ती करना, सैनिकों की खाद्य सामग्री एवं यातायात की व्यवस्था करना था।

➢ दीवान-ए-इंशा

- यह शाही सचिवालय होता था। इसका प्रधान दीवान-ए-मुमालिक कहलाता था।
- यह प्रत्राचार विभाग था। सुल्तान और अधीनस्थ राजाओं एवं अधिकारियों को यहीं से पत्र भेजा जाता था।

➢ दीवान-ए-रिसालत

- ये धार्मिक मामलों के जाँच करते थे परंतु इसे विदेश विभाग माना गया है।

● कुछ अन्य प्रशासन के विभाग निम्न थे–

➢ दस्तार वन्दान

- ये उलेमाओं का समूह था, जो सर पर साफा (पगड़ी) बाँधते थे। उच्च धार्मिक गुरुओं को उलेमा कहते हैं।

➢ काजी-उल-कुजात (न्याय विभाग)

- यह धर्म विभाग का प्रधान होता था। इसे सद्र-उस-सुदूर भी कहते थे। इसका कार्य इस्लामी नियमों तथा उपनियमों का लागू करना था।

➢ दीवान-ए-बरीद (गुप्तचर विभाग)

- यह गुप्तचर विभाग था, इसके अध्यक्ष बरीद-ए-मुमालिक कहलाते थे।

➢ अमीर-ए-हाजिब

- यह शाही दरबार से संबंधित अधिकारी था। इसे बारबक भी कहा जाता था। दरबारी शिष्टाचार बनाए रखना इसका मुख्य दायित्व था।
- सल्तनत कालीन प्रशासन में सैन्य प्रशासन तुर्की और मंगोल पद्धति पर आधारित थी।
- इल्तुतमिश के समय सल्तनत की सेना को हश्म-ए-कल्ब (केन्द्रीय सेना) या कल्ब-ए-सुल्तानी कहा जाता था एवं इसी ने शाही अंगरक्षकों का दल संगठित किया जिसे जानदार कहते थे।
- अलाउद्दीन खिलजी ने मंगोलों में प्रचलित सैन्य विभाजन की दशमलव प्रणाली को अपनाया और सेना का विभाजन अमीर-ए-दहा, अमीर-ए-सद, अमीर-ए-हजारा, अमीर-ए-तुमन में किया था।
- भारत में तुर्कों के आने के बाद ही सैनिकों के लिये लोहे की रकाब, चमड़े का जीन तथा घोड़ों में नालबंदी की प्रथा प्रारंभ हुई।

सल्तनत कालीन स्थापत्य या वास्तुकला

- भवन निर्माण की कला को स्थापत्य कला कहते हैं।
- घोड़े के नाल के आकार की मेहराब की आकृति (निर्माण) का प्रयोग सर्वप्रथम आलउद्दीन खिलजी ने अलाई दरबार में की गई है।
- बड़े आकार के मेहराब (दीवाल) का निर्माण खिलजी वंश में हुआ।
- अष्टभुजी मकबरा का निर्माण तुगलक काल में हुआ।
- बलबन पहला ऐसा सुल्तान था, जिसका मकबरा शुद्ध इस्लामिक पद्धति में बना।
- मालवा विजय के उपलक्ष्य में मेवाड़ के राणा कुंभा ने स्तंभ का निर्माण करवाया था।
- कीर्ति स्तंभ का निर्माण जैता ने किया था। जबकि कीर्ति स्तंभ के प्रशस्तिकार अत्रि और महेश थे।

सल्तनत कालीन साहित्य

- सल्तनत काल में फारसी भाषा का प्रचलन था।
- सल्तनत काल के सबसे बड़े कवि अमीर खुसरो थे, जिन्हें मंगोलों ने बंदी बना लिया था, किन्तु वो वहाँ से भाग गए।
- अमीर खुसरो का जन्म उत्तर प्रदेश के एटा (पटियाली) में हुआ था।
- ये बलबन से लेकर **मुहम्मद बिन तुगलक** तक कुल 7 राजाओं के दरबार में रहे थे।
- इन्हें अपनी दरबार में संरक्षण अलाउद्दीन-खिलजी ने दिया।
- ये हिन्दी, फारसी तथा खड़ी बोली के जानकार थे।
- इन्होंने सर्वाधिक रचनाएँ खड़ी बोली में की है।
- इनकी सबसे प्रमुख रचना तारीख-ए-दिल्ली है। इन्हें तोता-ए-हिन्द कहते हैं।
- ये निजामुद्दीन औलिया के शिष्य थे। इन्होंने तबला तथा सितार का आविष्कार किया।
- सितार को हिन्दू-मुस्लिम का मिश्रण कहते हैं।
- सल्तन काल का एकमात्र सुलतान फिरोज-शाह तुगलक था, जिसमें अपनी आत्मकथा लिखी। जिसे फतुहात-ए-फिरोजशाही कहते हैं।

सल्तनत कालीन प्रमुख विभाग

नाम	संबंधित विभाग	बनाने वाला सुल्तान
दीवान-ए-मुस्तखराज	वित्त विभाग	–अलाउद्दीन खिलजी
दीवान-ए-कोही	कृषि विभाग	–मुहम्मद बिन तुगलक
दीवान-ए-अर्ज	सैन्य विभाग	–बलबन
दीवान-एवं-बंदगान	दास विभाग	–फिरोजशाह तुगलक
दीवान-ए- खैरात	दान विभाग	–फिरोजशाह तुगलक
दीवान-ए-इस्तिहाक	पेंशन विभाग	–फिरोजशाह तुगलक

शासक	प्रमुख कार्य
कुतुबुद्दीन ऐबक	कुव्त उल इस्लाम मस्जिद (दिल्ली)- भारत में निर्मित प्रथम मस्जिद
	अढाई दिन का झोपड़ा (अजमेर)- इस मस्जिद की दीवार पर विग्रहराज चतुर्थ द्वारा रचित संस्कृत नाटक हरिकेली के अंश उत्कीर्ण है। (यहां पहले बौद्ध मठ व संस्कृत विद्यालय था।
इल्तुतमिश	कुतुब मीनार, दिल्ली
	सुल्तान गढ़ी या नसीरुद्दीन महमूद का मकबरा, दिल्ली, अतारकिन का दरवाजा
	इल्तुतमिश का मकबरा, दिल्ली- स्क्रैच शैली में निर्मित भारत का पहला मकबरा।
	हौज ए शमसी बदायूं
बलबन	बलबन का मकबरा दिल्ली- शुद्ध इस्लामी शैली में निर्मित भारत का पहला मकबरा
	लाल महल (दिल्ली)
अलाउद्दीन खिलजी	अलाई दरवाजा (दिल्ली)
	सीरी का नगर (दिल्ली)
	हजार खंभा महल (दिल्ली)
	हौज-ए-खास (दिल्ली)
	जमात खाना मस्जिद (दिल्ली)
मुहम्मद बिन तुगलक	आदिलावाद का किला
	निजामुद्दीन औलिया का मकबरा
	जहाँपनाह नगर
फिरोजरशाह तुगलक	काली मिस्जद, खिर्की मस्जिद, काबा मस्जिद, फिरोजशाह कोटला नगर, फिरोजशाह का मकबरा
मियाँ भुआ	मोठ मस्जिद
इब्राहिम लोदी	सिकंदर लोदी का मकबरा

❐❐❐

15. विजयनगर साम्राज्य (Vijaynagar Empire)

☞ तुगलक साम्राज्य के विघटन के पश्चात् केंद्रीय सत्ता लुप्त हो गई और इस विघटित साम्राज्य के अवशेषों पर दक्षिण भारत में विजय नगर और बहमनी राज्य जबकि उत्तर भारत में मालवा, मेवाड़, जौनपुर, कश्मीर, बंगाल आदि क्षेत्रीय शक्तियों का उदभव हुआ।

➢ **विजयनगर साम्राज्य**

☞ विजयनगर का शब्दिक अर्थ होता है– जीत का शहर।

☞ विजयनगर साम्राज्य की स्थापना **1336 ई॰ में हरिहर एवं बुक्का नामक** दो भाइयों ने किया। इन दोनों को मुहम्मद बिन तुगलक ने इस्लाम धर्म कबूल करवाया था और दक्षिण भारत भेज दिया। जहाँ इनकी मुलाकात श्रृंगेरी के प्रतिष्ठित **गुरु विद्यारण्य** से हुई। जिन्होंने इनकी शुद्धि करायी अर्थात वापस हिन्दू धर्म में लाया।

☞ इन्होंने दक्षिण भारत के क्षेत्र को जीतकर विजयनगर साम्राज्य की स्थापना किया और अपने पिता संगम के नाम पर संगम वंश की स्थापना किया और **हम्पी (कनार्टक)** को अपनी राजधानी बनाया।

Note :– विजयनगर साम्राज्य पर 4 वंशों ने शासन किया।

Trick :– संगम सतुआ

संगम वंश → सालुव वंश → तुलुव वंश → आरविडु वंश

संगम वंश (1336 ई.-1485 ई.)

☞ संगम वंश के प्रमुख शासक के क्रम–
हरिहर प्रथम → बुक्का प्रथम → हरिहर द्वितीय → देवराय प्रथम → देवराय द्वितीय → प्रौढ़ राय

➢ **हरिहर प्रथम (1336 ई.- 1356 ई.)**

☞ इस वंश का प्रथम शासक **हरिहर-I** था। जो 1336 ई. में शासक बना। इसने प्रारंभ में अनेगोण्डी को अपनी राजधानी बनाया परंतु बाद में राजधानी विजयनगर स्थानांतरित कर दी।

☞ इसके दरबार में **सायण** नामक विद्वान रहते थे जिन्होंने वेदों पर टीका (Command) लिखा।

➢ **बुक्का प्रथम (1356 ई.-1377 ई.)**

☞ हरिहर प्रथम के बाद इसका छोटा भाई बुक्का प्रथम शासक बना। इसने वेदमार्ग प्रतिष्ठापक की उपाधि धारण किया। इसके समय कृष्णा एवं तुंगभद्रा नदी के बीच के रायचूर दोआब पर अधिकार के लिए बहमनी साम्राज्य से युद्ध प्रारम्भ हो गया। यह युद्ध 200 वर्षों तक चला और अन्ततः सफलता विजयनगर साम्राज्य को ही मिला।

☞ बुक्का प्रथम ने हिन्दु धर्म की सुरक्षा का दावा किया और वेद मार्ग प्रतिष्ठापक की उपाधि धारण की।

☞ इसके शासन काल में बहमनी शासक **मुहम्मद-I** ने **बुक्का-I** को पराजित किया।

➢ **हरिहर द्वितीय (1377 ई.-1406 ई.)**

☞ 1377 ई. में बुक्का प्रथम की मृत्यु के उपरांत हहिर द्वितीय शासक बना। इसने अपने पूर्ववर्ती शासकों के विपरीत, महाराजाधिराज उपाधियाँ धारण की।

➢ **देव राय प्रथम (1406 ई.-1422 ई.)**

☞ इसने अपने सेना में तुर्क धनुर्धर को शामिल किया। इसने तुंगभद्रा नदी पर नहर बनाया ताकि सिंचाई हो सके। इसके समय बहमनी शासक **फिरोजशाह बहमन** ने आक्रमण किया। इसने **देवराय-I को पराजित** कर दिया। किन्तु दोनों के बीच वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित हो गया।

☞ इसके दरबार में हरविलासम् के लेखक तथा प्रसिद्ध तेलुगू कवि श्रीनाथ रहते थे।

☞ इसके बाद अगला शासक देवराय-II बना।

➢ **देव राय द्वितीय (1422 ई.-1446 ई.)**

☞ इसके समय में संगम वंश का **सर्वाधिक विकास हुआ**। यह संगम वंश का सबसे **प्रतापी शासक** था।

☞ इसने **श्रीलंका** अभियान किया। इस प्रकार श्रीलंका अभियान करने वाला देवराय-II तीसरा शासक बन गया। पहला राजाराज, दूसरा राजेन्द्र-I ।

☞ वह अपनी सिंहासन के बगल में कुरान रखता था।

☞ देवराय-II को हाथी मारने का शौक था अतः इसे **गजवेटका** कहा गया।

☞ इसनें स्वयं संस्कृत ग्रंथ महानाटक सुधानिधि की रचना की एवं बादरायण के ब्रह्मसूत्र पर टीका लिखी।

☞ इसी के दरबार में फारस के विदेश यात्री अब्दुर **रज्जाक** आया था। जिसका यात्रा विवरण मतला-ए-साहेन है। जो फारसी भाषा में लिखा गया। इस पुस्तक से विजयनगर का प्रशासनिक जानकारी मिलती है। इसी में लिखा है कि विजयनगर साम्राज्य में 300 बन्दरगाह थे।

➢ **मल्लिकार्जुन (1446 ई.-1465 ई.)**

☞ इसके समय संगम वंश का **पतन प्रारम्भ** हो गया। इसे **प्रौढ़ देवराय** कहा जाता है।

➢ **विरूपाक्ष द्वितीय (1465 ई.-1485 ई.)**

- संगम वंश का अंतिम शासक **विरूपाक्ष-II** था जिसकी हत्या **सालुव नरसिंह** ने कर दिया और संगम वंश के स्थान पर सालुव वंश की स्थापना कर दिया।
- इस घटना को विजयनगर साम्राज्य के इतिहास में **प्रथम बलापहार** की घटना कहा गया है।

सालुव वंश (1485 ई.-1505 ई.)

- इस वंश का संस्थापक सालुव नरसिंह था। इस वंश का अंतिम शासक **इम्माडि नरसिंह** था जिसकी हत्या **वीर नरसिंह** ने कर दिया और **सालुव वंश** के स्थान पर तुलुव वंश की स्थापना कर दिया।
- इस घटना को विजयनगर साम्राज्य के इतिहास में द्वितीय बलाहार की घटना कहते हैं।

तुलुव वंश (1505 ई.-1570 ई.)

- इसके संस्थापक **वीर नरसिंह** थे। जिसका पुर्तगाली गवर्नर अल्मोडा से अच्छा सम्बन्ध था। इसने 1505 ई. में अल्मोडा के साथ घोड़े के लिए व्यापारिक संधि किया था।
- वीर नरसिंह को इतिहास में द्वितीय बलापहार के नाम से जाना जाता है क्योंकि इसकी स्थापना भी शक्ति के बल पर की गई थी।
- 1509 ई. में वीर नरसिंह की मृत्यु हो गयी और अगला शासक कृष्णदेव राय बना [KDR]

➢ **कृष्णदेव राय (1509 ई.-1529 ई)**

- यह तुलुव वंश का सबसे प्रतापी शासक था। इसने रायचूर दोआब पर अधिकार कर लिया।
- इस उपलक्ष्य में उसने **आन्ध्र भोज, आन्ध्र पितामह** तथा **अभिनव भोज** की उपाधि धारण किया। इसने यमन राजा से स्थापनाचार्य की भी उपाधि धारण किया।
- यह एक विद्वान शासक था, जिसने **आमुक्त माल्याद** नामक पुस्तक की रचना किया। यह पुस्तक तेलुगू भाषा में था। इसकी तुलना कौटिल्य के अर्थशास्त्र से की जाती है।
- आमुक्त माल्याद पुस्तक से विजयनगर के इतिहास का पता चलता है।
- इसने संस्कृत भाषा में **जामवति कल्यानम्** नामक पुस्तक का रचना किया।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा (तुजूक-ए-बाबरी) में लिखा है कि दक्षिण भारत का सबसे शक्तिशाली शासक उस समय कृष्णदेव राय थे।
- कृष्णदेव राय ने विजयनगर के निकट **नागलपुर** शहर की स्थापना किया और वहां **बिट्ठल स्वामी मन्दिर** तथा **हजारा मन्दिर** का निर्माण किया।
- इसके समय इटली यात्री **डोमिंगो पायस** आया था तथा पुर्तगाली यात्री **बारबोसा** आया था।
- इसके दरबार में तेलगु भाषा के 8 प्रमुख विद्वान रहते थे जिन्हें संयुक्त रूप से **अष्ट्दिग्गज** कहते थे। इस अष्ट्दिग्गज में सबसे प्रमुख कवि अल्लासानी पेडन्ना थे जिन्हें तेलुगू भाषा का पितामह कहा जाता है। इन्होंने हरिकथा तथा मनुकारिता नामक पुस्तक की रचना किया। इनके शासनकाल को तेलुगू साहित्य का स्वर्णकाल कहा जाता है।
- अष्ट्दिग्गज में दूसरे स्थान पर तेनालीराम थे जिनकी रचना पाण्डुरंग महामात्य है। यह मंत्री के पद पर भी थे और इन्होंने अन्धविश्वास से जनता को दूर किया।

- इनके दरबार में **लक्ष्मीधर** नामक संगीतकार रहता था। जिन्होंने संगीत सूर्योदय नामक ग्रंथ लिखा।
- कृष्णदेव राय 1510 ई. में बीदर के शासक महमूद शाह को पराजित किया।
- इन्होंने 1512 ई. में रायचूर दोआब तथा गुलबर्गा के दुर्गों को भी जीत लिया। इन्होंने उड़ीसा के साथ-साथ प्रताप रूद्र देव से संधि कर उसकी पुत्री से विवाह किया।
- 1520 ई. में कृष्णदेवराय ने गोलकुंडा को हराकर वारंगल पर अधिकार कर लिया।
- मात्र 10 वर्षों में ही कृष्णदेव राय ने अपने सभी विरोधियों को पराजित कर दक्षिण भारत में स्वयं एवं विजयनगर की प्रभुत्व स्थापित किया।
- 1529 ई. में कृष्णदेव राय की मृत्यु हो गयी

➢ **अच्युतदेव राय (1529 ई.-1542 ई.)**

- इस वंश का अगला शासक **अच्युतदेव राय** बना।
- इसने प्रान्तों पर नियन्त्रण रखने के लिए **महामण्डलेश्वर नामक** नये अधिकारी के नियुक्ति की गई। इसके समय से ही इस वंश का बिखराव शुरु हो गया।
- इसके समय पुर्तगाली यात्री **नुनीज** भारत आया।

➢ **सदाशिव राव (1542 ई.-1570 ई.)**

- इस वंश का **अंतिम शासक सदाशिव राव** था। इसका सेनापति रामराय था। रामराय ने शासन की सारी शक्ति अपने हाथ में ले लिया।
- सदाशिव राव के अभिलेखों से सूचना मिलती है कि उसने अपने शासनकाल में 'नाइयों' को व्यवसाय कर से मुक्त कर दिया था।
- वह एक साम्राज्यवादी सेनापति था जिसने बहमनी साम्राज्य के पांच राज्य (बीजापुर, गोलकुण्डा, वरार, वीदर, अहमदनगर) में फूट डालने की कोशिश किया किन्तु इसके विपरीत परिणाम हुआ।
- इसी के शासन काल में बहमनी साम्राज्य के पांच राज्य में से वरार को छोड़कर शेष चारों ने मिलकर 1565 में विजयनगर पर हमला कर दिया। इस युद्ध को तालिकोटा का युद्ध कहा जाता है। इसे राक्षसी-तंगड़ी का युद्ध के नाम से भी जाना जाता है।

- इस युद्ध ने विजयनगर साम्राज्य का अन्त कर दिया। युद्ध के मैदान में रामराय मारा गया।
- सदाशिवराय ने अपना अगला सेनापति तिरुमल को बनाया। तीरुमल ने सदाशिवराय की हत्या कर दी और एक नया वंश आरविडू वंश की स्थापना की।

आरविडू वंश (1570 ई.-1652 ई.)

- इस वंश के संस्थापक तिरुमल थे। तिरुमल ने पेणुगोण्डा को विजयनगर के स्थान पर अपनी राजधानी बनाया परंतु 1586 ई. में वेंकट द्वितीय ने चंद्रगिरि को अपना मुख्यालय बनाया।
- इसे विजयनगर साम्राज्य का अंतिम महान शासक माना जाता है।
- यह वंश अधिक दिन तक शासन नहीं कर सका और इस वंश का अंतिम शासक श्रीरंग-III को पराजित करके शिवाजी ने उसके क्षेत्र को मराठा साम्राज्य में मिला लिया।
- विजयनगर साम्राज्य को तेलगु भाषा का स्वर्णकाल कहा जाता है।

विजयनगर की प्रशासनिक व्यवस्था

- प्राचीन भारत की भाँति इस काल में भी राज्य की सप्तांग विचारधारा पर बल दिया गया था।
- विजयनगर की प्रशासनिक व्यवस्था की जानकारी कृष्णदेव राय की रचना आमुक्त माल्याद तथा अब्दुर रज्जाक की रचना में है।
- राजा को सलाह देने के लिए एक मंत्रिपरिषद होती थी जिसके प्रमुख अधिकारी प्रधानी या महाप्रधानी कहलाता था। इसका अध्यक्ष सभानायक होता था।
- इस समय राजा अपने राज्याभिषेक के समय एक विशेष प्रकार का यज्ञ कराता था जिसे पट्टाभिषेक यज्ञ कहते हैं।
- इसके समय पूरे साम्राज्य को निम्न नामों से जाने जाते थे–

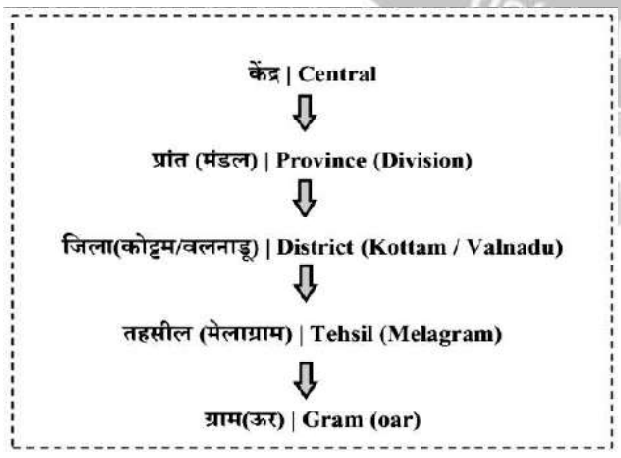

- कृष्णदेव राय के समय प्रान्तों की **संख्या 6** थी।
- अच्युतदेव राय के समय प्रान्त का प्रशासन प्रान्तपति से लेकर **महाभिण्डलेश्वर** नामक अधिकारी को दे दिया गया।
- कृष्णदेव राय ने **नायकंर व्यवस्था** लाया। इसके तहत अधिकारियों को नगद वेतन के स्थान पर भूमि दिया जाता था। यह गुप्तकालीन सामन्ती व्यवस्था तथा दिल्ली सल्तनत के इक्ता व्यवस्था के समान था।
- इस समय सैनिकों को दान में दी गयी भूमि को **अमरम् भूमि** कहा जाता था तथा इस भूमि को प्राप्त करने वाले को **अमरम् नायक** कहा जाता था। मन्दिर के दान में दी गयी भूमि को **देवभूमि** कहा जाता था।
- इस समय सैन्य विभाग को कदाचार कहा जाता था।

विजयनगर की समाजिक एवं आर्थिक स्थिति

- विजयनगर भारतीय इतिहास का अंतिम साम्राज्य था। जो वर्णाश्रम व्यवस्था पर आधारित था।
- विजयनगर समाज वर्ण एवं जाति आधारित समाज था। चारों वर्णों में ब्राह्मण श्रेष्ठ थे। इन्हें मृत्यु दंड से मुक्त रखा गया था।
- इस काल में उत्तर भारत से बहुत बड़ी संख्या में लोग दक्षिण में आकर बस गए थे जिन्हें **बडवा** कहा जाता था।
- इस काल में समाज में देवदासी प्रथा भी प्रचलित थी।
- इस समय महिलाओं की स्थिति काफी अच्छी थी।
- कृष्णदेव राय के दरबार में महिला अंगरक्षिकाओं की भी नियुक्ति की जाती थी।
- इस काल में मनुष्यों का क्रय-विक्रय भी होता था जिसे **वेस-वग** कहा जाता था।
- मनोरंजन के साधन के रूप में इस समय शतरंज के साथ बोमलाट नामक एक छाया नाटक का प्रचलन था।
- यक्षगान का भी विकास विजयनगर में ही हुआ।
- भू-राजस्व को सिरत कहते थे और इस कर को वसूलने वाले अधिकारी को आथवन कहते थे। कर का मुख्य आधार कृषि था।
- विजयनगर साम्राज्य में शिष्ट नामक भूमिकर राजकीय आय का प्रमुख स्रोत था जबकि केंद्रीय राजस्व विभाग अठावने के नाम से जाना जाता था।
- इस समय चार प्रकार के भूमि का प्रचलन था।

➢ **सिंचित भूमि**

- यह सबसे उपजाऊ भूमि थी। यहाँ बिना किसी सिंचाई साधन के ही अच्छी फसल होती थी। इस पर सर्वाधिक कर था।

➢ **बगानी/बागाती भूमि**

- इस भूमि पर बगानी फसल जैसे- मसाला की खेती होती थी। इस पर कर सिंचित भूमि से कम था।

➢ **उसर भूमि**

- यह वैसी भूमि थी जिस पर प्रतिवर्ष कृषि नहीं होती थी। यह अधिकतर समय सूखा ग्रस्त रहता था। इस पर कर कम था।

➢ **जंगली या वनभूमि**

- इस भूमि का अधिकतर भाग पर वन का विस्तार था। इस पर कृषि कार्य न के बराबर होता था। इस भूमि पर कोई कर नहीं था।
- इस समय खेत में लगे कृषक मजदूर को कुदि कहा जाता था।
- इस समय भू-राजस्व ही राजकीय आय का मुख्य साधन था। यहाँ उपज का 1/6 भाग भूमि कर के रूप में वसूला जाता था।

मुद्रा व्यवस्था

- विजयनगर की सर्वाधिक प्रसिद्ध सिक्का स्वर्ण का वराह था। जो 52 ग्रेन का होता था। इसे ही पैगोड़ा कहा जाता था।
- सोने के छोटे सिक्के को प्रपात तथा फणम् कहा जाता था जबकि चांदी के छोटे सिक्के को तार कहा जाता था।
- हरिहर प्रथम के सिक्के में हनुमान एवं गरूड़ की आकृति अंकित थी।
- सदाशिव राय के सिक्के पर लक्ष्मीनारायण का अंकन होता था।
- पुर्तगालियों ने विजयनगर के सिक्कों की तुलना हूण से की है।

विजयनगर की स्थापत्य कला

- इस समय मन्दिर निर्माण के क्षेत्र में द्रविड़ शैली का विकास अधिक हुआ। जिसका सर्वश्रेष्ठ नमूना **विठ्ठलस्वामी** मंदिर है।
- यहाँ के मंदिरों में गोपुरम् को राय गोपुरम् कहा जाता है, साथ ही मंदिरों में अम्मन मठ तथा कल्याण मंडप उल्लेखनीय है।
- अम्मन मठ देवी को समर्पित भवन की एक संरचना है जबकि कल्याण मंडप एक विशालकाय सभाभवन होता है।
- विजयनगर राज्य के शासक तिरूमलाई नायक के काल में सुंदरेश्वर मंदिर एवं मदुरै के मीनाक्षी मंदिर का निर्माण हुआ।

विजयनगर काल में आये विदेशी यात्री

यात्री	देश	शासक
निकोलो डे काण्टी	इटली	देवराय I
अब्दुर रज्जाक	फारस	देवराय II
बार्थोमा	इटली	वीर नरसिंह
बारबोसा	पुर्त्तगाली	कृष्णदेव राय
डोमिगोपाएस	इटली	कृष्णदेव राय
नुनिज	पुर्त्तगाली	अच्चुतदेव राय

Note :– चीनी यात्री माहुआन संगम वंश के शासक मल्किार्जुन के शासन काल में आया था।

बहमनी साम्राज्य (1347 ई.-1527 ई.)

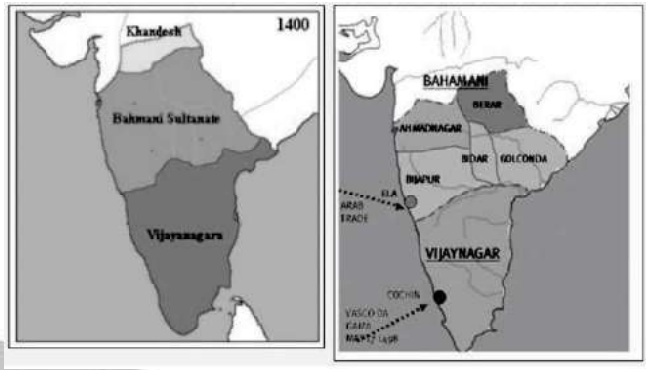

➢ **अलाउद्दी हसन बहमनशाह (1347 ई.-1358 ई.)**

- इस वंश की स्थापना 1347 ई. में मोहम्मद बिन तुगलक के समय हसन गंगु (जफर खाँ) ने किया। इसका मूल नाम अलाउद्दीन हसन बहमनशाह था।
- हसन गंगू ने अपनी राजधानी गुलबर्गा को बनाया तथा इसका नाम अहसानाबाद रखा।
- बहमनी राज्य की भाषा मराठी थी तथा इनकी मुद्रा हूण थी।

➢ **मुहम्मद शाह (१३५८ ई.-१३७५ ई.)**

- हसन गंगू के बाद मुहम्मद शाह / प्रथम शासक बना।
- इसी के शासन काल में बहमनी-विजयनगर की बीच संघर्ष की शुरूआत हुई।
- इसने रायचूर पर अधिकार के लिए बुक्का-I से युद्ध किया और युद्ध में विजय रहा।
- मुहम्मदशाह ने संपूर्ण बहमनी साम्राज्य को चार प्रांतों (तरफ) में विभाजित किया। ये चार प्रांत थे– गुलबर्गा, दौलताबाद, बरार, बीदर।

➢ **ताजुद्दीन फिरोजशाह (1397 ई.-1422 ई.)**

- यह बहमनी वंश का सर्वाधिक विद्वान सुल्तान था।
- इसने भी रायचूर पर अधिकार कर लिया। विजयनगर शासक देवराय-I से युद्ध किया और युद्ध में विजयी रहा।

➢ **शिहाबुद्दीन अहमदशाह प्रथम (1422 ई.-1436 ई.)**

- इस वंश का अगला शासक शिहाबुद्दीन था।
- उदार नीति के कारण लोग इसे संत अहमद या अहमद शाह बली कहते थे।
- शिहाबुद्दीन ने राजधानी गुलबर्गा से बीदर लाया तथा इसका नाम मुहम्मदाबाद रखा।

➢ **अलाउद्दीन अहमदशाह द्वितीय (1436 ई.-1458 ई.)**

- इसके शासन काल में भारत में अफ्रीकियों का आगम शुरू हो गया था। जिसके कारण अफ्रीकी एवं दक्कनी दो गुट बन गए और बहमनी साम्राज्य के पतन का कारण बन गया।
- इसके काल में ही इरानी निवासी महमूद गवा का उत्कर्ष हुआ जो मूलत: व्यापारी संघ के प्रधान थे।

➢ **हुमायूँशाह (1458 ई.-1461 ई.)**

☛ यह एक क्रूर शासक था। अत: इसे जालिम हूमायूं तथा **दक्कन का नीरो** भी कहा जाता था।

☛ इसी ने महमुद गवां को प्रधानमंत्री के पद पर नियुक्त किया था। जो एक योग्य व्यक्ति थे। ये पत्रों का संग्रह करते थे। इनके पत्रों का संग्रह रियाजूल-इन्शा कहलाता है।

➢ **मुहम्मद शमसुद्दीन तृतीय (1463 ई.-1482 ई.)**

☛ इसने बहमनी साम्राज्य को चार प्रांतों की जगह 8 प्रांतों में विभाजित किया था।

☛ इसी ने महमुद गवां को राजद्रोह के अपराध में फांसी दे दी थी।

☛ इस वंश का अंतिम शासक कलिमुल्ला था। जिसकी मृत्यु 1527 में होने के बाद बहमनी साम्राज्य का अंत हो गया।

➢ **इसी के समय बहमनी साम्राज्य पांच भागों में बंट गया–**

(1) बरार,
(2) बीजापुर,
(3) अहमदनगर,
(4) गोलकुण्डा तथा
(5) बीदर

राज्य	वंश	संस्थापक	वर्ष	क्षेत्र	राजधानी
1. बरार	इमादशाही वंश	फतेहउल्लाह ईमादशाह	1484	महाराष्ट्र	एलिचपुर, गावीलगढ
2. बीजापुर	आदिल शाही वंश	यूसूफ आदिल शाह	1489	कर्नाटक	नौरसपुर
3. अहमदनगर	निजाम शाही वंश	मलिक अहमद	1490	महाराष्ट्रा	जुन्नार, अहमदनगर
4. गोलकुण्डा	कुतुबशाही वंश	कुली कुतुबशाह	1512	तेलंगाना	गोलकुण्डा
5. बीदर	बरीदशाही वंश	अमीर अली बरीद	1526	कर्नाटक	बीदर

बहमनी साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था

☛ यहाँ भी सत्ता का प्रधान सुल्तान था।

☛ इसकी सहायता के लिए आठ मंत्रीपरिषद होते थे– वकील (प्रधानमंत्री), अमीर-ए-जुमला (वित्तमंत्री), वजीर-ए-अशरफ (विदेश मंत्री), होता था। इसके अतिरिक्त दबीर (सचिव), कोतवाल (पुलिस विभाग का अध्यक्ष), मुनहियान (गुप्तचर) भी होते थे।

☛ साम्राज्य का विभाजन प्रांतों में किया गया था जिसे तरफ कहा जाता था तथा इसके प्रमुख तरफदार कहलाते थे।

☛ चारों प्रांतों में गुलबर्गा का विशेष महत्व था। यहाँ विश्वासपात्र अमीरों की नियुक्ति की जाती थी, जिन्हें मीरनायब (वायसराय) कहा जाता था।

➢ **सैन्य व्यवस्था**

☛ यहाँ के सेनापति को अमीर-उल-उमरा कहते थे।

☛ सुल्तान अपने अंगरक्षक रखता था, जिन्हें खासखेल कहा जाता था।

☛ राजा के व्यक्तिगत शस्त्रागार के प्रभारी को सिल्हदार कहा जाता था।

➢ **समाज एवं संस्कृति**

☛ उर्दू भाषा का विकास दक्कन में ही हुआ।

☛ प्रसिद्ध सूफी संत गेसूदराज दक्षिण के पहले विद्वान थे जिन्होंने फारसी लिपि में उर्दू की पुस्तक मिराज-उल-आशिकीन की रचना की।

☛ इस साम्राज्य में बीदर, कादिरी संप्रदाय का प्रमुख केंद्र था।

➢ **अर्थव्यवस्था**

☛ बहमनी साम्राज्य में अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि ही थी।

☛ रूसी यात्री निकितीन के अनुसार बहमनी साम्राज्य से मुख्यत: घोड़ा, वस्त्र, रेशम और मीर्च का व्यापार होता था।

☛ घोड़ों का आयात अरब, खुरासान जबकि कस्तुरी का आयात चीन से होता था।

अन्य क्षेत्रीय शक्तियों का उदय

➢ मालवा

- मालवा का राज्य नर्मदा तथा ताप्ती नदियों के मध्य अवस्थित था।
- तुगलक वंश के पतन के दौरान तुगलक गवर्नर दिलावर खाँ ने सन् 1401 ई. में स्वतंत्र मालवा साम्राज्य की स्थापना की तथा धार को अपनी राजधानी बनाया।
- दिलावर खाँ का वास्तविक नाम हुसैन था।
- मालवा का प्रसिद्ध शासक हुशंगशाह, दिलावर खाँ का पुत्र था।
- हुशंगशाह महान विद्वान और सूफी संत शेख बुरहानुद्दीन का शिष्य था।
- हुशंगशाह ने 1406 ई. में अपनी मृत्यु से पूर्व नर्मदा के किनारे होशंगाबाद नगर की स्थापना की।
- 1436 ई. में इस वंश को समाप्त कर महमूद खिलजी ने मालवा में एक नए खिलजी वंश की स्थापना की।
- मेवाड़ के साथ राणा कुंभा से हुए युद्ध में महमुद खिलजी और राणा कुंभा दोनों शासकों ने विजय का दावा किया है।
- इस युद्ध के उपलक्ष्य में राणा कुंभा ने चित्तौड़ में विजय स्तंभ बनवाया और महमूद खिलजी ने मांडू में ''सात मंजिलों वाला स्तंभ'' स्थापित किया।
- बादशाह अकबर ने 1562 ई. में अब्दुल्ला खाँ के नेतृत्व मालवा पर विजय हेतु मुगल सेना भेजी। उस समय वहाँ का शासक बाजबहादुर था, जिसे परास्त कर मालवा को अंतिम रूप से मुगल साम्राज्य का हिस्सा बना लिया गया।

➢ मेवाड़

- मेवाड़ राज्य, गुहिलौत राजवंश के अधीन एक प्राचीन राज्य था जिसकी राजधानी उदयपुर के निकट नागदा थी। बाद में इसकी राजधानी चित्तौड़ हो गई।
- हम्मीरदेव ने 1314 ई. में मेवाड़ में सिसोदिया वंश की स्थापना की।
- मोकल का पुत्र राणा कुंभा 1433 ई. में मेवाड़ का शासक बना। जो एक महान विजेता माना जाता है।
- मालवा विजय की स्मृति में राणा कुंभा ने चित्तौड़ में कीर्तिस्तंभ (विजय स्तंभ) की स्थापना करवाई।
- राणा कुंभा स्वयं एक बड़ा विद्वान था। उसने जयदेव द्वारा रचित गीतगोविंद पर रसिक प्रिया नामक टीका लिखी तथा संगीत शास्त्र पर संगीतराज, (संगीत-मीमांसा) संगीत रत्नाकार आदि ग्रंथों की रचना की।
- राणा कुंभा 'एकलिंगा महात्म्य' के अंतिम भाग के रचयिता भी थे।
- 1468 ई. में उसके पुत्र ऊदा ने उसकी हत्या कर दी।
- राणा सांगा भी मेवाड़ का शक्तिशाली शासक था जो रायमल का पुत्र था। उसका वास्तविक नाम संग्राम सिंह था।
- राणा सांगा 1517-18 ई. में घटोली (खतोली)के युद्ध में दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोदी को पराजित किया था।
- 1527 ई. में खानवां के युद्ध में राणा सांगा को मुगल बादशाह बाबर ने पारित कर दिया था।

➢ जौनपुर

- जौनपुर वर्तमान उत्तर प्रदेश राज्य में अवस्थित सल्तनतकालीन नगर है, जिसकी स्थापना फिरोजशाह तुगलक ने अपने चचेरे भाई जौना खाँ (मुहम्मद बिन तुगलक) की स्मृति में कराई थी।
- सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक के एक दास मलिक सरवर (ख्वाजा जहाँ) ने 1394 ई. में स्वतंत्र जौनपुर राज्य की स्थापना की।

Note :- मलिक सरवर को ख्वाजा जहाँ भी कहते थे।

- मलिक सरवर एक हिजड़ा था। शासक बनने के बाद उसने सुल्तान उस शर्क की उपाधि धारण की।
- मालिक सरवर द्वारा जौनपुर की शर्की वंश की स्थापना की गई
- सुल्तान फिरोजशाह तुगलक ने मलिक सरवर को मलिक-उस-शर्क (पूर्व का स्वामी) तथा ख्वाजा-ए-जहाँ की उपाधि प्रदान की थी।
- इब्राहिम शाह शर्की वंश का महानतम शासक था।
- इब्राहिम शाह के समय ही जौनपुर को भारत का शिराज कहा जाने लगा तथा उसने स्वयं शिराज-ए-हिन्द की उपाधि धारण की।
- इब्राहिम शाह के द्वारा जौनपुर में प्रसिद्ध अटाला मस्जिद का निर्माण करवाया था।
- पद्मावत के लेखक मलिक मोहम्मद जायसी जौनपुर में रहते थे।

➢ कश्मीर

- 1301 ई. में सूहादेव ने कश्मीर में स्वतंत्र हिन्दू राजवंश की स्थापना की।
- 1339 ई. में शाह मिर्जा अथवा शाहमीर ने कश्मीर पर अधिकार कर वहाँ मुस्लिम राजवंश शाहमीर वंश की स्थापना की।
- सिकंदर (1389-1413 ई.) इस वंश का एक महत्वपूर्ण शासक था। इसी के शसनकाल में तैमूर ने भारत पर आक्रमण किया था।
- सुल्तान जैनुल आबिदीन (1420-1470 ई.) सिकंदरशाह का उत्तराधिकारी एवं कश्मीर का सबसे महान शासक था।
- जैनुल आबिदीन ने हिन्दुओं से जजिया की वसूली बंद करवा दी।
- गौ-हत्या पर भी निषेध कर दिया तथा हिन्दुओं की भावना को ध्यान में रखते हुए सती प्रथा पर प्रतिबंध हटा दिया।
- सुल्तान जैनुल आबिदीन कुतुब उपनाम से फारसी में कविताएँ लिखता था तथा शिकायतनामा नामक ग्रंथ की रचना की।
- जैनुल आबिदीन के आदेश पर महाभारत एवं राजतरंगिणी का फारसी में अनुवाद किया गया। कश्मीर के लोगों ने उसे 'वुडशाह' (महान शासक) की उपाधि से सम्मलित किया।

- उसने कश्मीर में वूलर झील एवं जैना लंका नामक द्वीप का निर्माण करवाया था।
- जैनुल अबिदीन की उदार नीतियों के कारण इतिहास में उसे कश्मीर का अकबर और मूल्य नियंत्रण व्यवस्था के कारण कश्मीर का अलाउद्दीन खिलजी कहा गया है।
- आबिदीन के समय विद्वान जोनराज ने भारतीय इतिहास की पुस्तक कल्हण की राजतरंगिणी के द्वितीय भाग की रचना की।

➢ **बंगाल**

- 1345 ई. में मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में इलियास खाँ ने संपूर्ण बंगाल पर अधिकार कर लिया और सुल्तान शम्सुद्दीन इलियासशाह के नाम से गद्दी पर बैठा।
- इलियासशाह ने ही बंगाल में इलियासशाही वंश की स्थापना की।
- इलियासशाह के उत्तराधिकारी सिकंदरशाह ने 1368 ई. में पांडुआ में अदीना मस्जिद का निर्माण करवाया था।
- सुल्तान नुसरतशाह के समय कृत्तिवास ने रामायण का बांग्ला में अनुवाद किया जिसे बंगाल का बाइबिल कहा जाता है।
- सोना मस्जिद तथा कदम रसूल मस्जिद का निर्माण नुसरत शाह ने गौड़ (बंगाल) में करवाया था।
- कांसीराम ने प्रथम बांग्लाभाषी महाभारत की रचना की।
- अलाउद्दीन हुसैनशाह (1493-1519 ई.) बंगाल के मुस्लिम शासकों में श्रेष्ठ था।
- इसने गौड़ के स्थान इकदला को बंगाल की राजधानी बनाया।
- महान वैष्णव संत चैतन्य महाप्रभु अलाउद्दीन हुसैनशाह के समकालीन थे।

❐❐❐

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

16. भक्ति आंदोलन (Bhakti Movement)

भक्ति आन्दोलन 600–800 AD

- पूर्व मध्यकाल में भक्ति आन्दोलन, दक्षिण भारत में वर्ण व्यवस्था तथा छूआछुत के कारण अत्यधिक फैल गयी। यहां से भक्ति आन्दोलन का प्रारम्भ हुआ। भक्ति आन्दोलन की शुरुआत सर्वप्रथम नयनार सन्तों ने किया। इस आन्दोलन की शुरुआत करने का श्रेय अलवार सन्तों को भी जाता है।
- नयनार, शैव धर्म के अनुयायी थे वहीं अलवार, वैष्णव धर्म के अनुयायी थे।
- भक्ति आन्दोलन का एक सुदृढ़-स्वरूप देने का श्रेय शंकराचार्य को जाता है।

➢ शंकाराचार्य

- शंकराचार्य को भक्ति आंदोलन का प्रथम संत माना जाता है। उनका जन्म केरल के कलाडी में 788 ई. में हुआ था।
- इनके दर्शन का आधार वेदांत अथवा उपनिषद् था।
- शंकराचार्य ने अद्वैतवाद का मत दिया और कहा कि यह संसार झूठा है। ब्रह्म सत्य है। इन्होंने स्मृति-सम्प्रदाय की स्थापना किया।
- शंकराचार्य ने दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन को बौद्ध तथा जैन धर्म के प्रभाव को कम करने के लिए किया।
- 820 ई. में हिमालय की तलहटी में स्थित केदारनाथ में मात्र 32 वर्ष की आयु में इनकी मृत्यु हो गई।
- इन्होंने अपने विचार के प्रसार के लिए भारत के चारों दिशा में पीठ (मठ) का निर्माण कराया।
  1. उत्तर → ज्योतिष पीठ (बद्रीनाथ) उत्तराखण्ड
  2. दक्षिण → श्रृंगेरी पीठ (मैसूर) कर्नाटक
  3. पूरब → गोवर्धन पीठ (पूरी) ओडिशा
  4. पश्चिम → शारदापीठ (द्वारका) गुजरात

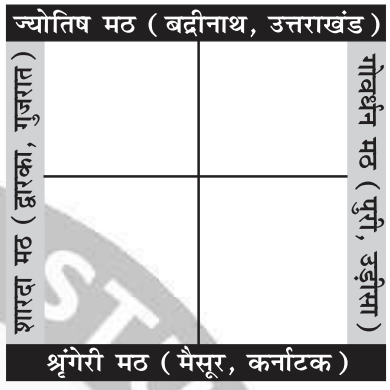

➢ रामानुज

- रामानुज का जन्म तमिलनाडु के पेरंबदूर में हुआ था। वे सगुण धारा के वैष्णव संत थे।
- शंकराचार्य के ज्ञानवादी अद्वैत दर्शन के विरोध में इन्होंनं विशिष्टाद्वैतवाद का दर्शन दिया तथा ज्ञान के स्थान पर भक्ति को महत्ता प्रदान की।

➢ मध्वाचार्य

- मध्वाचार्य ने शंकराचार्य तथा रामानुज दोनों के विचारों का खंडन किया और अपना एक नवीन मत दिया जिसे द्वैतवाद के नाम से जाना जाता है।
- उन्होंने अपने सिद्धांत में आत्मा एवं परमात्मा को पृथक तत्त्व माना तथा लक्ष्मी नारायण की भक्ति को मोक्ष का प्रमुख मार्ग बतलाया।

Note :– शंकराचार्य, रामानुज, मध्वाचार्य का संबंध वेदान्त दर्शन से है।

Note :– 12वीं सदी में शंकराचार्य के मत को कई विद्वान ने काट दिया।

1. माधवाचार्य ने द्वैतवाद का मत दिया और ब्रह्म सम्प्रदाय की स्थापना किया।
2. निम्बाकाचार्य ने द्वैता द्वैतवाद का मत दिया और सनक सम्प्रदाय की स्थापना किया।
3. बल्लभाचार्य ने शुद्धाद्वैतवाद का मत दिया और पुष्टि सम्प्रदाय की स्थापना किया।
4. रामानुजाचार्य ने विशिष्टता द्वैतवाद का मत दिया और श्री गणेश की स्थापना किया।

- प्रारम्भ में भक्ति आन्दोलन दक्षिण भारत तक सीमित था। भक्ति आन्दोलन को उत्तर भारत में लाने का श्रेय रामानंद को जाता है। रामानन्द ने अपना उपदेश हिन्दी में देना प्रारम्भ किया।

- 16वीं शताब्दी में भक्ति आंदोलन अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गई।
- उत्तर भारत का भक्ति आंदोलन उच्च-नीच तथा छुआ-छुत के विरुद्ध था। उत्तर भारत का भक्ति आंदोलन दो भागों में बंट गया।

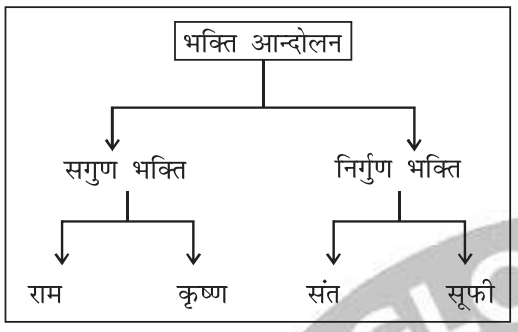

सगुण भक्ति

- इस भक्ति के भक्त भगवान को एक विशेष रूप देते हैं। वे भगवान की मूर्त्ति या चित्र बनाते हैं और उसकी पूजा करते हैं। सगुण भक्ति दो भागों में बटा-रामभक्ति तथा कृष्णभक्ति।
- यह अवतारवाद को मानते थे।

राम-भक्ति

- इस शाखा के भक्त-भगवान राम की अराधना करते थे। इस शाखा के सबसे प्रमुख भक्त तुलसीदास थे। जिन्होंने अवधी भाषा में रामचरितमानस की स्थापना की। उनकी अन्य प्रमुख रचना कवितावली, दोहावली, विनयपत्रिका है। ये अकबर के समकालीन थे।
- अकबर ने इन्हें नवरत्न में शामिल होने का प्रस्ताव दिया। लेकिन उन्होंने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।
- दक्षिण भारत में रामभक्ति को फैलाने का कार्य त्यागराज ने किया।

कृष्ण-भक्ति

- इस शाखा के सारे भक्त भगवान कृष्ण की अराधना करते थे। कृष्ण भक्ति में सबसे प्रमुख संत विट्ठल-स्वामी थे। इन्होंने आठ शिष्यों को शिक्षा दिया। जिन्हें संयुक्त रूप से अष्टाछाप कहा जाता है। इस अष्टाछाप में सबसे प्रमुख शिष्य सूरदास थे।
- सूरदास की रचना सूर-सागर प्रमुख है।
- महाराष्ट्र के क्षेत्र में कृष्ण-भक्ति को एक साथ तुकाराम इत्यादि ने फैलाया।
- तुकाराम शिवाजी के समकालीन थे। गुजरात के क्षेत्र में कृष्ण-भक्ति का प्रचार नरसिंह मेहता ने किया। इनकी कविता **"वैष्णव जन तो तेने कहिए"** है। यह महात्मा गांधी का भी पसंदीदा गीत था।
- बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा के क्षेत्र भक्ति आन्दोलन का प्रचार चैतन्य महाप्रभू ने किया था। इन्होंने ही हरिकीर्तन प्रारम्भ किया।
- कृष्ण भक्ति में संगीत बहुत ज्यादा है।

सगुण भक्ति के प्रमुख संत

➢ चैतन्य

- इनका जन्म बंगाल के नवद्वीप या नदिया में हुआ था।
- इसका वास्तविक नाम विश्वंभर था तथा बाल्यावस्था में ये निमाई के नाम से जाने जाते थे।
- चैतन्य सगुण धारा के कृष्ण भक्ति शाखा के थे। उन्हें बंगाल में आधुनिक वैष्णववाद या गौडीय वैष्ण धर्म का संस्थापक माना जाता है।
- इनके अनुयायी उन्हें कृष्ण या विष्णु का अवतार मानते थे तथा उन्हें गौरांगमहाप्रभु के नाम से पूजते थे।
- चैतन्य ने भक्ति में कीर्तन को मुख्य स्थान दिया।

➢ बल्लभाचार्य

- इनका जन्म तेलंगाना के ब्राह्मण परिवार में वाराणसी में उस समय हुआ, जब उनका परिवार काशी की तीर्थयात्रा पर आये थे।
- इन्होंने वैष्णव संप्रदाय की स्थापना की।
- ये विजयनगर के शासक कृष्णदेव राय के समकालीन थे।
- बल्लभाचार्य ने शुद्धाद्वैत दर्शन की अवधारणा दी और ईश्वर प्राप्ति के लिये पुष्टिमार्ग एवं भक्तिमार्ग पर विश्वास किया।

➢ मीराबाई

- मीराबाई सोलहवीं शताब्दी के भारत की एक महान महिला संत थी। वे मेड़ता के राजा रत्नसिंह राठौर की इकलौती पुत्री थी।
- मीराबाई का विवाह राणासांगा के पुत्र भोजराज के साथ हुआ परंतु वह जल्द ही विधवा हो गई थी।
- वह सगुण भक्ति धारा के कृष्ण की भक्त थीं।

➢ तुलसीदास

- तुलसीदास का जन्म 1532 ई. में राजापुर स्थान में हुआ था जो उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले में है।
- तुलसीदास के गुरु का नाम नरहरिदास था।
- तुलसीदास सगुण भक्ति धारा की राम भक्ति शाखा के प्रमुख संत थे।
- ये मुगल बादशाह अकबर के समकालीन थे।
- उन्होंने अवधी भाषा में रामायण की रचना की, जो रामचरित मानस के नाम से प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त अवधी में ही उन्होंने गीतावली, कवितावली, विनयपत्रिका आदि की रचना की।

निर्गुण भक्ति

- इस भक्ति के सन्त किसी की मूर्ति या चित्र नहीं बनाते थे। वे बिना मूर्ति के ही अराधना करते थे। इनका मानना था कि ईश्वर कण-कण में विद्यमान हैं।

☛ निर्गुण भक्ति दो भागों में बंट गया। संत भक्ति तथा सूफी भक्ति।

संत भक्ति

☛ संत भक्ति के अंतर्गत रामानंद, कबीर, रैदास, गुरुनानक आदि जैसे संत आते हैं–

➢ **रामानंद**

☛ इनका जन्म इलाहाबाद में हुआ था। ये रामनानुज के शिष्य थे।
☛ इसने पहली बार उपदेशों के हिन्दी में देना प्रारंभ किया।
☛ ये राम और सीता के उपासक थे।
☛ इनके 12 प्रमुख शिष्य थे, जो अलग-अलग जाति से थे जिनमें से दो महिला शिष्या भी थी– पद्मावती और सुरसी।

➢ **कुछ प्रमुख शिष्य एवं उनकी जातियाँ–**

- कबीरदास– जुलाहा
- रैदास – चमार
- धन्ना – जाट
- पीपा – राजपूत
- सेन – नाई

➢ **कबीर**

☛ संत कबीर का जन्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी में हुआ था।
☛ यह ईश्वर के निराकार रूप के पूजक थे। अर्थात् यह निर्गुण धारा को मानती थी।
☛ निर्गुण भक्ति धारा में कबीर पहले संत थे, जो संत होकर भी अंत तक गृहस्थ बने रहे। उनकी विचाराधारा विशुद्ध अद्वैतवादी थी।
☛ कबीर के उपदेश साखी, सबद तथा रमैनी में वर्णित है, जिन्हें हिन्दू-मुसलमान दोनों अपनाना पसंद करते हैं।
☛ इनको मानने वालो को कबीर पंथी कहते हैं। इनके शिक्षाएँ/दोहे बीजक पुस्तक में संगृहित है
☛ ये सिकंदर लोदी के समकालीन थे।
☛ इनकी मृत्यु 1510 ई. में मगहर (उत्तरप्रदेश) में हुई थी।

➢ **रविदास/रैदास**

☛ ये चमार या मोची के जाति से आते थे।
☛ इन्हें संतों का संत कहा जाता था।
☛ सिक्खों के प्रमुख धार्मिक ग्रंथ गुरु ग्रंथ साहिब में रविदास के तीस से अधिक भजन संगृहीत है।
☛ इनके अनुसार मानव सेवा ही धर्म एवं भक्ति की सर्वोत्कृष्ट अभिव्यक्ति का माध्यम है।

➢ **दादू**

☛ दादू का जन्म अहमदाबाद में एक जुलाहे के परिवार में हुआ था।
☛ दादू ने एक असांप्रदायिक मार्ग (निपख संप्रदाय) की स्थापना की।
☛ सुंदरदास, रज्जब और सूरदास इनके प्रमुख शिष्य थे।
☛ सूरदास अकबर एवं जहाँगीर के समकालीन थे तथा वे राधा-कृष्ण के भक्त थे।
☛ सूरदास ने ब्रजभाषा में तीन ग्रंथों-सूरसारावली, सूरसागर एवं साहित्य लहरी की रचना की।

सिक्ख धर्म

➢ **गुरुनानक देव**

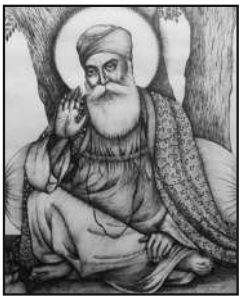

☛ यह सिख धर्म के प्रथम गुरु गुरु थे।
☛ यह संत भक्ति के संत थे।
☛ इनका जन्म 15 अप्रैल, 1469 ई. में तलवंडी में एक खत्री परिवार में हुआ था।
☛ यह स्थान वर्तमान समय में पाकिस्तान में है, जो ननकाना साहिब के नाम से प्रसिद्ध है।
☛ इनके पिता का नाम कालू चंद मेहता, माता का नाम तृप्ता, पत्नी का नाम सुलक्षणी तथा पुत्र का नाम श्रीचंद था।
☛ इनको ज्ञान की प्राप्ति सुल्तानपुर में बई नदी किनारे हुआ था।
☛ गुरु नानक ने सिख धर्म की स्थापना किया और गरीबों को मुफ्त में भोजन (लंगर) व्यवस्था शुरु किया किन्तु यह सुचारू रूप से नहीं चल पाया था।
☛ अंतिम समय उन्होंने करतार साहिब में बिताये थे। इन्होंने ही गुरु की परंपरा को प्रारम्भ किया था।
☛ इनके कविताओं एवं गीतो का संकलन एक पुस्तक के रूप में किया गया जो आदि ग्रंथ के नाम से प्रकाशित हुआ।
☛ इनकी मृत्यु 1539 ई. में करतारपुर (पाकिस्तान में) हो गई।
☛ यह **बाबर** के साथ-साथ सल्तनत काल के अंतिम शासक **इब्राहिम लोदी** और महान संत **चैतन्य महाप्रभु** एवं **कबीरदास** के समकालीन थे।

➢ **अंगद देव**

☛ ये दूसरे गुरु थे।
☛ इनके बचपन का नाम लहना सिंह था।
☛ इन्होंने गुरुनानक देव की जीवनी को लिखा था।
☛ इन्होंने लंगर व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाया।
☛ इन्होंने गुरु-मुखी लिपि का खोज किया।
☛ यह शेरशाह एवं हुंमायू के समकालीन थे।

➢ **अमरदास**

☛ ये तीसरे गुरु थे।
☛ इन्होंने पर्दा-प्रथा, सती-प्रथा (कुप्रथा) इत्यादि का विरोध किया।
☛ इन्होंने हिन्दू विवाह पद्धति से अलग हटकर सिखों के लिए एक नई विवाह पद्धति को लागू किया जिसे लवन पद्धति कहा गया।

- यह पारिवारिक जीवन में रहते हुए गुरु के कर्त्तव्यों का पालन किया।
- यह अकबर के समकालीन थे।

➢ **रामदास**

- ये चौथे गुरु थे।
- इनके समय से गुरु का पद वंशानुगत हो गया।
- इनका अकबर से अच्छा सम्बन्ध था। अकबर ने इन्हें अमृतसर शहर के लिए 500 बिगहा जमीन दान में दिया।
- इन्होंने अमृतसर नामक एक तालाब बनाया था।
- अमृतसर Airport का नाम गुरु रामदास Internatinal Airport है।
- यह अकबर के समकालीन थे।

➢ **अर्जुन देव**

- ये पांचवें गुरु थे।
- इन्होंने ही स्वर्ण मन्दिर की स्थापना की।
- इन्होंने गुरुग्रन्थ साहिब की रचना की थी। इन्हें आदि ग्रन्थ भी कहते हैं।
- गुरु अर्जुन देव ने मसनद प्रथा को प्रारंभ किया था जिसके अंतर्गत सिख लोग अपनी आय का 10 प्रतिशत गुरु के पास जमा करते थे।
- इन्होंने जहांगीर के विद्रोही पुत्र खुसरो को समर्थन दिया था। जिस कारण जहांगीर ने इन्हें फांसी दे दिया।

  Note :– राजा रंजीत सिंह ने हरमंदिर पर सोने की परत चढ़वाया जिसके बाद हरमंदिर स्वर्ण मंदिर कहलाने लगा।
- सिख धर्म में सबसे ज्यादा जोर मानवता पर दिया गया है।
- यह अकबर तथा जहांगीर के समकालीन थे।

➢ **गुरु हरगोविन्द**

- ये छठवें गुरु थे।
- इन्होंने अकाल तख्त की स्थापना किया तथा नगाड़ा बजाने की परम्परा शुरु किया।
- इन्होंन स्वयं को सच्चा बादशाह घोषित किया और अमृतसर की घेराबंदी कराकर स्वयं को शासक के रूप में घोषित कर दिया।
- यह जहांगीर के समकालीन थे।

➢ **गुरु हरराय**

- ये सातवें गुरु थे।
- इनका मुगल बादशाह दारा शिकोह से अच्छा सम्बन्ध था।
- यह औरंगजेब के समकालीन थे।

➢ **गुरु हरकिशन**

- ये आठवें गुरु थे।
- इनका कार्यकाल बहुत छोटा था।
- इनकी मृत्यु चेचक के कारण हो गयी थी।

➢ **गुरु तेगबहादुर**

- ये नौवें गुरु थे।
- इन्होंने औरंगजेब के विद्रोही पुत्र अकबर द्वितीय को शरण दे दिया। जिस कारण औरंगजेब ने इन्हें इस्लाम धर्म कुबुल करने को कहा किन्तु इन्होंने इस्लाम धर्म कुबुल नहीं किया। जिस कारण औरंगजेब ने दिल्ली के चांदनी चौक पर हत्या कर दिया जहाँ आज शिशगंज गुरुद्वारा है।
- यह औरंगजेब के समकालीन थे।

➢ **गुरु गोविन्द सिंह**

- ये दसवें तथा अंतिम गुरु थे।
- इनका जन्म 26 दिसम्बर, 1666 को पटना साहिब में हुआ था। किन्तु इनकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा अमृतसर में हुई थी।
- इनकी पिता का नाम गुरु तेगबहादुर तथा माता का नाम गुजरी देवी थी।
- इनके बाद गुरु का पद समाप्त हो गया।
- इन्होंने सिखों को एक सैनिक टूकड़ी में ढाल दिया और 13 अप्रैल 1699 ई. में वैशाखी के दिन आनंदपुर साहिब में खालसा पंथ की स्थापना किया।
- इन्होंने पाहुल प्रणाली की प्रथा को जन्म दिया था।
- इन्होंने 5 ककार की स्थापना किया जो इस प्रकार है– केश, कंघा, कृपाण, कछा, कड़ा रखना अनिवार्य कर दिया।
- इन्होंने कहा कि सिख अपनी बाल कभी नहीं दिखायेगा। इन्होंने मुगलों का मुँहतोड़ जवाब दिया।
- इनका कहना था–

''चिड़िया नु मै बाज लड़ावा
गिदर नु मै शेर बनावा
सवालख नु एक लड़ावा
तब गोविन्द सिंह नाम कहावा''

- 1705 में औरंगजेब के कहने पर बुलखान नामक व्यक्ति ने महाराष्ट्र के नानदेड़ में गोविन्द सिंह की हत्या कर दी। गोविन्द सिंह के मृत्यु के बाद सबसे बड़ा सिख योद्धा बंदा बहादुर था। जिसने हजारों की संख्या में मुगल सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया।
- औरंगजेब के इशारे पर बंदा बहादुर की भी हत्या कर दी गई। इसके बाद सिख धर्म छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट गया। जिसे मिशल कहते हैं। सबसे प्रमुख मिशल सुकर चकिया मिशल था। जिससे राजा रंजीत सिंह आते थे। इन्होंने ही स्वर्ण मंदिर के दीवारों पर सोने की चादर चढ़वाई थी।
- यह औरंगजेब के साथ-साथ बहादुरशाह के भी समकालीन थे।

  Note :– सिखों में क्रमशः 3 वर्ग होती है। जट, ज्ञानी, सरदार (शनिदेवल, भाग मिल्खा सिंह, मनमोहन सिंह)।

➢ **प्रमुख प्रवर्तक एवं उनके संप्रदाय**

प्रवर्तक	संप्रदाय
● शंकराचार्य	स्मृति संप्रदाय
● रामनुजाचार्य	श्री संप्रदाय
● मध्वाचार्य	ब्रह्म संप्रदाय
● गुरु नानक	सिक्ख संप्रदाय
● नामदेव	वारकारी संप्रदाय
● शंकर देव	एकशरण संप्रदाय
● निंबार्क	सनक संप्रदाय

सूफी भक्ति

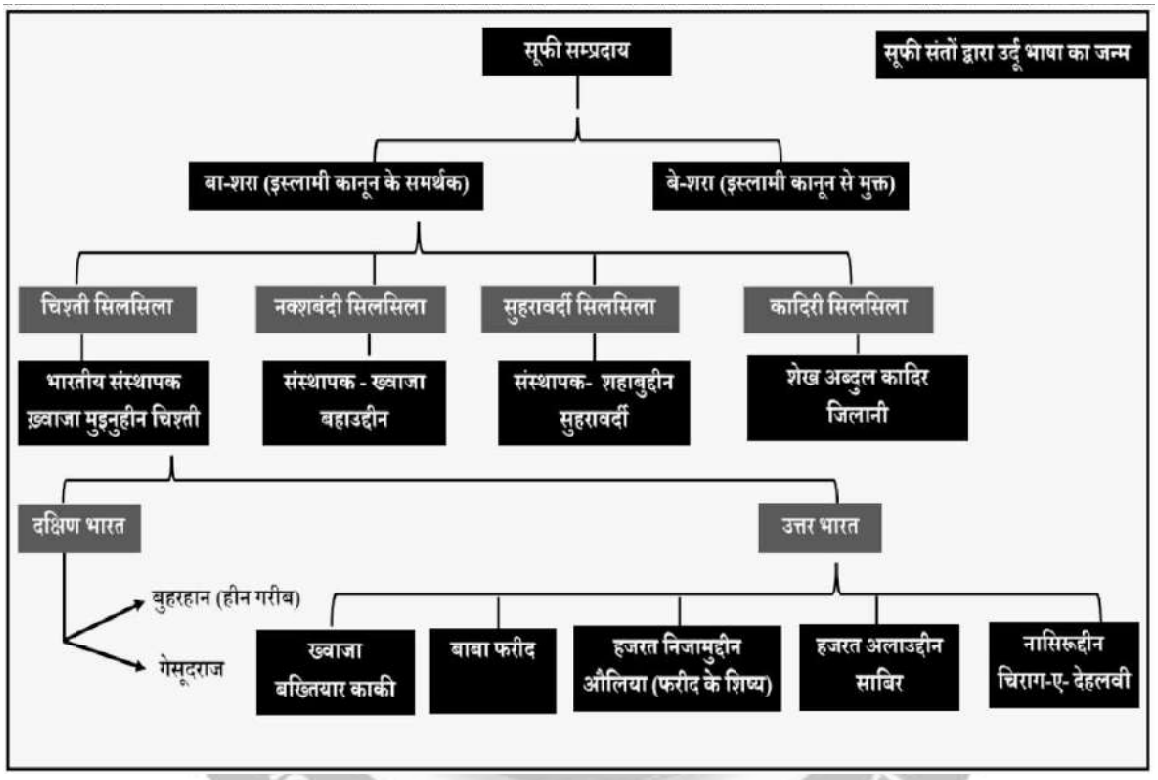

- ☛ सूफी शब्द की उत्पति अरबी भाषा के सफा शब्द से हुई है। जिसका अर्थ है पवित्रता।
- ☛ पहले सूफी सन्त के रूप में मैसूर हल्लाज का नाम आता है। इन्होंने अनहलत की उपाधि धारण की जिसका अर्थ होता है ईश्वर से मिलने वाला।
- ☛ सूफी विचारधारा में गुरु (पीर) और शिष्य (मुरीद) के बीच संबंध का महत्त्व बहुत अधिक है। प्रत्येक पीर अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करता था जिसे **वली** कहते थे।

चिश्ती सम्प्रदाय

- ☛ भारत में सबसे प्रमुख सम्प्रदाय चिश्ती सम्प्रदाय थी। भारत में इसकी स्थापना का श्रेय ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती को जाता है। इन्होंने अपना केन्द्र राजस्थान के अजमेर में बनाया।
- ☛ चिश्ती सम्प्रदाय के संत उदारवादी (विनम्र) होते थे। ये कट्टर नहीं होते।
- ☛ मोइनुद्दीन चिश्ती के गुरु उस्मान हासनी थे।
- ☛ मोइनुद्दीन चिश्ती के सबसे प्रिय शिष्य ख्वाजा बख्तियार काकी थे।
- ☛ बख्तियार काकी के शिष्य बाबा फरीद तथा कुतुबुद्दीन ऐबक थे।
- ☛ बाबा फरीद के उपदेशों को गुरु ग्रन्थ साहिब में भी रखा गया है।
- ☛ बाबा फरीद के सबसे प्रिय शिष्य निजामुद्दीन औलिया थे, ये सात सुल्तानों का काल देखे थे।
- ☛ बाबा फरीद दिल्ली सल्तनत के सुल्तान बलबन के दामाद थे फिर भी उन्होंने राजकीय संरक्षण को स्वीकार नहीं किया।
- ☛ निजामुद्दीन औलिया के सबसे प्रिय शिष्य अमीर खुसरो थे।
- ☛ निजामुद्दीन औलिया तथा अमीर खुसरो दोनों का मकबरा दिल्ली में एक ही जगह है।
- ☛ अकबर के समकालीन सूफी शेख सलीम चिश्ती थे। इन्हीं से प्रभावित होकर अकबर ने अपने बेटे का नाम सलीम रखा था। जो आगे जाकर जहांगीर के नाम से जाना गया।

☛ दक्षिण भारत में चिश्ती संप्रदाय का प्रचार करने का श्रेय सैयद मुहम्मद गेसूदराज को ही प्राप्त है।

Note :– ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती द्वारा चलाए गए सम्प्रदायों को चिश्ती सम्प्रदाय कहते हैं। यह भारत का सबसे बड़ा सूफी संप्रदाय है।

सुहरावर्दी सम्प्रदाय

☛ इस सम्प्रदाय के स्थापना का श्रेय बहाउद्दीन जकारिया को जाता है। इन्होंने अपना केन्द्र पाकिस्तान के मुल्तान को बनाया था। इस शाखा के सूफी कठोर व्रत का पालन नहीं करते हैं। बल्कि सामान्य जीवन को जीते थे।

फिरदौसी सम्प्रदाय

☛ इस सम्प्रदाय के स्थापना का श्रेय याहिया मनेरी को जाता है। इन्होंने अपना केन्द्र बिहार के मनेर शरीफ (दानापुर) को बनाया।

☛ बिहार में सबसे प्रचलित फिरदौसी सम्प्रदाय थी।

❐❐❐

नक्शबंदी सम्प्रदाय

☛ नक्शबंदी सम्प्रदाय के संस्थापक ख्वाजा बाकी विल्लाह थे।

☛ इस सम्प्रदाय के सूफी कठोर व्रत का पालन करते थे तथा कट्टर थे।

☛ धार्मिक कट्टर का अर्थ होता है धार्मिक नियम को कठोरता पूर्ण लागू करवाने वाला।

☛ मुगल बादशाह औरंगजेब इसी सम्प्रदाय का अनुयायी था। यह एक प्रत्यक्षवादी दर्शन, (वजहत-उल-शुद) था।

कादिरी सम्प्रदाय

☛ इस सम्प्रदाय के संस्थापक बगदाद के अब्दुल कादिर जिलानी थे परंतु भारत में इस सिलसिले के शुरूआत सैयद मोहम्मद जिलानी ने की थी।

☛ मुगल बादशाह शाहजहाँ का ज्येष्ट पुत्र दारा शिकोह, कादिरी संप्रदाय का ही अनुयायी था।

Note :- पाकिस्तान के परमाणु कार्यक्रम के जनक अब्बुल कादिर को कहा जाता है, जो सूफी न होकर एक परमाणु वैज्ञानिक थे।

➢ **कट्टर**

☛ वैसे लोग जो नियमों की शक्ति से पालन करते हैं कट्टर कहलाते हैं।

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

17. मुगल काल (Mughal Period)

☛ तैमूर के मृत्यु के बाद मध्य एशिया में अनेक छोटे-छोटे राज्यों का उदय हुआ। उन्हीं राज्यवंशों में से एक मुगल था।
बाबर → हुमायूं → अकबर → जहांगीर → शाहजहाँ → औरंगजेब → बहादुर शाह जफर

जहीरूद्दीन मुहम्मद बाबर (1526-1530 ई.)

☛ मुगल वंश का संस्थापक **बाबर** को माना जाता है। बाबर का वास्तविक नाम **'जहीरुद्दीन मुहम्मद'** था।
तुर्की भाषा में बाबर का अर्थ बाघ होता है। अत: जहीरुद्दीन मोहम्मद अपने पराक्रम एवं निर्भिक्ता के कारण बाबर कहलाया।

☛ बाबर का जन्म 14 फरवरी, 1483 को फरगना के एक छोटे से राज्य में हुआ जो अब उजबेकिस्तान में है। इसके पिता उमर शेख मिर्जा (तैमूर वंशज) तथा माता कुतुलुबनिगार खान (मंगोल वंशज) जो चंगेज खां की वंशज थी। इसलिए इसे तुर्को एवं मंगोलो दोनों के रक्त का मिश्रण के वंशज कहा गया।

☛ बाबर अपनी दादी एहसान दौलतवेग के सहयोग से 11 वर्ष की आयु में 1494 ई. में फरगना का शासक बना और मिर्जा की उपाधि धारण किया।

☛ बाबर ने 1501 में समरकंद जीत लिया किन्तु यह जीत केवल आठ महिने ही रही। बाबर ने काबुल और गजनी पर अधिकार कर लिया।

☛ 1507 ई. में इसने मिर्जा की उपाधि त्याग किया और पादशाह (बादशाह) की उपाधि धारण किया।

☛ बाबर ने जिस नए वंश की स्थापना किया उसका नाम चगताई तुर्क था।

☛ बाबर को भारत की ओर आक्रमण करने के लिए इसलिए मजबूर होना पड़ा कि उसके पड़ोस के शासक उससे हमेशा युद्ध करते रहते थे।

☛ 1519 ई. में बाबर ने पहला बाजौर अभियान किया था। उसी आक्रमण में ही उसने भेड़ा के किला को जीत लिया। बाबर ने इस किले को जीतने के लिए सर्वप्रथम बारुद और तोप का प्रयोग किया।

☛ बाबर पानीपत के प्रथम युद्ध से पहले भारत पर 4 बार आक्रमण किया।

☛ पानीपत का प्रथम युद्ध उसका भारत पर 5वां आक्रमण था।

☛ पानीपत के प्रथम युद्ध के लिए बाबर को निमंत्रण पंजाब का सूवेदार दौलत खां लोदी, इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खां लोदी तथा राणासांगा ने दिया था।

☛ पानीपत के प्रथम युद्ध 1526 ई. में बाबर ने उजबेकों की युद्ध नीति तुगलमा निति (अर्धचन्द्राकार) तथा तोपो को सजाने में उस्मानी विधि (रूमी विधि) का प्रयोग किया और इब्राहिम लोदी को पराजित कर दिया और इस युद्ध में इब्राहिम लोदी मारा गया।

☛ दिल्ली सलतनत का एक मात्र शासक इब्राहिम लोदी था जो युद्ध में मारा गया था।

☛ भारत में तोप (कैनन) का प्रयोग पहली बार बाबर ने ही किया था।

☛ पानीपत के युद्ध में बाबर के तोपखाने का नेतृत्व उस्ताद अली और मुस्तफा खां नामक दो तुर्की अधिकारियों ने किया।

☛ तुगलमा नीति को अर्धचन्द्रकार नीति भी कहते हैं। इस नीति के सफलता का मुख्य स्रोत तोपो की उपस्थिति थी।
पानीपत का युद्ध परिणाम के दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं था। फलस्वरूप इस युद्ध में भारत के भाग्य नहीं बल्कि लोदियों के भाग्य का निर्णय था।

Trick :– बाबर के द्वारा जीता गया युद्ध।

पान	खा	चांद	के घर
1526	1527	1528	1529
पानीपत	खानवा	चन्देरी	घाघड़ा
(इब्राहिम लोदी)	(राणासांगा)	(मेदनी राय)	(अफगान सेना)

☛ बाबर का पसंदीदा शहर काबुल था।

☛ पानीपत के प्रथम युद्ध के विजय के बाद बाबर ने काबुल के प्रत्येक निवासी को एक-एक चांदी का सिक्का दिया और कलन्दर (दानी) की उपाधि धारण किया।

☛ पानीपत का प्रथम युद्ध में बाबर ने यह निर्णय नहीं किया था कि वह भारत में स्थायी रूप से रहेगा।

☛ जैसे ही बाबर ने भारत में रहने का योजना बनाया तो राणासांगा ने विरोध कर दिया। 1527 ई॰ में खानवा (आगरा के समीप) का युद्ध हो गया। इस युद्ध में राणासांगा के साथ इब्राहीम लोदी के भाई महमूद लोदी, आलम लोदी और चंदेरी के राजा मेदिनी राय थे। सबकी सेना आगरा आयी और उसके बाद संयुक्त सेना खानवा के मैदान में आ गयी। बाबर का मुकबला इन चारों से था। इनकी संयुक्त सेना का मुकाबला बाबर के बस की नहीं

थी। बाबर ने अपने सैनिकों का मनोबल बढ़ाया और सैनिकों पर लगने वाले तमगा नामक टैक्स को खत्म कर दिया। बाबर को हर हाल में यह युद्ध जीतना था।

- इसी युद्ध में बाबर ने जिहाद शब्द (धर्म के लिए जनादेश) का प्रयोग किया। इस युद्ध में बाबर अपने सैनिकों को मदिरा पीने से रोक लगा दिया। बाबर की सेना पूरी बहादुरी से लड़ी और इस युद्ध में बाबर की जीत हुई। इस युद्ध के बाद बाबर ने **गाजी** (युद्ध का विजेता) की उपाधि धारण कर लिया।
- इसी युद्ध के बाद बाबर ने यह निर्णय लिया कि वह भारत में स्थायी रूप से रहेगा।
- 1528 के चंदेरी (मध्यप्रदेश का ग्वालियर क्षेत्र) के युद्ध में उसने मेदनी राय को पराजित किया।
- 1529 ई. में उसने घाघरा के युद्ध में बिहार तथा अफगान के संयुक्त सेना को पराजित कर दिया। इसका नेतृत्व महमूद लोदी ने किया था। किन्तु बाबर ने अफगानों का पूर्णत: सफाया नहीं किया। यही बचे हुए अफगान सैनिक हुमायूं के लिए खतरा बनकर सामने आए।
- 26 दिसम्बर, 1530 को बाबर की मृत्यु हो गयी और उसे आगरा के आरामबाग में दफनाया गया।
- अकबर के समय इसके कब्र को आगरा से काबूल स्थानान्तरित कर दिया गया, क्योंकि बाबर की यह इच्छा थी उसे काबूल में दफनाया जाए।
- बाबर चार बाग शैली आगरा के आरामबाग नामक बगीचा में बनवाया था। इसमें नदी तथा नहरों द्वारा पानी देने की व्यवस्था थी।
- बाबर को चार बाग शैली का जनक कहा जाता है।

- बाबर ने मुबइयान नामक एक पद्य शैली का विकास किया।
- बाबर ने सड़कों को नापने के लिये गज-ए-बाबरी नामक माप का प्रयोग किया था।
- बाबर ने अयोध्या में बाबरी मस्जिद का निर्माण करवाया था। इस मस्जिद का वस्तुकार (desioner) मीर वाकी था।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा तुजुक-ए-बाबरी (तुर्की भाषा) में यह कहता है कि उसने जिस वक्त भारत पर आक्रमण किया उस वक्त भारत में 5 मुस्लिम राज्य तथा 2 हिन्दू राज्य थे मुस्लिम राज्य में-दिल्ली, मालवा, गुजरात, बहमनी तथा बंगाल था। हिन्दु राज्य में-मेवाड़ तथा विजयनगर था।
- विजयनगर शासक कृष्ण देवराय बाबर के समकालिन थे बाबर ने इन्हें उस वक्त का सबसे शक्तिशाली शासक बताया है।

Remark :– तुजुक-ए-बाबरी बाबर की आत्मकथा है, जो तुर्की भाषा में है। अब्दुल रहीम खाने खाना ने अकबर के कहने पर इसका फारसी में अनुवाद किया। इसकी फारसी अनुवाद ही बाबर-नामा कहलाता है।

- बाबर के 4 पुत्र थे। जिसमें सबसे बड़ा पुत्र हुमायूं था। बाबर अपने जीवन काल में ही चिश्ती को अपना उत्तराधिकारी बनाया था।

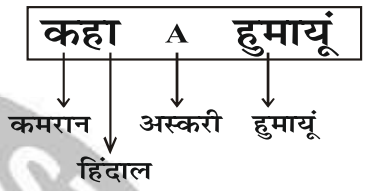

नसीरूद्दीन मोहम्मद चिश्ती (1530–1556 ई.)

- हुमायूं का जन्म काबुल में माहम वेगम के गर्भ से हुआ था। हुमायूं का अर्थ होता है– **भाग्यवान**
- यह बाबर के 4 बेटों में से सबसे बड़ा पुत्र था।

- बाबर के कहने पर हुमायूं ने अपने राज्य को 4 भाइयों में बांट दिया था कामरान को काबुल एवं कंधार, अस्करी को संभल तथा हिन्दाल को मेवात (अलवर) की जागीर दी तथा चचेरे भाई सुलेमान मिर्जा को बदख्शाँ राज्य प्रदान की। जो हुमायूं की सबसे बड़ी भूल साबित हुआ।

➢ **चिश्ती के लिए चुनौती–**

1. राज्य का बँटवारा
2. धन की कमी
3. राजपूत का विरोध
4. अफगान

- बाबर ने अफगान शासकों का पूर्णत: सफाया नहीं किया था, जिस कारण अफगान शासक हुमायूं के लिए सबसे बड़ा खतरा बनने लगे।
- हुमायूं का राज्याभिषेक 1530 ई. में हुआ। यह शासक बनने से पूर्व बदख्शाँ (अफगान) का सुबेदार था।
- हुमायूं का प्रारम्भिक शासन शांतिपूर्ण था। किन्तु हुमायूं के ही प्रमुख विरोधी थे-एक गुजरात का शासक बहादुर शाह तथा एक बिहार का शासक शेरशाह सूरी।
- हुमायूं ने सर्वप्रथम पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर के साथ हिस्सा लिया था, यह उसके जीवन का प्रथम युद्ध था।
- चितौड़ की रानी, कर्णवाही ने गुजरात के शासक बहादुर शाह के अत्याचार से बचने के लिए हुमायूं से मदद मांगी और भेंट स्वरूप उसे राखी दिया।

- हुमायूं कर्णवाही की रक्षा के लिए सेना लेकर चल दिया किन्तु कालींजर के शासक प्रताप रूद्र देव से हुमायूं का युद्ध हो गया और हुमायूं के पहुँचने में देर हो गयी तब तक कर्णवाही जौहर कर चुकी थी।
- हुमायूं बहादुर शाह को पराजित करने के लिए 1531 ई. में सर्वप्रथम कालिंजर अभियान किया।
- कालिंजर अभियान हुमायूं का शासक बनने के बाद पहला अभियान था।
- हुमायूं का अफगानों के विरूद्ध पहला अभियान 1532 ई. में दोहरिया (दौरा) का अभियान था। जिसमें हुमायूं विजयी रहा।
- 1538 ई. में हुमायूं ने गौड़ (बंगाल) अभियान किया। इसने बंगाल का नाम जन्नताबाद रखा।
- बंगाल अभियान से लौटते समय उसकी सेना पर शेरशाह सूरी ने 1539 ई. में अचानक चुनार की किला के पास चौसा नामक स्थान पर हुमायूं पर आक्रमण कर दिया। हुमायूं की सेना में भगदड़ मच गयी और पराजय की स्थिति में हुमायूं घोड़ा सहित गंगा नदी में कुद गया। हुमायूं की जान शिहावुद्दीन निजाम नामक भिस्ती (मल्लाह) ने बचायी इसी कारण उसने शिहावुद्दीन निजाम को एक दिन के लिए दिल्ली का शासक बनाया। इसी ने अपने एक दिन के कार्यकाल में चमड़े का सिक्का चलाया।
- इसकी जानकारी हुमायुनामा नामक पुस्तक से मिलती है। जिसकी रचना हुमायूं की बहन गुलबदन बेगम ने किया। यह पुस्तक दो भागों में हैं-प्रथम भाग में बाबार तथा द्वितीय भाग में हुमायूं की चर्चा है।
- यह मुगलकाल की एक मात्र पुस्तक है जिसकी रचना किसी महिला ने की।
- 1540 ई. में शेरशाह सूरी ने बिलग्राम (कन्नौज) के युद्ध में हुमायूं को हराया और उसे भारत छोड़ने पर विवश कर दिया और 1540 ई. में शेरशाह सूरी ने खुद को दिल्ली का शासक घोषित कर दिया।
- भारत से निष्कासन के दौरान हुमायूं ने अपनी गर्भवती पत्नी हमिदा बानों बेगम को अमरकोट (पंजाब) के राजा वीरसाल के दरबार में छोडकर चला गया।
- इन्हीं के दरबार में 15 अक्टूबर, 1542 ई. को अकबर का जन्म हुआ।
- निर्वासन के दौरान हुमायूं काबुल में रहा। हुमायूं ने पुन: 1545 ई. में ईरान के शासक की सहायता से कंधार एवं काबुल पर अधिकार कर लिया।
- 1553 ई. में शेरशाह के उत्तराधिकारी इस्लामशाह की मृत्यु के बाद अफगान साम्राज्य विघटित होने लगा अत: ऐसी स्थिति में हुमायूं को पुन: अपने राज्य प्राप्ति का अवसर मिला।
- 1555 ई. में लुधियाना के समीप मच्छीवाड़ा के युद्ध में हुमायूं ने अफगान सरदार हैवत खान तथा तातार खान को पराजित करके पंजाब जीत लिया।
- 1555 ई. में ही सरहिन्द के युद्ध (चण्डीगढ़) में हुमायूं के सेनापति बैरमखान ने अफगान सेनापति सिकन्दरशाह शूर को पराजित कर दिया।
- सरहिंद विजय के पश्चात 1555 ई. में एक बार पुन: दिल्ली के तख्त पर हुमायूं को बैठने का सौभाग्य मिला।
- हुमायूं ने दिल्ली में दिन पनाह नामक पुस्कालय बनवाया था। इसी पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिर कर हुमायूं की मृत्यु 1556 ई. में हो गयी।
- हुमायूं अफिम के सेबन का आदि था। यह ज्योतिष विद्या में विश्वास रखता था जिस कारण सप्ताह के प्रत्येक दिन अलग-अलग रंग के वस्त्र पहनता था।
- हुमायूं के दरबार में दो प्रमुख चित्रकार-मीर सैय्यद अली तथा अब्दुल समद रहते थे।
- लेनलपुल ने लिखा है हुमायूं का अर्थ होता है खुशनसीब व्यक्ति लेकिन हुमायूं जीवन भर लड़खड़ाते रहा और लड़खड़ाते हुए ही उसकी मृत्यु हो गयी।
- हुमायूं की कब्र ईरानी संस्कृति से प्रभावित है, जिसका वास्तुकार मिर्जा ग्यास बेग था। यह उसकी पत्नी हमीदा बानो बेगम की हुमायूं को अमूल्य भेंट थी। यह मकबरा दिल्ली में स्थित है।

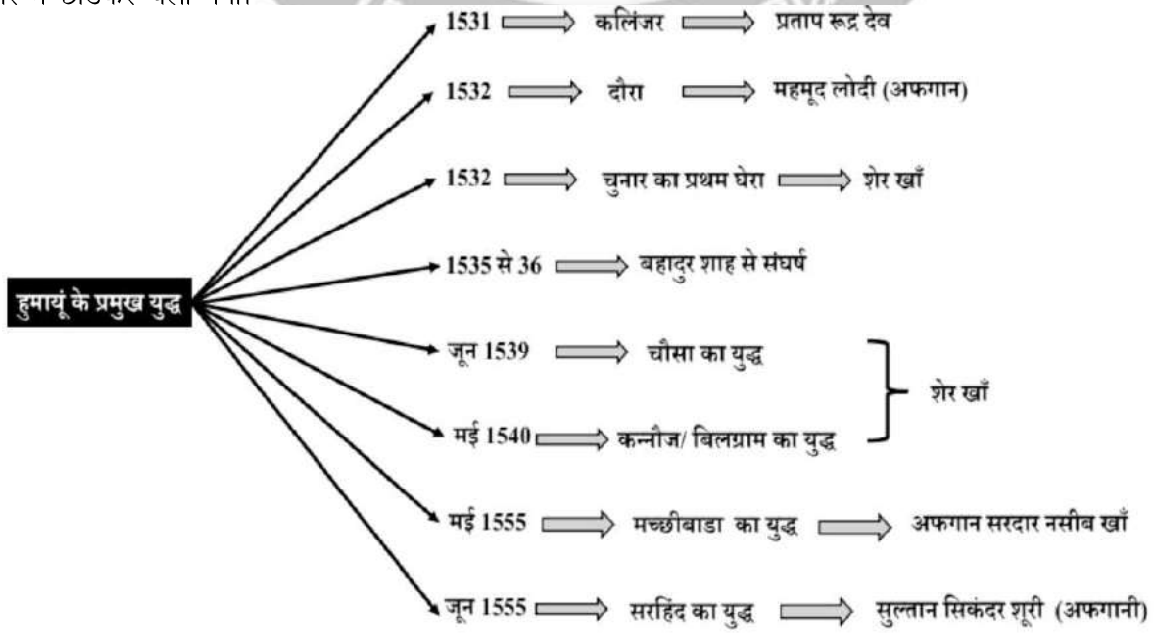

शेरशाह सूरी (1540–1545)

➢ **शेरशाह → इस्लामशाह → फीरोज शाह → मोहम्मद शाह**

- शेरशाह सूरी का बचपन का नाम फरीद खान था। इसके पिता हसन अली थे, जो बिहार के जागीरदार थे और बहलोल लोदी के दरबार में कार्यरत थे।
- हसन अली के मृत्यु के बाद शेरशाह सूरी बिहार के नुमानी शासकों के दरबार में काम करने लगा।
- बहार अली नुमानी ने ही फरीद को शेरशाह सूरी की उपाधि दिया।
- शेरशाह सूरी द्वितीय अफगान वंश का संस्थापक कहा जाता है।
- शेरशाह सूरी ने जिस वंश की स्थापना किया उसे सूर वंश कहते हैं। सूर वंश की जानकारी अब्बास खान शेरखानी की रचना तौफा-ए-अकबरशाही से मिलती है।
- शेरशाह सूरी को मध्यकाल में एक प्रबल प्रशासक के रूप में देखा जाता है।
- 1538 ई. के बंगाल अभियान के बाद हुमायूं जब लौट रहा था तो 1539 ई. में चौसा नामक स्थान पर शेरशाह ने आक्रमण कर दिया और हुमायूं को पराजित किया। 1540 ई. के विलग्राम (कन्नौज) के युद्ध में हुमायूं को भारत छोड़ने के लिए विवश कर दिया और 1540 ई. में दिल्ली का शासक बन गया।
- इसने हजरत-ए-आला की उपाधि धारण किया।
- 1541 ई. में शेरशाह का गक्खर जाति के लोगों से युद्ध हुआ, जिसमें शेरशाह उनकी शक्ति को खत्म तो न कर सका पर उनकी रोकथाम के लिए उसने पश्चिमोत्तर सीमा पर रोहतासगढ़ के किले का निर्माण करवाया। गक्खर लोग अपनी वीरता एवं साहस हेतु प्रसिद्ध थे एवं लूटपाट करते थे।
- शेरशाह ने 1542 ई. में मालवा पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया।
- 1543 ई. में शेरशाह ने रायसीन पर आक्रमण किया। माना जाता है कि शेरशाह ने इस अभियान में धोखे से राजपूत शासक पूरनमल को मार डाला। पूरनमल की मृत्यु के बाद राजपूत स्त्रियों ने जौहर कर लिया। रायसीन की यह घटना शेरशाह के चरित्र पर एक कलंक माना जाता है।
- 1544 ई. में शेरशाह सूरी ने मेवाड अभियान किया और यहां के शासक मालदेव को पराजित किया। मेवाड़ विजय कठिन होने के कारण शेरशाह सूरी ने कहा कि मैं एक मुट्ठी बाजरे के लिए पूरे भारत को खो चुका था।
- 1545 ई. में शेरशाह सूरी ने कलिंजर अभियान किया। यह अभियान एक दासी (Dancer) के लिए था। इस समय यहाँ के राजा कीरत सिंह थे। इस अभियान के दौरान शेरशाह सूरी के सेना द्वारा छोड़े गये तोप का गोला कलिंजर की किला से टकराकर वापस शेरशाह-सूरी के समीप आ गिरा। जिससे शेरशाह सूरी की मृत्यु हो गयी। कलिंजर का वर्तमान नाम महोबा है। यह मध्यप्रदेश में है। शेरशाह सूरी को सासाराम में दफनाया गया।

- शेरशाह का मकबरा सासाराम में है। कनिंघम ने शेरशाह के मकबरे को ताजमहल से भी सुंदर कहा है।
- इसका बेटा इस्लामशाह योग्य था किन्तु 1553 ई. में आकस्मिक मृत्यु हो गयी।
- इसके बाद फिरोजशाह शासक बना जिसे उसके मामा (मुबारिज खान) ने मरवा दिया।
- शेरशाह सूरी के बाद कोई भी योग्य शासक नहीं बना और इस वंश का अंतिम शासक सिकन्दर शाह सूरी था।

शेरशाह सूरी का प्रशासनिक व्यवस्था

- शेरशाह सूरी एक प्रबल प्रशासक था इसने बहुत से सुधार किये। इन सारे सुधार को अकबर ने भी अपनाया था। इसी कारण शेरशाह सूरी को अकबर का पथ प्रदर्शक (रास्ता दिखाने वाला) या अकबर का पूर्वगामी शासक कहा जाता है।
- टोडरमल शेरशाह सूरी के दरबार में भी सेवा दे चुके थे।
- शेरशाह सूरी ने पाटलीपुत्र का नाम बदलकर पटना रखा था।
- इसने Grand Trank (G.T.) Road का निर्माण करवाया।
- इसने किसानों से सीधा सम्पर्क स्थापित करने के लिए रैय्यतवाड़ी व्यवस्था शुरु किया। यह किसानों को रैय्यत कहकर बुलाता था।
- कर की चोरी न हो इसलिए उसने भूमि की नाप करवायी इस व्यवस्था को जब्ती व्यवस्था कहा गया।
- इसने पट्टा एवं कबुलियत नामक नयी व्यवस्था शुरु की। पट्टा पर कर का विवरण रहता था कि कितना कर लिया जाएगा और किस समय लिया जाएगा।
- कबुलियत वह दस्तावेज था जिस पर किसान इस बात की सहमति देता था कि वह पट्टा में दिये गए कर को देन में सहमत है।
- भूमि की माप कराने के लिए जरीबान नामक कर लिया जाता था, जो किसान भूमि का माप नहीं कराता था उससे मुहाबिलाना नामक कर लिया जाता था।
- शेरशाह सूरी के समय जौनपुर शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र था। इसे भारत का शिराज (सर का ताज) कहा जाता था।
- शेरशाह सूरी ने सोने का जो सिक्का चलाया उसे **असर्फी** या **मोहरा कहा** गया है। शेरशाह सूरी ने जो चांदी का सिक्का चलाया उसे **रुपया** कहा गया। इसके तांबे के सिक्का को दाम कहा जाता था। शेरशाह के शासनकाल में चांदी के रुपये एवं तांबे के दाम का अनुपात 1 : 64 था।

- इसने भूमि की जांच करने के लिए एक कानूनगो नामक अधिकारी की नियुक्ति किया।
- इसने दिल्ली में किला-ए-कुहना नमक मस्जिद का निर्माण कराया। इसे ही पुराना किला के नाम से जाना जाता हैं।
- इतिहासकार कहते हैं कि शेरशाह सूरी के समय यदि कोई औरत आधी रात को सोना लेकर जाती है, तो कोई भी व्यक्ति उसके सोना को छुने की हिम्मत नहीं कर सकता है।
- यह इस बात की ओर इशारा करता है कि शेरशाह सूरी के समय पुलिस व्यवस्था बहुत अच्छी थी।
- इसके कठोर न्याय तथा दण्ड व्यवस्था के कारण अपराध बहुत कम होते थे।
- शरेशाह के समक्ष अमीर-गरीब, मित्र, दुश्मन सभी एक समान होते थे।

जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर (1556-1605 ई.)

- अकबर का जन्म 15 अक्टूबर, 1542 ई. को अमरकोट के राजा वीरसाल के महल में हुआ थ। अकबर की मां हमिदा बानो बेगम थी। इसकी धाय माँ माहम अनंगा थी।
- अकबर को बचन में अस्करी ने पाला और फिर काबुल में कामरान के पास भेज दिया (1547 ई. से अकबर हुमायूं के साथ रहने लगा)।
- अकबर की प्रथम पत्नी हिंदाल की पुत्री रूकैया थी।
- 1555 ई. में हुमायूं जब भारत पर पुन: आक्रमण किया और मच्छीवाड़ा का युद्ध लड़ा। इस युद्ध में हुमायूं के साथ अकबर भी भाग लिया। यह युद्ध अकबर के जीवन का पहला युद्ध था।
- 1555 ई. में हुमायूं ने अकबर को अपना उत्तराधिकारी बनाकर लाहौर का सूबेदार बनाया।
- 1556 ई. में जब हुमायूं की मृत्यु हुई तब अकबर पंजाब का सूवेदार सिकंदर सुर से युद्ध कर रहा था। (17 दिन तक हुमायूं की मृत्यु को गुप्त रखा गया)।
- 14 फरवरी, 1556 ई. को पंजाब के कालानौर (गुरुदासपुर) में मिर्जा अब्बुल कासिम ने अकबर का राज्याभिषेक कराया।
- राज्याभिषेक के समय अकबर अल्पायु था अत: वैरम खान को अकबर का संरक्षक नियुक्त कर दिया गया।

- वैरन खान अकबर को लेकर आगरा की ओर बढ़ा किन्तु इससे पहले ही आदिल शाह सूरी का सेनापति हेमू आगरा पर अधिकार कर लिया। साथ ही साथ हेमू ने दिल्ली पर भी अधिकार कर लिया। हेमू दिल्ली का एक बनिया था जिसने विक्रमादित्य का उपाधि धारण किया था।
- आदिलशाह ने हेमू को विक्रादित्य की उपाधि प्रदान की थी।
- हेम विक्रमात्यि की उपाधि धारण करने वाला 14वाँ और अंतिम शासक था साथ ही दिल्ली की गद्दी पर बैठने वाला अंतिम हिन्दू सम्राट था।
- दिल्ली में मुगल सेनापति तरवीवेग ने वैरम खां को भारत छोड़ने की सलाह दिया जिस कारण वैरम खान ने उसकी हत्या कर दी।
- 1556 ई. के पानीपत के द्वितीय युद्ध में अकबर के सेना का नेतृत्व वैरम खान ने किया और इस युद्ध में वैरम खान ने हेमू को पराजित कर दिया।
- यह युद्ध अकबर का शासक बनने के बाद पहला युद्ध था।
- अकबर ने वैरम खान के संरक्षण में शासन आरम्भ किया जिस कारण वैरम खां अत्यधिक प्रसिद्ध हो गया।
- वैरम खान की ईमानदारी को देखकर अकबर ने उसे खान-ए-खाना की उपाधि से सम्मानित किया।
- बैरम खान शिया था। जबकि दिल्ली की अधिकांश जनता सुन्नि था। यही विवाद आगे चलकर युद्ध का रूप लिया और तिलवाड़ा का युद्ध 1560 ई. में अकबर ने वैरम खान को हरा दिया और वैरम खां के आगे दो प्रस्ताव रखा–
  1. वैरम खा या तो दूर के किसी सूवा (राज्य) के सूवेदार बन जाए।
  2. या तो हज यात्रा पर चले जाएं।
- वैरम खान ने हज यात्रा को चुना। हज पर जाते समय गुजरात के मुबारक खां नामक व्यक्ति ने गुजरात के पाटन नामक स्थान पर वैरम खां की हत्या कर दी।
- वैरम खां का बेटा अब्दुल रहीम था तथा उसकी पत्नी सलीमा बेगम थी। अकबर ने सलीमा बेगम से शादी कर ली।
- 1560 ई. में अकबर जैसे ही वैरम खां के संरक्षक से मुक्त हुआ तो अपनी धाय माँ माहम अनगा के प्रभाव में आ गया और दो वर्षों तक उसके प्रभाव मे रहा। इस दो वर्ष के शासन को पेटीकोट शासन, पर्दा प्रथा का शासन, हरम दल का शासन या अतका खेल का शासन कहा गया।

अकबर की धार्मिक नीति

- 1562 ई. में अकबर हरम दल के प्रभाव से मुक्त हो गया।
- अकबर ने 1562 ई. में दास प्रथा का अन्त, 1563 ई. में तीर्थ यात्रा कर का अन्त तथा 1564 में जजिया कर का अन्त कर दिया गया।
- 1571 ई. में अकबर ने फतेहपुर सिकरी शहर की स्थापना किया। 1575 ई. में अकबर ने इबादत खाना की स्थापना फतेहपुर सिकरी में किया। इस इबादतखाना में सभी धर्मों के लोग बृहस्पतिवार के दिन इकठ्ठा होते थे और अपने अपने धर्म की विशेषता का उल्लेख करते थे। किन्तु बहुत ही जल्द यह इबादतखाना को बन्द करना पड़ा क्योंकि यहां मारपीट शुरु हो जाती थी। अकबर के इस नीति को सुलह-ए-कुल की नीति कहा गया।

- 1578 ई. में सभी धर्मों के लोगों के लिए इबादत खाना में प्रवेश का द्वार खोल दिया गया।
- 1579 ई. में अकबर ने मजहर की घोषणा की। इसके तहत धार्मिक मामले में अकबर सर्वोपरि हो गया। मजहर के तहत अकबर ने धार्मिक एकाधिकार प्राप्त कर लिया। धार्मिक विवादों को राजा हल करेगा किन्तु कुरान पर राजा का कोई अधिकार नहीं होगा।
- 1582 ई. में अकबर ने दीन-ए-इलाही नामक एक नया धर्म चलाया। यह धर्म मानने के लिए कोई बाध्य नहीं था। यह लोगों की इच्छा पर था।
- दीन-ए-इलाही धर्म को मानने वाला एक मात्र हिन्दू महेशदास (बीरबल) था।
- दीन-ए-इलाही धर्म का प्रधान पुरोहित (पंडित) अबुल फजल था। उनके धार्मिक गुरु अब्दुल लतीफ था।
- 1583 ई. में अकबर ने हिजरी संवत के जगह एक नया कैलेंडर इलाही संवत जारी किया।
- अकबर ने अमीर-उल-मोमिनी की उपाधि धारण किया जो केवल खलीफा धारण करते थे।
- अकबर के दरबार में हिन्दू धर्म के विद्वान पुरुषोत्तम तथा कुम्भनदास रहते थे।
- पारसी धर्म के विद्वान दस्तूर मेहर जी राणा रहते थे। इन्हीं से अकबर ने सूर्य नमस्कार सीखा था।
- इसाई धर्म के एकाबीबी रहते थे।
- अकबर के दरबार में जैन विद्वान हरिविजय सूरी को जगत गुरु तथा जिनचन्द्र सुरी को युग प्रधान की उपाधि दिया था।
- अकबर ने चौथे सिख गुरु राम दास को अमृतशहर की स्थापना के लिए 500 बिघा जमीन दान दिया।
- अकबर ने पारसी धर्म के पुरोहित दस्तूर मेहरजी राणा को जीवन निर्वाह के लिए 200 बीघा जमीन दी थी।
- अकबर के समकालिन सूफी सन्त शेख सलीम चिश्ती थे। अकबर इनसे सर्वाधिक प्रभावित हुआ था इसी कारण अकबर ने अपने बेटे का नाम सलीम रखा। जो आगे जाकर जहांगीर के नाम से जाना गया।
- शेख सलीम चिश्ती का मकबरा फतेहपुर सिकरी में है। फतेहपुर सिकरी शहर का वास्तुकार वहाउद्दीन थे।

मुद्रा प्रणाली

- अकबर ने राम-सीता प्रकार के सिक्के चलाए। अकबर ने रुपया तथा दाम सिक्को को भी निरन्तर जारी रखा।
- 1 रुपया (अकबर) = 40 दाम
- 1 रुपया (शेरशाह) = 64 दाम
- अकबर के समय वृत्ताकार सिक्का ''इलाही'' तथा आयताकार सिक्का ''जलाली'' कहलाता था।
- 1 इलाही = 10 रुपया

अकबर के समय भू-राजस्व व्यवस्था

➢ **जब्ती प्रणाली**

- भूमि के माप (आकार) के आधार पर लगान (Tax) निर्धारण व्यवस्था को जब्ती प्रणाली कहते हैं।

➢ **कनकूट प्रणाली**

- ऊपज को ध्यान में रखकर लगान (Tax) निर्धारण व्यवस्था को कनकूट व्यवस्था कहते हैं।

➢ **आईन-ए-दहसाला**

- दस वर्षों के औसत ऊपज को आधार मानकर लगान (Tax) का निर्धारण आइन-ए-दहसाला कहलाता है। यह लगान निर्धारण की एक औसत प्रणाली है। इसका श्रेय टोडरमल को जाता है।

Note :- भू-राजस्व को खराज भी कहते थे यह ऊपज का 1/2 भाग (50%) से 1/3 भाग (33%) तक रहता था।

➢ **अकबर ने भूमि को ऊपज के आधार पर चार श्रेणी में बाँटा था-**

1. पोलज भूमि — प्रतिवर्ष खेती
2. परती भूमि — एक वर्ष अंतराल पर खेती
3. चाचर भूमि — चार वर्ष अंतराल पर खेती
4. बंजर भूमि — यहाँ खेती नहीं होती थी

➢ **अकबर ने लगान वसूली के आधार पर भूमि को चार श्रेणी में बाँटा-**

1. खालसा भूमि- यह सरकारी भूमि होती थी।
2. जागीर भूमि- यह मनसबदार को दी गई भूमि थी।
3. पैबाकी भूमि- यह सरकार के अधीन रहती थी इसके द्वारा जागीरदारों के घाटे की पूर्ति की जाती थी।
4. मददमाश भूमि- यह दान में दी जाती थी।

अकबर के नवरत्न

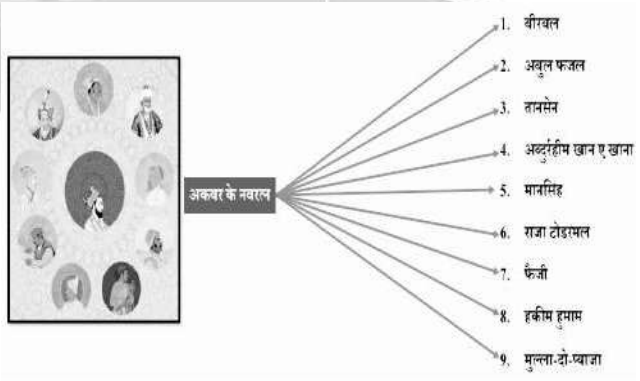

- अकबर के दरबार में विभिन्न क्षेत्र के 9 विद्वान रहते थे जिन्हें नवरत्न कहा जाता है।

1. बीरबल

☛ इसका असली नाम महेश दास था। यह दिन-ए-इलाही को मानने वाले एक मात्र हिन्दू (राजपूत) थे। यह अकबर के प्रधान सलाहकार थे। इनकी मृत्यु 1586 ई. में कश्मीर के युसूफ जाई के विद्रोह को दबाते समय हो गयी। अकबर ने इन्हें कविराज व राजा की उपाधि प्रदान किया था।

2. तानसेन

☛ यह अकबर के दरबार में सबसे प्रसिद्ध संगीतकार थे। इनका जन्म ग्वालियर में हुआ। इनका मूल नाम (असली नाम) राम तनु पाण्डेय था। इनकी प्रमुख रचना मिया का टोपी, मियां का सारंग, मियां का मल्हार, दरबारी कन्हरा था। अकबर ने इन्हें कण्ठा भरण वाणी विलास की उपाधि दी थी।

3. मानसिंह

☛ यह आमेर के राजा भारमल का पोता, भगवानदास का बेटा था। अकबर ने सर्वाधिक युद्ध इसी के नेतृत्व में जीता। अकबर ने इन्हें 'अमीर-उल-उमरा' की उपाधि दी थी।

4. टोडरमल

☛ यह अकबर के दरबार में भूमि तथा राजस्व सुधारक थे। इन्होंने राजस्व के क्षेत्र में एक नई व्यवस्था आईने दहशाला लेकर आये। राजा टोडरमल अकबर से पहले शेरशाह के दरबार में कार्यरत थे।

5. अबुल फजल

☛ यह दिन-ए-इलाही धर्म का मुख्य पुरोहित था। इसने अकबरनामा तथा आइन-ए-अकबरी पुस्तक लिखा। जिसमें अकबर की चर्चा है। यह पुस्तक सात साल में लिखी गयी। इस पुस्तक के 3 भाग है। तीसरा भाग आइने अकबरी कहलाता है। जो खुद अबुल फजल की आत्मकथा है। 1602 ई. में वीर सिंह बुन्देला ने जहांगीर के कहने पर इनकी हत्या कर दी। जब वो दक्षिण से आगरा की ओर आ रहे थे।

6. फैजी

☛ अबूल फजल के बड़े भाई थे जो कवि के पद पर थे। इन्होंने गीता तथा लीलावती पुस्तक का फारसी अनुवाद किया।

7. अब्दुल रहीम खान-ए-खाना

☛ यह वैरम खां का पुत्र था। अकबर ने इसे अनुवाद विभाग का प्रधान बनाया। इसने बाबर की आत्मकथा तुजुक-ए-बाबरी का फारसी में अनुवाद किया और इसी अनुवादित पुस्तक का नाम बाबरनामा है।

8. मुल्ला-दो-प्याजा

☛ यह अरब का रहने वाला था जो प्रमुख व्यंगकार (मजाकिया) था। इसे भोजन के साथ दो प्याज खाने की आदत थी।

9. हकीम हुकाम

☛ यह अकबर के दरबार में बावर्ची के पद पर थे।

Remark :- तुलसीदास अकबर के समकालीन थे। अकबार के कहने के बाद भी वे नवरत्न में शामिल नहीं हुए।

मनसबदारी व्यवस्था

☛ यह अकबर की सैन्य तथा प्रशासनिक व्यवस्था थी।

☛ मनसबदार को पैदल सैनिक (जाट) तथा घुड़सवार (सवार) रखने होते थे। जिसके बदले में अकबर मनसबदारों को वेतन देता था।

☛ पैदल सैनिक (जाट) का वेतन प्रतिमाह = 3 रु

☛ घुड़सवार सैनिक (सवार) का वेतन प्रतिमाह = 20 kg अनाज

☛ मनसबदार 3 श्रेणी के होते थे।

A. प्रथम श्रेणी — 12000 सैनिक
B. द्वितीय श्रेणी — 7000 सैनिक
C. तृतीय श्रेणी — 10 – 20 सैनिक

☛ मनसबदारी की संख्या वास्तविक सैनिकों की संख्या से भिन्न रहती थी।

☛ 1573-74 ई. में गुजरात विजय के बाद मनसबदारी प्रथा आरंभ की गई।

☛ अकबर का संपूर्ण सम्राज्य 12 सूबों में विभक्त था तथा दक्षिण विजय के बाद संख्या 15 हो गई।

☛ युद्ध के समय सभी मनसबदार अपनी सेना लेकर आते थे। सर्वाधिक हिन्दु मनसबदार औरंगजेब के पास थे।

अकबर की राजपूत नीति

☛ अकबर की राजपूत नीति ''दमन और समझौते'' की नीति थी।

☛ राजपूत नीति के तहत अकबर राजपूत राजाओं की सहानुभूति प्राप्त करना चाहता था।

☛ अकबर ने राजपूत राजाओं को जागीरदार तथा पैतृक जागीर भूमि पर शासन का अधिकार दिया और उनके राजा का पद भी बना रहा तथा खुद को अकबर सम्राट कहता था। किन्तु अकबर ने उन्हें स्वयं के सिक्के चलाने का अधिकार छीन लिया और उनके क्षेत्र में मुगलशाही सिक्का का प्रचलन करवाया।

अकबर का सैन्य अभियान

☛ अकबर ने सर्वप्रथम 1559 ई. में ग्वालियर अभियान किया।

☛ 1560 ई. में अकबर ने जौनपुर अभियान किया।

☛ 1561 ई. में चुनार तथा मालवा अभियान किया तथा इसे जीतकर मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

☛ इस समय मालवा का शासक बाजबहादुर था तथा इस अभियान का नेतृत्व माहम अनंगा के पुत्र अधम खाँ ने किया।

☛ 1562 ई. में आमेर पर आक्रमण किया। आमेर की राजधानी जयपुर थी और आमेर के राजा भारमल (कछवाहा राजपूत) थे।

- राजा भारमल एक मात्र राजपुत राजा थे जिन्होंने अकबर की अधीनता स्वेच्छा से स्वीकार किया और अपनी बेटी जोधाबाई (हरखू बाई) का विवाह अकबर से करा दिया। वे अपने बेटे भगवान दास तथा पोता मान सिंह को अकबर की सेवा में भेजा। अकबर ने जोधाबाई को मरियम-उज्ज-जमानि की उपाधि दिया।
- गोंडवाना (मध्यप्रदेश) की रानी दुर्गावती (संग्राम सिंह की विधवा) ने कभी भी अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं किया। यह एक मात्र महिला थी जिसने अकबर का सर्वाधिक विरोध किया।
- 1564 ई. में आसफ खां ने रानी दुर्गावती को पराजित कर दिया। अंतत: गोंडवाना (मध्यप्रदेश) पर अकबर का अधिकार हो गया।
- 1567 ई. में अकबर ने मेवाड़ अभियान किया। इस समय मेवाड की राजधानी चित्तौड़गढ़ थी और वहां के राजा उदय सिंह थे।
- मेवाड अभियान पूरा होने से पहले ही अकबर लौट गया। पुन: अकबर ने 1576 ई. में मेवाड अभियान किया और हल्दीघाटी के युद्ध में उदय सिंह के पुत्र महाराणा प्रताप को पराजित कर दिया। इस युद्ध में अकबर की सेनापति मानसिंह थे। जबकि महाराणा प्रताप का सेनापति हकीम खान शूर थे।
- प्रारम्भ में युद्ध महाराणा प्रताप जीत रहे थे किन्तु यह अपवाह फैलाया गया कि अकबर भी युद्ध में शामिल हो गया। जिससे मुगल सेना का मनोबल बढ़ गया। इसके बाद महाराणा प्रताप जंगल में भाग गए और इस प्रकार मेवाड़ अभियान अधूरा रह गया।
- धीरे-धीरे महाराणा प्रताप ने पुन: अपने अधिकांश क्षेत्र पर अधिकार कर लिया।
- 1572 ई. में अकबर ने गुजरात अभियान किया। इसी समय अकबर ने पहली बार समुद्र (खम्भात की खाड़ी) को देखा था। यहीं पर अकबर पुर्तगालियों से भी मिला था।
- अकबर ने जब गुजरात को हराकर वापस लौटा तो गुजरात के शासकों ने अकबर की अधिनता मानने से अस्वीकार कर दिया। इसी कारण अकबर ने पुन: 1573 ई. में गुजरात अभियान किया। यह अकबर का सबसे द्रुतगामी (9 दिन) अभियान था। इसी गुजरात विजय के उपलक्ष्य में अकबर ने फतेहपुर सिकरी में बुलन्द दरवाजा का निर्माण करवाया था।
- बिहार एवं बंगाल के शासक दाऊद खाँ ने पटना के मुगल किले पर 1574 ई. में आक्रमण किया था।
- अकबर ने सम्पूर्ण बिहार तथा बंगाल को मुगल साम्राज्य में 1576 ई. में मिला लिया।
- अकबर ने 1581 ई. में काबुल अभियान, 1586 ई. में कश्मीर अभियान किया और इसे जीत लिया।
- कश्मीर के यूसूफजाई कबीले के विद्रोह में ही बीरबल की मृत्यु हो गयी।
- 1595 ई. में कंधार तथा बलुचिस्तान को भी जीत लिया।

दक्षिण भारत अभियान

- अकबर ने दक्षिण भारत विजय के लिए अब्दुल रहीम और उसके पुत्र मुराद के नेतृत्व में सेना भेजा।
- अकबर दक्षिण भारत अभियान करने वाला पहला मुगल शासक था।
- अकबर ने पूरी तरह से दक्षिण भारत को नहीं जीता था।

➢ **दक्षिण भारत के 4 प्रमुख राज्य थे–**

1. खानदेश
2. अहमदनगर
3. बीजापुर
4. गोलकुण्डा

- खानदेश को दक्षिण भारत का प्रवेश द्वार कहते थे। खानदेश ने स्वत: अकबर की अधीनता स्वीकार कर लिया।
- अकबर ने अहमदनगर की शासिका चांद बीबी से युद्ध करके उससे बरार तथा अमदनगर का क्षेत्र जीत लिया।
- बीजापुर के शासक ने भी अकबर की अधीनता स्वीकार कर लिया।
- 1601 ई. में खान देश ने विद्रोह कर दिया जिसे असीरगढ़ के युद्ध में अकबर ने विद्रोह समाप्त कर दिया। यह युद्ध अकबर ने रिश्वत देकर जीता था। असीरगढ़ का युद्ध अकबर के जीवन का अंतिम युद्ध था।
- इस प्रकार असीरगढ़, बीजापुर, अहमदनगर, खानदेश तथा बरार पर मुगलों का अधिकार हो गया।
- 1602 ई. में जहांगीर ने अपने पिता के विरुद्ध इलाहाबाद में विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह को दबाने के लिए अकबर ने अबुल फजल को भेजा। किन्तु जहांगीर के कहने पर वीर सिंह बुन्देला ने इनकी हत्या कर दी।
- 1605 ई. में डायरिया के कारण अकबर की मृत्यु हो गयी।

Remark :– अकबर के गुरु अब्दुल लतीफ थे जो एक योग्य व्यक्ति थे किन्तु अकबर निरक्षर ही रह गया।

Note :– फिरोज शाह तुगलक (F.S.T.) को सल्तनत काल का अकबर कहा जाता है।

नूरूद्दीन मुहम्मद जहांगीर (1605-1627 ई.)

- जहांगीर का जन्म 30 अगस्त, 1569 ई. को मरियम इजवानि (हरखु बाई/जोधाबाई) के गर्भ से हुआ। इसके बचपन का नाम सलीम था। मानबाई तथा जगत गोसाईं इसकी प्रारम्भ में दो पत्नीयां थी। जगत गोसाईं जहांगीर की अत्यधिक शराब पीने से अप्रसन्न थी जिस कारण इसने आत्महत्या कर ली।

- जहांगीर ने आगरा के किले में न्याय के लिए सोने की जंजीर टंगवायी थी जिसमें 12 घण्टियां थी। जहांगीर न्याय के लिए प्रसिद्ध था। इसने अपराधी के नाक-कान काटने और घर कुर्की करने का आदेश दिया था।
- जहांगीर ने मद्यपान (नशा) पर रोक लगा दिया।
- इसने रविवार एवं बृहस्पतिवार को पशु हत्या पर रोक लगा दिया, क्योंकि रविवार को अकबर का जन्म दिन था जबकि बृहस्पतिवार को अपना राज्याभिषेक कराया था। किन्तु इस दिन यदि बकरीद का दिन हो तो पशु हत्या कर सकते थे।
- 1606 ई. ये जहांगीर का बेटा खुसरो ने मानसिंह के साथ मिलकर जहांगीर के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह में 5वें गुरु अर्जुन देव ने खुसरो की सहायता किया। जिस कारण जहांगीर ने गुरु अर्जुन देव को फांसी दे दी।
- 1615 ई. में जहांगीर ने चित्तौड़ अभियान किया और यहां के शासक अमर सिंह को पराजीत कर दिया और चित्तौड़ को मुगल साम्राज्य में मिला दिया। इस प्रकार चित्तौड़ अभियान जहांगीर के समय पुरा हुआ।

  Note :- मेवाड़ (चित्तौड़) का पहला अभियान अकबर ने 1567 ई. में किया। उस समय राजा उदयसिंह थे। दूसरा अभियान अकबर ने 1576 ई. में किया। उस समय राजा महाराणा प्रताप थे और अंतिम और तीसरा अभियान जहांगीर ने 1615 ई. में किया। उस समय राजा अमर सिंह थे।
- 1615 ई. में जहांगीर और अमर सिंह के बीच संधि हुआ और अमरसिंह ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर लिया। किंतु आत्म-ग्लानि के कारण अपना सिंहासन अपने पुत्र करनसिंह को सौंपकर स्वयं वनवास धारण कर लिया।
- 1616 ई. में जहांगीर ने अपने बेटा शाहजहां (खुर्रम) को दक्षिण भारत अभियान करने के लिए भेजा। खुर्रम ने बड़ी आसानी से दक्षिण भारत को जीत लिया। उसने अहमदनगर के शासक मलिक अम्बर को युद्ध में हरा दिया। इसी विजय के उपलक्ष में जहांगीर ने खुर्रम को शाहजहां की उपाधि दिया था।

  Note :- मलिक अम्बर ने टोडरमल के भूराजस्व प्रणाली को लागू किया था।
- 1622 ई. में कंधार के शासकों ने मुगल क्षेत्र में रहने से इंकार कर दिया। शाहजहां का काल आते-आते कंधार पूरी तरह भारत से स्वतंत्र हो गया। कंधार को भारत का प्रवेश द्वारा कहा जाता था।
- जहांगीर के शासनकाल को चित्रकला का स्वर्णकाल कहा जाता है।
- जहांगीर ने अपनी आत्मकथा में लिखा कि कोई भी चित्र चाहे वह किसी मृत व्यक्ति या जीवित व्यक्ति द्वारा बनाया गया हो, मैं देखते ही तुरंत बता सकता हूं कि यह किस चित्रकार की कृति है। यदि किसी चेहरे के आंख किसी एक चित्रकार ने, भौंह किसी और ने बनाई हो, तो भी यह जान लेता हूं कि आंख किसने और भौंह किसने बनायी है।
- जहांगीर दूसरा ऐसा विद्वान शासक था जिसने अपनी आत्मकथा स्वयं लिखी। इसकी आत्मकथा का नाम तुजुक-ए-जहांगिरी था जो फारसी भाषा में लिखा गया। किन्तु जहांगीर अपनी आत्मकथा पूरा होने से पहले ही मर गया। जहांगीर की आत्मकथा को मोतविन्द खान ने पूरा किया।
- जहांगीर ने अपनी प्रेयसी (प्रेमिका) अनारकली के लिए 1615 ई. में लाहौर में एक सुंदर कब्र बनवायी और इस पर यह प्रेमपूर्वक अभिलेख लिखवाया कि-"यदि मैं अपनी प्रेयसी का चेहरा एक बार पुन: देख पाता, तो कयामत के दिन तक अल्लाह को धन्यवाद देता।"
- जहांगीर धार्मिक दृष्टि से सहिष्णु था। रक्षाबंधन का त्यौहार मनाया और अपनी कलाई पर राखी बंधवायी। जहांगीर ने दीवाली के दिन जुआ खेलने की इजाजत दे रखी थी।
- जहांगीर ने सूरदास को आश्रय दिया था और उसी के संरक्षण में 'सूरसागर' की रचना हुई।
- जहांगीर ने एक नयी प्रथा चलायी जिसके अनुसार पुरुषों का कान-छिदवाकर मूल्यवान रत्न पहनना फैशन बन गया।
- अशोक के कौशाम्बी अभिलेख तथा समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ती अभिलेख पर जहांगीर ने भी लेख लिखवाया था।

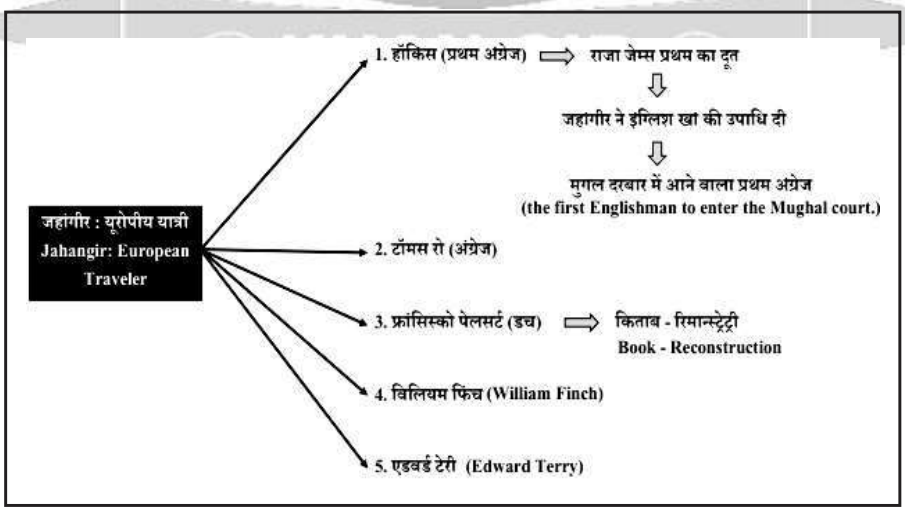

- 1608 ई॰ में इंग्लैंड के राजा जेम्स-I का राजदुत कैप्टन हॉकिन्स जहांगीर के दरबार में व्यापारिक छूट प्राप्त करने के लिए आया किन्तु जहांगीर ने उसे कोई भी छूट नहीं दिया। किन्तु उसकी योग्यता से प्रसन्न होकर उसे English खान की उपाधि दिया। हॉकिन्स के पास अकबर के नाम का पत्र था किन्तु अकबर की मृत्यु हो चुकी थी। हॉकिन्स फारसी में बात करता था।
- 1615 ई॰ में पुन: इंग्लैण्ड के राजा जेम्स-I का राजदूत टॉमस रॉ जहांगीर के दरबार में व्यापारिक छूट प्राप्त करने के लिए आया। पहली बार जहांगीर ने टॉमस रॉ को ही व्यापारिक छूट दिया था।
- जहांगीर के समय ही पुर्तगालियों ने भारत में सर्वप्रथम तम्बाकू की खेती प्रारंभ किया।
- 1627 ई॰ में शाहजहां ने लाहौर में जहांगीर के विरूद्ध विद्रोह कर दिया। उस विद्रोह को दबाने के लिए जहांगीर तथा नूरजहां दोनों लाहौर पहुंचे।
- जहांगीर का सेनापति महावत खान शाहजहां के साथ मिल गया और नूरजहां तथा जहांगीर को कैदी बना लिया गया। किन्तु नूरजहां के प्रयास से वे दोनों जल्दी ही कैद से मुक्त हो गये। इसी वर्ष लाहौर के शहदरा में जहांगीर की मृत्यु हो गयी। यहीं पर जहांगीर का मकबरा है। इस मकबरा को नूरजहां ने बनवाया।

नूरजहाँ

- नूरजहां का असली नाम मेहरुन निशा था।
- नूरजहां अलीकूली वेग (शेर अफगान) की पत्नी विधवा थी। इसे जहांगीर के दरबार में अकबर की विधवा सलीमा बेगम की सेवा के लिए लाया गया था।
- नवरोज त्यौहार के दिन जहांगीर ने पहली बार नूरजहां को देखा और उसकी सुन्दरता को देखकर उसे नूरेमहल की उपाधि दिया। यह पारसी थी।
- 1611 ई॰ में जहांगीर ने उससे विवाह कर लिया और उसे नूरजहां की उपाधि दिया। नूरजहां जहांगीर के साथ झरोखा दर्शन देती थी। ऐसा माना जाता है कि शाही आदेशों पर बादशाह के बाद नूरजहां का भी हस्ताक्षर होता था।
- नूरजहां के भाई का नाम आसफ खां था जिसकी पुत्री अर्जुमंद बानो बेगम (मुमताज महल) से 1612 ई. में शाहजहां का विवाह हुआ। नूरजहां के माता का नाम अस्मत बेगम था। इसी ने पहली बार गुलाब से इत्र निकालने की विधि खोज की थी।
- नूरजहां के पिता का नाम ग्यासबेग था, जिसे जहांगीर ने एतमाउद्दौला की उपधि दिया था।
- नूरजहां ने आगरा में एतमतुद्दौला का मकबरा बनवाया यह भारत में बेदाग सफेद संगमरमर से बनने वाला पहला मकबरा था। इसी में पहली बार इटली की पिएट्रा डोरा शैली का प्रयोग किया गया।

शिहाबुद्दीन मोहम्मद शाहजहां (1627-1657 ई.)

- शाहजहाँ का जन्म 5 जनवरी, 1592 को लाहौर में जगत गोसाई के गर्भ से हुआ था।

- शाहजहां के बचपन का नाम खूर्रम था।
- 1612 ई. में शाहजहाँ का विवाह नूरजहां के भाई आसफ खान की पुत्री अर्जुमन्द बानो बेगम से हुआ जिसे मुमताज कहा जाता था। शाहजहाँ ने इसे मल्लिका-ए-जमानी की उपाधि प्रदान की थी।
- मुमताज के 14 संतान हुए। जिसमें से 7 संतान जीवित थे। इनकी मृत्यु 1631 में 14वें संतान के प्रसव पीड़ा के कारण हुयी।
  1. दारा शिकोह 2. शाहशुजा 3. औरंगजेब 4. मुरादबख्स 5. जाहांआरा 6. रोशन आरा 7. गौहर आरा।
- मुमताज की कब्र पर मुमताज महल बनाया गया इसे ही ताजमहल कहते है।

- ताजमहल के वास्तुकार उस्ताद अहमद लाहौरी थे। जबकि ताजमहल को इशा खां के देख रेख में बनाया गया।
- शाहजहां का संघर्ष पुर्तगालियों से हुआ। शाहजहां ने पुर्तगाली व्यापारिक कोठी हुगली पर अधिकार कर लिया।
- शाहजहां का संघर्ष 6वें सिख गुरु हरगोविन्द के साथ ही शिकार करने के दौरान हुआ था।
- शाहजहां ने दक्षिण भारत अभियान की जिम्मेदारी औरंगजेब को दे दिया और औरंगजेब ने बड़ी ही कुशलता पूर्वक अहमदनगर, बरार, तेलंगना तथा खान देश को जीत लिया। शाहजहां ने औरंगजेब को दक्षिण भारत का सूबेदार बना दिया और औरंगजेब ने अपना केंद्र महाराष्ट्र के औरंगाबाद को बना लिया।
- बुंदेला सरदार जुझार सिंह ने शाहजहां से विद्रोह कर दिया किन्तु शाहजहां ने विद्रोह को दबा दिया।
- अफगान सेनापति खान-ए-जहां लोदी ने विद्रोह किया किन्तु शाहजहां ने इस विद्रोह को भी दबा दिया।
- शाहजहां के समय अफगानिस्तान तथा मध्य एशिया पूरी तरह स्वतन्त्र हो गया।
- शाहजहां ने अपने कर्मचारियों को वार्षिक वेतन के स्थान पर मासिक वेतन देना प्रारंभ किया।
- शाहजहां ने अपनी राजधानी आगरा से दिल्ली स्थानतरित कर दिया।
- शाहजहां के समय को स्थापत्यकला का स्वर्णकाल कहा जाता है क्योंकि इसमें वास्तुकला के क्षेत्र में बहुत से इमारत बनवाये गए। जैसे- दिल्ली का लाल किला, दिल्ली का जामा मस्जिद, आगरा में ताजमहल, आगरा के लाल किला में मोती मस्जिद, लाहौर में शीश महल आदि।

Remark :– दिल्ली के लाल किला में मोती मस्जिद का निर्माण औरंगजेब ने करवाया।

- शाहजहां ने दिल्ली के लाल किला में दीवान-ए-आम तथा दीवाने-ए-खास की भी स्थापना किया।
- दीवाने-आम में साधारण मुद्दे जबकि दीवाने-खास में महत्त्वपूर्ण मुद्दे सुलझाए जाते थे।
- शाहजहाँ के दरबार के प्रमुख चित्रकार मुहम्मद फकरी एवं मीर हासिम थे। उसने संगीतज्ञ लाल खाँ को 'गुण समुन्दर' की उपाधि प्रदान की थी।
- शाहजहां ने मयुर सिंहासन (तख्त-ए-ताऊस) बनवाया था। जिसपर कोहिनूर हीरा लगा हुआ था। यह मयुर सिंहासन दीवाने-आम में रखा रहता था। मयूर सिंहासन का वास्तुकार बे बादल खां था।

Remark :– मयुर सिंहासन पर बैठने वाला अंतिम मुगल शासक मोहम्मद शाह था।

- शाहजहां ने अकबर द्वारा चलाए गये इलाही संवत् के स्थान पर पुन: हिजरी कैलेण्डर को लागू करवाया।
- शाहजहां ने अकबर द्वारा चलाए गये, झरोखा-दर्शन तथा तुलादान प्रथा पर रोक लगा दिया।
- शाहजहाँ ने सिजदा एवं पायबोस की प्रथा समाप्त कर दी और चहार-तस्लीम प्रथा शुरू की।
- शाहजहां ने अपने जीवन के समय में ही दारा शिकोह को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था।
- शाहजहां जब बीमार पड़ा तो यह अफवाह फैल गयी थी कि शाहजहां की मृत्यु हो गयी। अत: पुत्रों में उत्तराधिकार के लिए युद्ध प्रारंभ हो गया।

➢ **उत्तराधिकार के लिए चार युद्ध हुए–**

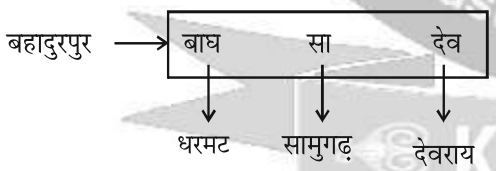

➢ **बहादुरपुर का युद्ध (बनारस)**

- यह युद्ध फरवरी, 1658 ई. में हुआ इस युद्ध में दारा शिकोह के पुत्र सुलेमान ने शाहशुजा को पराजित कर दिया।

➢ **धरमट का युद्ध (उज्जैन)**

- यह युद्ध अप्रैल, 1658 ई. में औरंगजेब एवं दारा शिकोह के बीच हुआ। जिसमें औरंगजेब जीत गया।

➢ **सामुगढ़ का युद्ध (आगरा)**

- यह युद्ध जून, 1658 ई. में औरंगजेब एवं दारा शिकोह के बीच हुआ। इस युद्ध में भी औरंगजेब जीत गया और आगरा में अपना राज्याभिषेक कराया।
- इस युद्ध को जीतने के बाद औरंगजेब शाहजहां को बन्दी बना लिया और उसे यमुना नदी के किनारे आगरा के किला में कैद कर दिया। उसे खाने में केवल एक भोजन देने को कहा जिस पर शाहजहां ने चना माँगा था।
- 1666 ई. में शाहजहां की मृत्यु हो गयी। यह मुगल सल्तनत वंश का एक मात्र शासक था जिसका अंतिम संस्कार नौकर-चाकर ने किया। इसे ताजमहल में दफनाया गया।

➢ **देवराय का युद्ध (अजमेर)**

- यह युद्ध अप्रैल, 1659 ई. में औरंगजेब एवं दारा शिकोह के बीच हुआ। इस युद्ध में भी औरंगजब जीत गया और दारा शिकोह की हत्या कर दिया गया। इस युद्ध को जीतने के बाद औरंगजेब ने दिल्ली में अपना दुबारा राज्याभिषेक कराया। इस प्रकार फिरोजशाह तुगलक के बाद औरंगजेब ऐसा दुसरा शासक हुआ जिसने अपना राज्याभिषेक दो बार करवाया।
- दारा शिकोह को इतिहासकार लेनपुल ने साम्प्रदायिक उदारता के कारण लघु अकबर कहा।

आलमगीर औरंगजेब (1658–1707 ई.)

- औरंगजेब का जन्म 1618 ई. में उज्जैन के दोहद नामक स्थान पर मुमताज के गर्भ से हुआ था। जबकि औरंगजेब का अधि कांश समय अपनी दादी नूरजहाँ के पास बीता।
- औरंगजेब के गुरु पीर मुहम्मद हकीम थे।
- औरंगजेब का विवाह फारस (ईरान) की राजकुमारी दिलरास बानो बेगम (रबिया बीबी) से हुआ।
- औरंगजेब ने अपना राज्याभिषेक दो बार करवाया।
  1. सामुगढ़ विजय (1658 ई.) के बाद
  2. देवराय विजय (1659 ई.) के बाद।
- इसके समय मुगलसत्ता अपने चरमोत्कर्ष पर थी।
- इसने इस्लामिक नियम कानून को बड़े कठोरता से अपने साम्राज्य में लागू किया और यह आदेश दिया कि मुगलकाल में बने सारे मन्दिर को तोड़ दिया जाएगा। इसी क्रम में उसने वीर सिंह बुन्देला द्वारा मथुरा में बनाए गये केशव नारायण मन्दिर को तोड़ दिया। जिस कारण जाटो ने औरंगजेब के विरूद्ध विद्रोह कर दिया।
- जाटों के विद्रोह का नेतृत्व गोकुल ने किया।
- औरंगजेब ने 1670 ई॰ में तिलपत के युद्ध में गोकुल की हत्या करवा दिया।
- गोकुल की हत्या के बाद जाट विद्रोह का नेतृत्व राजाराम ने किया था।
- राजाराम ने सिकन्दरा में स्थित अकबर के कब्र को लूट लिया और उसके अस्थियों को आग लगा दिया। जिस कारण औरंगजेब ने उसकी हत्या कर दी।
- राजाराम के बाद जाट विद्रोह का नेतृत्व चुड़ामन ने किया। इसके बाद जाट विद्रोह स्वत: समाप्त हो गया।

- औरंगजेब ने मीर जुमला को भेजकर कूचबिहार, असम तथा आराकाम के राजा से चटगांव को जीत लिया।
- औरंगजेब ने शाइस्ता खां को भेजकर बंगाल जीत लिया तथा पुर्तगालियों को दण्ड दिया और उनसे सोनद्वीप छीन लिया गया।

➢ बीजापुर पर अधिकार

- औरंगजेब ने बीजापुर जीतने के लिए जयसिंह, बहादुर खान एवं दिलेर खान को भेजा किन्तु वे लोग सफल नहीं हुए। अंततः औरंगजेब स्वयं आक्रमण करके बीजापुर को जीत लिया।

➢ गोलकुण्डा पर अधिकार

- औरंगजेब ने गोलकुण्डा जीतने के लिए मुअज्जम को भेजा किन्तु इसे सफलता नहीं मिली। बाद में औरंगजेब ने स्वयं गोलकुण्डा पर विजय हासिल किया।
- औरंगजेब के विद्रोही पुत्र अकबर-II को 9वें गुरु तेगबहादुर ने संरक्षण दे दिया जिस कारण औरंगजेब ने दिल्ली के चांदनी चौक पर उनसे इस्लाम कबूल करने को कहा और उन्होंने इस्लाम कबूल नहीं किया तो औरंगजेब ने उनकी हत्या उसी स्थान पर कर दी। जहां आज शीशगंज गुरूद्वारा है।
- अकबर-II को शिवाजी का पुत्र सम्भा जी ने भी संरक्षण दिया था। जिस कारण औरंगजेब ने सम्भा जी की खाल उधेड़ कर भूसा भर दिया और बीच चौराहे पर टांग दिया। और अपने पुत्र अकबर द्वितीय का आंख निकाल लिया।
- औरंगजेब का सर्वाधिक विरोध दक्षिण भारत में मराठा शिवाजी ने किया था।
- औरंगजेब ने शिवाजी के विरुद्ध शाइस्ता खां को भेजा, किन्तु शिवाजी ने शाइस्ता खां की हत्या कर दी।
- 1665 ई. में औरंगजेब ने राजा जय सिंह को शिवाजी को हराने के लिए भेजा। जय सिंह ने शिवाजी को पराजित करके पुरन्दर की संधि किया। इस संधि के तहत शिवाजी औरंगजेब से मिलने 1666 ई. में आगरा पहुंचे। किन्तु औरंगजेब ने उन्हें धोखे से कैद करके जयपुर महल में कैद कर दिला। शिवाजी बहुत जल्द भेष बदलकर वहां से भाग गये।
- 1679 ई. औरंगजेब ने दक्षिण भारत में पुनः जजिया कर लगा दिया।
- औरंगजेब सुन्नी मुसलमान था। यह कट्टर तथा रूढ़िवादी था।
- औरंगजेब को जिन्दा पीर कहा जाता है।
- इसने हिन्दुओं को दान में दी गयी भूमि को (खालसा भूमि) में बदल दिया।
- 1667 ई. में औरंगजेब ने झरोखा दर्शन पर प्रतिबन्ध लगा दिया। 1680 ई. में औरंगजेब ने तुलादान पद्धति पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

  Note :– चिश्ती ने जनता की समस्या सुनने के लिए झरोखा दर्शन प्रारम्भ किया जिसे अकबर ने सुचारू रूप दिया।

  Note :– अकबर तुलादान व्यवस्था के तहत स्वयं के भार के बराबर दान गरीब को देता था।
- इसने सोना-चांदी के वस्तु के उपयोग पर रोक लगा दिया तथा मुद्रा पर से कलमा हटवा दिया।
- औरंगजेब ने संगीत पर प्रतिबन्ध लगा दिया किन्तु खुद औरंगजेब वीणा का अच्छा जानकार था।
- औरंगजेब के समय मुगल साम्राज्य का सर्वाधिक विकास हुआ। इसके काल में मुगल अपने चरमोत्कर्ष पर थे।
- सर्वाधिक हिन्दु मनसबदार लगभग 337 औरंगजेब के समय में थे।
- औरंगजेब दार-उल-हर्ब (काफिरो का प्रदेश) को दार-उल-इस्लाम (इस्लाम का देश) में बदलना चाहता था।
- धार्मिक मामले की देख-रेख के लिए मोहतसिब नामक अधिकारी को नियुक्त किया गया।
- 1702 ई. में औरंगजेब ने अपने प्रिय पौत्र राजकुमार अजमी को बिहार का सूबेदार नियुक्त किया। उसने पटना को अजीमाबाद का नया नाम दिया और उसका पुनर्निर्माण भी कराया।
- बाढ़ में राजकुमार अजीम को 'अजीमुशान' की उपाधि दी गई।
- 1707 ई॰ में औरंगजब की मृत्यु हो गयी और उसे औरंगाबाद में दफनाया गया।
- औरंगजेब ने अपनी बेगम दिलराश बानो बेगम के लिए औरंगाबाद में बीबी का मकबरा बनाया। इसे द्वितीय ताजमहल तथा ताजमहल की घटिया नकल कहा जाता है।
- औरंगजेब के मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य का पतन प्रारम्भ हो गया। क्योंकि औरंगजेब के बाद कोई भी शासक योग्य नहीं था।

  Note :– MBT (मोहम्मद बिन तुगलक) तथा औरंगजेब की दोषपूर्ण दक्षिण भारत की नीति, इनके साम्राज्य के पतन का कारण बनी।

उत्तर मुगलकाल

- औरंगजेब के बाद के काल को उत्तर मुगल काल के नाम से जाना जाता है। इस काल में कोई भी शासक योग्य नहीं था।

उत्तरकालीन मुगल सम्राट	
नाम	**कार्यकाल**
बहादुर शाह प्रथम	1707-1712 ई.
जहाँदार शाह	1712-1713 ई.
फर्रुखसियर	1713-1719 ई.
रफी-उद्-दरजात	फरवरी-जून 1719 ई.
रफी-उद्-दौला	जून-सितंबर 1719 ई.
मुहम्मद शाह	1719-1748 ई.
अहमदशाह बहादुर	1748-1754 ई.
आलमगीर द्वितीय	1754-1758 ई.
शाहजहाँ तृतीय	1758-1759 ई.
शाहआलम द्वितीय	1759-1806 ई.
अकबर द्वितीय	1806-1837 ई.
बहादुर शाह द्वितीय/जफर	1837-1857 ई.

बहादुर शाह (1707–12 ई.)

- इसे शाह-ए-बेखबर के नाम से जाना जाता था क्योंकि इसे अपने राज्य के कुल क्षेत्रफल के बारे में भी जानकारी नहीं थी।
- इसका नाम मुअज्जम था।
- यह जिस वर्ष शासक बना उस वर्ष उसकी आयु 63 वर्ष थी। अत: यह सबसे अधिक उम्र में शासक बना था।
- यह अन्तिम मुगल शासक था जिसके बारे में कुछ अच्छा कहा जा सकता है।
- बहादुर शाह ने सिखों के 10वें गुरु गोबिंद सिंह के साथ मेल-मिलाप के संबंध स्थापित किये एवं उन्हें संतुष्ट करने के लिए गुरु के सम्मान में **उच्च मनसब** प्रदान किया।
- इसने राजा जयसिंह को सवाई राजा का उपाधि से सम्मानित किया था।
- 1712 ई॰ में इसकी मृत्यु हो गयी।

जहांदार शाह (1712–13 ई.)

- इसे लम्पट मुर्ख कहा जाता था, क्योंकि यह अत्यधिक दान देता था।
- इसने आमेर के राजा जयसिंह को **मिर्जा राजा सवाई जयसिंह** की पदवी दी तथा मालवा का सूबेदार बनाया।
- जहांदार शाह ने वित्तीय व्यवस्था में सुधार के लिये राजस्व वसूली का कार्य ठेके पर देने की नई व्यवस्था को प्रोत्साहन दिया, जिसे **इजारा व्यवस्था** कहते हैं।
- यह सैयद बन्धु के सहायता से शासक बना था।
- सैयद बंधु सैयद हसन अली खान और सैयद अब्दुल्लाह नामक दो भाई थे।

Remark : सैय्यद बन्धु को नृप (राजा) निर्माता कहा जाता है।

फर्रुखसियर (1713–1719 ई.)

- इसने सैयद बन्धुओं की सहायता से जहांदार शाह की हत्या कर दी।
- इसे घृणित कायर कहा जाता है। क्योंकि इसने शासक बनने के लिए जहांदार शाह की हत्या कर दिया था।
- फर्रुखसियर के शासनकाल में सैयद बंधु अब्दुल्ला खां को 'वजीर' तथा हुसैन अली को 'मीरबख्शी' के पद पर नियुक्त किया गया।
- फर्रुखसियर पहला मुगल सम्राट था जिसका राज्याभिषेक पटना (बिहार) में 1713 ई. में हुआ था।
- 1717 ई. में फर्रुखसियर को चेचक हो गया था जो ठीक नहीं हो पा रहा था।
- एक अंग्रेज डॉ॰ हेमिल्टन ने उसका इलाज किया जिससे की वह ठीक हो गया। अत: वह खुश होकर अंग्रेजों को बंगाल के हित में ₹ 3000 प्रतिवर्ष कर लेकर व्यापार करने की छूट दे दिया। इसे इतिहास में अंग्रेजी शासन का मैग्नाकार्टा कहा जाता है। मैग्नाकार्टा का अर्थ होता है बहुत बड़ा धोखा पत्र जिससे कि पूरी स्थिति बदल जाए।
- 1717 ई॰ में ही इसने मराठा पेशवा बालाजी विश्वनाथ से एक संधि किया और **क्षत्रपति** के पद को **(मराठा राज्य)** मान्यता दिया। इस संधि को मराठा साम्राज्य का मैग्नाकार्टा कहा जाता है।
- फर्रुखसियर की हत्या के बाद सैयद बंधुओं ने रफी-उद्-दरजात (1719 ई.) को गद्दी पर बैठाया, जिसकी जल्द ही बीमारी के कारण मृत्यु हो गया।
- रफी-उद्-दरजात की मृत्यु के बाद सैयद बंधओं ने रफी-उर्-दौला (1719 ई.) को गद्दी पर बैठाया। वह अफीम का आदी था। इसकी भी जल्द ही मृत्यु हो गई।

मोहम्मद शाह (1719–48 ई.)

- इसे रंगीला बादशाह कहा जाता है, क्योंकि इसे नाच गाना अत्यधिक पसन्द था।
- इसका मूल नाम रौशन अख्तर था। इसके समय मुगल साम्राज्य का बिखराव तेजी से प्रारम्भ हो गया और इसी क्रम में मुर्शीद कुली खां ने स्वतन्त्र बंगाल, शआदत खां स्वतन्त्र अवध निजामूल मुल्क ने स्वतन्त्र हैदराबाद की स्थापना कर दिया।
- 1737 ई. में मराठा पेशवा बाजीराव-I ने मात्र 500 घुड़सवार लेकर दिल्ली पर आक्रमण कर दिया और मोहम्मद शाह से अत्यधिक धन ले लिया और उससे यह वचन दिया की विदेशी आक्रमण के समय वह उसकी मदद करेगा।
- 1789 ई. में इरान तथा एशिया का नेपोलियन नादिर शाह ने दिल्ली पर आक्रमण कर दिया। इसे दिल्ली पर आक्रमण करने के लिए शआदत खान ने प्रेरित किया था। नादिर शाह कोहिनूर हीरा तथा मयूर सिंहासन को अपने साथ लेकर चला गया। इस प्रकार मयूर सिंहासन पर बैठने वाला अंतिम मुगल शासक मोहम्मद शाह था।
- 1748 ई. में मोहम्मद शाह की मृत्यु हो गयी।

अहमद शाह (1748–54 ई.)

- इसके समय पहली बार अफगान सेनापति अहमद शाह अब्दाली ने 1748 ई. में पंजाब पर आक्रमण किया। इसके समय मुगल अर्थ व्यवस्था इतनी कमजोर हो गयी कि अपने सैनिकों तथा अधिकारियों को वेतन देने के लिए मुगल दरबार के सामानों की बिक्री करना पड़ा।
- इसके समय सैनिकों ने विद्रोह कर दिया और इसे अंधा बनाकर जेल में डाल दिया।

आलमगीर-II (1754–59 ई.)

- इसके समय 1757 ई. में प्लासी का युद्ध हुआ। इस युद्ध में लार्ड क्लाईव ने सिराजुद्दौला को पराजित कर दिया।

- इस युद्ध के बाद अंग्रेजों को भारत में शासन करने का एक सुनहरा मौका मिल गया।
- 1758 ई. को दमाद-मुल्क ने आलमगीर द्वितीय की हत्या करवा दी तथा बहादुर शाह प्रथम के पौत्र शाहजहाँ तृतीय (1758-59 ई.) को सिंहासन पर बैठा दिया।

शाह आलम-II (1759–1817 ई.)

- उत्तर मुगलकाल में इसका कार्यकाल सबसे लम्बा था। इसके समय 1761 ई. में पानीपत का तीसरा युद्ध हुआ। इस युद्ध में अफगान सेनापति अहमद शाह अब्दाली ने मराठों को पूरी तरह पराजित कर दिया।
- इसी के समय 1764 ई. में बक्सर का युद्ध हुआ। इस युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व हेक्टर मुनरो कर रहा था। हेक्टर मुनरो ने शाह आलम-II के नेतृत्व में बनी त्रिगुट सेना को पराजित कर दिया।
- इलाहाबाद की संधि (1765 ई.) के तहत शाहआलम-II ने अंग्रेजों को बिहार, बंगाल एवं उड़ीसा की दिवानी (राजस्व कर) सौंप दी। इसी प्रकार बंगाल के क्षेत्र में द्वैध शासन प्रारम्भ हो गया।
- इलाहाबाद के संधि के तहत ही शाह आलम-II को अंग्रेजों का पेंशन भोगी बना दिया गया और अंग्रेजों ने शाहआलम-II को अपने संरक्षण में ले लिया।

अकबर-II (1817–37 ई.)

- यह अंग्रेजों के संरक्षण में शासक बनने वाला पहला मुगल शासक था। यह भी अंग्रेजों का पेंशन भोगी था। अंग्रेजों ने इसके पेंशन को कम कर दिया। अत: इसने अपने पेंशन को बढ़वाने के लिए राम मोहन राय को लंदन भेजा और उन्हें राजा की उपाधि दिया। अत: वे राजा राम मोहन राय के नाम से मशहूर हो गये।

बहादुर शाह-II (जफर) (1837–57 ई.)

- यह जफर नाम की पत्रिका लिखता था, जिस कारण इसका नाम बहादुर शाह जफर पड़ा।
- यह भी अंग्रेजों के संरक्षण में शासक बना।
- इसने 1857 ई. की क्रांति में भारतीय सैनिकों का नेतृत्व किया था।
- इस क्रांति के दौरान अंग्रेजों ने इसे हुमायू के मकबरे के समीप पकड़ लिया ओर उसके सामने उसके दोनों बेटों की हत्या कर दिया और उसे वर्मा की राजधानी रंगून में निर्वासित कर दिया। जहाँ 1862 ई. में अंतिम मुगल सम्राट की मृत्यु हो गई।
- रंगून में ही बहादुर शाह जफर का मकबरा है।
- बहादुर शाह जफर अपने जीवन काल में ही दिल्ली में अपना मकबरा बनवाया था। किन्तु यह मकबरा खाली रह गया, क्योंकि बहादुर शाह को रंगून भेज दिया।
- बहादुर शाह जफर अंतिम मुगल शासक था।

मुगलकालीन प्रशासनिक व्यवस्था

- मुगलवंश की शुरुआत बाबर से हुई। किन्तु बाबर अधिक समय तक शासन नहीं किया और जितना समय शासन किया। वह युद्ध में फंसा रहा। अत: बाबर ने प्रशासनिक क्षेत्र में कोई विशेष कार्य नहीं किया।
- हुमायू की शुरुआत का शासन अच्छा था। किन्तु शेरशाह ने उसे भारत छोड़ने पर विवश कर दिया और जब हुमायू लौटा तो कुछ ही दिन के बाद उसकी मृत्यु हो गयी। अत: उसने भी प्रशासनिक क्षेत्र में कोई विशेष कार्य नहीं किया।
- मुगल प्रशासनिक व्यवस्था की वास्तविक शुरुआत अकबर के समय में हुआ। अकबर ने लगभग सभी क्षेत्र में सुधार किया।
- अकबर ने प्रशासनिक सुधार से पहले सामाजिक सुधार पर जोर दिया और उसने दास प्रथा, जजिया कर, तीर्थ यात्रा कर को समाप्त कर दिया।
- भूमि सुधार के क्षेत्र में अकबर ने टोडरमल के सहयोग से आइने दहशाला पद्धति लाया। जो दस वर्षों के लिए थी।
- अकबर ने सैन्य क्षेत्र में एक नई व्यवस्था मनसबदारी व्यवस्था लाया।
- अकबर ने धर्म निरपेक्षता की नीति अपनाते हुए शासन किया।
- अकबर ने अपनी राजधानी आगरा से फतेहपुर सिकरी बनवायी।
- अकबर ने राजपूत नीति के तहत राजपूतों को भी राजा स्वीकार किया।
- अकबर किसी भी व्यक्ति को कोई पद अधिक समय तक नहीं देता था। उसने सर्वाधिक प्रधानमंत्री बदले हैं।
- जहांगीर ने प्रशासनिक क्षेत्र में सुधार के लिए न्याय व्यवस्था पर अत्यधिक बल दिया और न्याय की एक जंजीर टंगवाई। जहांगीर ने सैन्य क्षेत्र में नई व्यवस्था सिंह-अश्पा तथा दो-अश्पा नामक प्रणाली लाया। जिस सैनिक के पास दो घोड़े रहते थे उन्हें दो-अश्पा तथा जिसके पास दो से अधिक घोड़े रहते थे उन्हें सिंह-अश्पा कहा गया।
- शाहजहां के समय विद्रोह बहुत अधिक हुआ जिस कारण वह प्रशासनिक सुधार पर ध्यान नहीं दे सका।
- औरंगजेब ने धार्मिक कट्टरता की नीति अपनाई तथा इसने पुन: जजिया कर प्रारम्भ किया। इसने संगीत तथा चित्रकला पर प्रतिबन्ध लगा दिया।
- औरंगजेब ने मुहतसीब नामक एक अधिकारी की नियुक्ति किया। जो यह देखता था कि लोग शरीयत (इस्लाम) के अनुसार जी रहे हैं या नहीं।
- फर्रुखशियर ने मुगलों के पतन का रास्ता खोल दिया क्योंकि इसने मराठाओं एवं अंग्रेजों को मान्यता दे दिया।
- उत्तर मुगल काल में मोहम्मद शाह ने जजिया कर को पूर्णत: समाप्त कर दिया।

- शाह आलम-II ने इलाहाबाद की संधि के तहत बिहार, बंगाल तथा उड़ीसा की दीवानी अंग्रेजों को दे दी। इसी के समय मुगल अंग्रेजों के अधीन होने लगा और बहादुर शाह द्वितीय के समय मुगलों के क्षेत्र पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

मुगलकालीन स्थापत्य कला

- भवन, मकबरा तथा बाग बगीचे के निर्माण की विभिन्न शैलियों को स्थापत्य या वास्तुकला कहते हैं।
- मुगलों के आने से ही भारत में गुम्बज तथा मेहराब बनना प्रारंभ हुआ।
- मुगल वास्तुकला का प्रारम्भ बाबर के समय से ही चालू हो गया था।
- बाबर को चार बाग शैली का जनक माना जाता है। चारबाग शैली बाबर ने आगरा के अरामबाग में निर्माण करवाया था।
- बाबर ने बाग बगीचे के सिंचाई के लिए नहरों का प्रयोग करता था। बाबर ने अयोध्या में बाबरी मस्जिद का निर्माण करवाया था।
- हुमायूं ने दिल्ली में दीनपनाह नामक पुस्तकालय का निर्माण करवाया, जबकि हुमायूं की बहन गुलबदन बेगम ने दिल्ली में हुमायूं का मकबरा बनवाया। इसे लाल-ताजमहल के नाम से जाना जाता है।
- अकबर ने फतेहपुर सिकरी में बुलन्द दरवाजा, आगरा का लालकिला तथा ईलाहाबाद का किला का निर्माण करवाया।
- जहांगीर के समय नूरजहां ने एतमातुद्दौला का मकबरा बनवाया।

Remark :– सफेद बेदाग संगमरमर तथा इटली की पिएट्रा-डोरा शैली का प्रथम प्रयोग इसी मकबरा निर्माण में हुआ था।

Remark :– मुगलकालीन स्थापत्य कला में गोलगुम्बद से युक्त भवनों का निर्माण हुआ।

- शाहजहां स्थापत्य कला में अधिक रुचि लेता था। इसके काल को स्थापत्य कला का स्वर्ण काल कहते हैं। इसने दिल्ली में जामा मस्जिद तथा लाल किला का निर्माण करवाया।
- इसने आगरा में ताजमहल का निर्माण कराया। ताजमहल भारत का सबसे बड़ा मकबरा है।
- पिएट्रा-डोरी शैली का प्रयोग ताजमहल में भी हुआ है।

Remark :– आगरा के किला के अंदर स्थित मोती मस्जिद का निर्माण शाहजहां ने करवाया, जबकि दिल्ली में लाल किला में स्थित मोती मस्जिद का निर्माण औरंगजेब ने करवाया।

- औरंगजेब ने औरंगाबाद में बीबी का मकबरा बनवाया। जिसे द्वितीय ताजमहल या ताजमहल का घटिया नकल कहते हैं।
- अंतिम मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर ने दिल्ली में अपना मकबरा स्वयं बनवाया था।

मुगलकालीन चित्रकला

- मुगलकालीन चित्रकला बाबर के समय प्रारम्भ हुई थी। बाबर के दरवार में वेहजाद नामक चित्रकार रहते थे जिन्हें पूर्व का राफेल कहा जाता था।

Remark :– राफेल एक यूरोपीय चित्रकार था। जिसने पुनर्जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया था।

- हुमायूं के दरबार में मीर सैय्यद अली तथा अब्दुल समद नामक चित्रकार रहते थे।
- अकबर के दरबार में दसवन्द तथा बसावन नामक प्रसिद्ध चित्रकार थे। दसवन्द सबसे प्रमुख चित्रकार रहते थे। जिसकी सबसे प्रमुख चित्रकारी खानदाने तैगुरिया एवं तुतीनामा थी।
- दसवंत द्वारा बनाने गये चित्र रज्मनामा नामक पांडुलिपि में मिलते हैं। इस पांडुलिपि को मुगल चित्रकला के इतिहास में एक मील का पत्थर माना जाता है।
- जहांगीर के काल को चित्रकला का स्वर्ण काल कहा जाता था। इसके दरबार में विसन दास मोहर तथा मंसुर नामक चित्रकार रहते थे।
- शाहजहां के समय चित्रकला का विकास कम हुआ। इसके समय सर्वाधिक विकास स्थापत्य कला में हुआ।
- औरंगजेब ने चित्रकला पर यह कहकर प्रतिबन्ध लगा दिया कि चित्रकला इस्लाम के खिलाफ है। साथ ही उसने सिकन्दरा में स्थित अकबर के मकबरा से चित्रकला को मिटवा दिया।

मुगलकाल में आए विदेशी यात्री

1. **राल्फ फिन्च–** यह एक अंग्रेज था जो अकबर के समय आया था। इसी ने अकबर को गुजरात अभियान के समय समुद्र दर्शन करवाया था।
2. **कैप्टन हाकिंस–** यह भी एक अंग्रेज था जो 1608 ई. में जहांगीर के दरबार में आया। इसका उद्देश्य जहांगीर से व्यापारिक छूट प्राप्त करना था। किन्तु जहांगीर ने इसे कोई भी छूट नहीं दिया। किन्तु इसके योग्यता से खुश होकर इसे खान की उपाधि दिया। अत: इसे इंग्लिश खान कहते हैं।
3. **टामस रो–** यह भी एक अंग्रेज था। 1615 ई. में जहांगीर के समय आया। सर्वप्रथम इसी को जहांगीर ने कुछ व्यापारिक छूट दिया था।
4. **पिएत्रा डेला वेले–** यह इटली का रहने वाला था। ये जहांगीर के समय आया था।
5. **जीन बैप्टिस्ट ट्रेवर्नियर–** यह फ्रांस का रहने वाला था और शाहजहां के समय आया था। यह अंग्रेज था तथा पेशे से जौहरी (सोनार) था।
6. **वर्नियर–** यह एक अंग्रेज था। जो शाहजहां तथा औरंगजेब दोनों के समय आया था। इसने मुगलकाल में उत्तराधिकार के युद्ध को देखा था।
7. **मनूची–** यह एक अंग्रेज था। जो औरंगजेब के समय आया था। यह पेशे से एक तोप्ची (तोप चलाने वाला) था। जिसे औरंगजेब ने इसे अपने सेना में भर्ती कर लिया था।

मुगल शासकों का मकबरा

स्मरणीय तथ्य

बाबर	पहले आगर में, वर्तमान में काबुल में
हुमायूं	दिल्ली
जहांगीर	लाहौर (सहदरा)
अकबर	सिकन्दरा (फतेहपुर सिकरी)
शाहजहां	आगरा (ताजमहल)
औरंगजेब	औरंगाबाद
बहादुर शाह जफर	रंगून (वर्मा)

☛ शेष मुगल राजाओं का मकबरा दिल्ली में हूमायूं के मकबरा के समीप है।

मुगल शासकों के असली नाम

बाबर	जहीरूद्दीन-मुहम्मद-बाबर
हूमायूं	नसीरूद्दीन-मुहम्मद-हुमायूं
जहांगीर	नुर-उ-द्दीन-मुहम्मद-जहांगीर
अकबर	जलालुद्दीन-मुहम्मद-अकबर
शाहजहां	शिहाबुद्दीन-मुहम्मद-शाहजहां
औरंगजेब	आलमगीर-औरंगजेब
बहादुर शाह जफर	मोअज्जम
मोहम्मद शाह	रौशन अख्तर

मुगलकालीन विभाग

वजीर	राजस्व विभाग तथा प्रधानमंत्री
मीर बख्शी	सैन्य विभाग
मीर बहर	नौ-सेना तथा जहाज
मुहर्तासिव	नैतिक आचरण तथा धार्मिक नीति
रूद्र-उस-सुदूर	धार्मिक विभाग
काजी-उल-कुजात	न्याय विभाग
मुस्ताफा-ए-मुबालिक	लेखा विभाग
दीवाने-खालिसा	खालसा भूमि (सरकारी भूमि)

मुगलकालीन भूमि के प्रकार

1. **पोलज भूमि**
☛ यहाँ प्रतिवर्ष खेती होती थी। क्योंकि यह सबसे उपजाऊ थी।
2. **परती भूमि**
☛ यह कम उपजाऊ थी। यहाँ एक या दो वर्ष के अंतराल पर फसल उगती थी।
3. **छच्चर/चाचर भूमि**
☛ यहाँ तीन से चार वर्ष के अंतराल पर फसल उगती थी।
4. **बंजर भूमि**
☛ यह सबसे खराब भूमि थी। यहाँ पांच वर्ष या उससे भी अधिक समय के अंतराल पर खेती होती थी।

मुगलकालीन प्रमुख पुस्तक

पुस्तक (ग्रंथ)		लेखक
1. **तुजुक-ए-बाबरी**	–	बाबर
2. **बाबरनामा**	–	अब्दुल रहीम (खन-ए-खाना)
3. **हुमायूनामा**	–	गुलबदन बेगम (बहन)
4. **अकबरनामा**	–	अबुल फजल
5. **तुजुक-ए-जहांगिरी**	–	जहांगीर + मोतमिद खान
6. **शाहजहांनामा**	–	इनायत खान
7. **तबकात-ए-अकबर**	–	निजामुद्दीन अहमद

इस पुस्तक में दिल्ली सल्तनत से लेकर मुगलकाल तक का इतिहास है।

मुगलकालीन फारसी में अनुवादित पुस्तक

1. **महाभारत**	–	बदायूनी, अबुल फजल, फैजी
2. **रामायण**	–	बदायुनी
3. **अथर्ववेद**	–	बदायुनी + हाजी इब्राहिम
4. **लीलावती**	–	फैजी
5. **नल-दमयंती**	–	फैजी
6. **राजतरंगिणी**	–	शाहमुहम्मद सहबादी
7. **उपनिषद्**	–	दारा-शिकोह
8. **गीता**	–	दारा-शिकोह

☛ मुगल सल्तनत 1526 से 1857 तक रही–

➢ **इसे दो भागों में बाँटते हैं–**
(i) उन्नति का काल (1526–1707)
(ii) अवनति का काल (1707–1857)

❐❐❐

18. मराठा साम्राज्य (Maratha Empire)

- मुगल सम्राज्य के विघटन के पश्चात कई स्वतंत्र राज्यों की स्थापना हुई जिनमें से मराठा साम्राज्य सर्वाधिक शक्तिशाली था।
- मराठा शब्द का उत्पति **राठा** शब्द से हुई है।
- महाराष्ट्र की भक्ति आंदोलन तथा औरंगजेब की कट्टर धार्मिक नीति मराठों के उदय का मुख्य कारण बनी।
- मराठों के पूर्वज राजस्थान के सिसोदिया वंश के सूर्यवंशी राजपूत थे।
- मराठा सम्राज्य की राज भाषा मराठी थी।

शिवाजी

- मराठा साम्राज्य की स्थापना शिवाजी ने किया था।
- शिवाजी का जन्म 20 अप्रैल, 1627 ई. को पुना के निकट शिवनेर नामक स्थान पर हुआ था।
- इनके पिता शाहजी भोंसले तथा माता जीजाबाई थे एवं शिवाजी की सौतेली माँ तुकाबाई थी।
- इनके राजनीतिक गुरु दादाजी कोण्ड देव थे तथा इनकी आध्यात्मिक/धार्मिक गुरु समर्थ रामदास थे।
- शिवाजी के पिता (शाहजी भोंसले) पहले अहमदनगर के शासक के यहाँ नौकरी पर थे। जब अहमदनगर पर मुगलों का अधिकार हो गया तो शाहजी भोसले बीजापुर के शासक के यहाँ नौकरी करने लगे और अपनी अपेक्षित पत्नी जीजाबाई तथा पुत्र शिवाजी को पुना की जागीर सौंप दिया।
- शिवाजी के जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव उनके माता जीजाबाई तथा दादाजी गुरु कोण्ड देव का पड़ा।
- शिवाजी दक्षिण भारत में मुस्लिम शासन के स्थान पर हिन्दू साम्राज्य स्थापित करना चाहते थे।
- शिवाजी ने रायगढ़ में अपनी राजधानी स्थापित किया।
- शिवाजी को पहाड़ी चूहा के नाम से जाना जाता है।
- शिवाजी ने गुरिल्ला पद्धति या छापामार पद्धति का प्रयोग अपनी युद्ध अभियान में किया। इस पद्धति में रुक-रुक कर, छिप-छिप कर तथा अचानक हमला किया जाता था।
- शिवाजी ने गुरिल्ला पद्धति को अहमद नगर के शासक मलिक अम्बर से सीखा था।
- शिवाजी ने अपना प्रथम सैन्य अभियान 1643 ई. में बीजापुर के विरुद्ध किया और बीजापुर के सेनापति अफजल खां की हत्या कर दी।
- शिवाजी ने पनहाला, कोल्हापुर व पुरंदर का किला भी जीत लिया।
- 1657 ई. में शिवाजी की मुलाकात औरंगजेब से हुयी। शिवाजी, औरंगजेब से संधि करना चाहते थे किन्तु औरंगजेब ने स्वीकार नहीं किया।
- औरंगजेब ने शिवाजी को पराजित करने के लिए कई अभियान किये।
- शिवाजी ने औरंगजेब के मामा शाइस्ता खां को पराजित कर दिया।
- 1664 ई. में शिवाजी ने सूरत को पहली बार लूटा

  Remark :– सूरत मुगलों के समय बहुत बड़ा औद्योगिक केन्द्र था।
- सूरत को जब शिवाजी ने लूटा तो औरंगजेब शिवाजी के विरुद्ध एक बड़ा अभियान भेजा। इस अभियान का नेतृत्व राजा जय सिंह कर रहे थे। इस अभियान में शिवाजी पराजित हो गए।
- शिवाजी तथा जय सिंह के बीच 5 जून, 1665 ई. पुरन्दर की संधि हुई। पुरन्दर की संधि के तहत शिवाजी को जीते गए 35 किलों में से 23 किला मुगलों को लौटाना पड़ा। इस संधि के तहत शिवाजी ने अपने पुत्र शम्भाजी को औरंगजेब की सेवा में भेजा और खुद अगले वर्ष 1666 ई. में औरंगजेब से मिलने आगरा पहुँचे, किन्तु औरंगजेब ने धोखा से शिवाजी को जयपुर महल (आगरा) में कैद कर लिया।
- शिवाजी बहुत जल्द भेष बदलकर (1666 ई. में) फलों की टोकरी में बैठकर जयपुर महल से भाग गए।
- 1670 ई. में शिवाजी ने सुरत को दुबारा लूटा।
- 1674 ई. में शिवाजी ने रायगढ़ के किला में अपना राज्याभिषेक करवाया और छत्रपति की उपाधि धारण किया।
- शिवाजी का राज्याभिषेक गंगा भट्ट (विशेश्वर) नामक पण्डित ने करवाया। गंगा भट्ट मूल रूप से काशी (बनारस) का रहने वाला था।
- औरंगजेब कभी भी शिवाजी को पराजित नहीं कर सका अन्त में 1679 ई. में औरंगजेब ने पुनः जजिया कर लगा दिया। जजिया कर का विरोध करने वाला एक मात्र शासक शिवाजी थे। (विवश होकर औरंगजेब ने शिवाजी को राजा की उपाधि दिया।)
- शिवाजी का अंतिम सैन्य अभियान कर्नाटक के विरुद्ध (1677 ई.) था।
- प्रशासन में शिवाजी की सहायता और परामर्श के लिये जो 8 मंत्रियों की परिषद होती थे, उसे अष्टप्रधान कहा जाता था।

- 12 अप्रैल, 1680 ई. को शिवाजी की मृत्यु हो गयी।

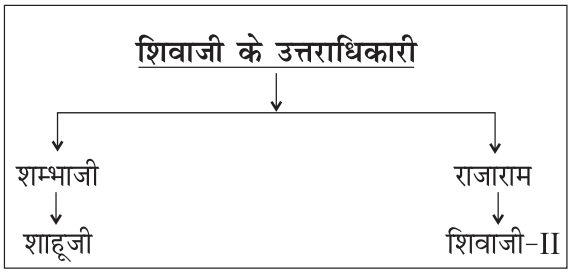

शम्भाजी (1680-1689 ई.)

- शिवाजी के मृत्यु के बाद शम्भाजी जो पनहाला के किला में कैद थे, वे वहाँ से भागकर मराठा सम्राज्य के छत्रपति बनें।
- 1686 ई. में शम्भाजी ने औरंगजेब के विद्रोही पुत्र अकबर-II को शरण दे दिए जिस कारण औरंगजेब ने शम्भाजी को यातना देकर मार दिया और उनके पुत्र शाहू जी को बन्दी बना लिया।

राजाराम (1689-1700 ई.)

- शम्भाजी के बाद राजा राम शासक बना।
- राजाराम ने एक नए पद **प्रतिनिधि** का सृजन किया। इस प्रकार शिवाजी के अष्टप्रधान में प्रतिनिधि सहित अब नौ मंत्री हो गये।
- 1700 ई. में राजाराम की मृत्यु हो गयी।

शिवाजी-II तथा ताराबाई (1700-1707 ई.)

- राजाराम की पत्नी ताराबाई ने अपने अल्पायु पुत्र शिवाजी-II को शासक बना दिया और खुद उसकी अंगरक्षक बन गयी।
- शाहूजी जो मुगल दरबार में कैद थे (शम्भाजी का पुत्र) और बहादुर शाह ने मराठा शक्ति को कमजोर करने के लिए शाहू जी को जेल में ही छोड़ दिया।
- 12 अक्टूबर 1707 ई. में शाहू तथा ताराबाई के मध्य खेड़ा का युद्ध हुआ जिसमें शाहु, बालाजी विश्वनाथ की मदद से विजयी हुआ।

शाहू (1707-1749 ई.)

- शाहूजी ने शिवाजी-II को पराजित करके छत्रपति (शासक) बन गया।
- खेड़ा के युद्ध के बाद मराठा राज्य दो भागों में बंट गया– उत्तर में सतारा राज्य जो शाहू के अधीन था तथा दक्षिण में कोल्हापुर का राज्य जो शिवाजी द्वितीय (ताराबाई के पुत्र) के अधीन था।
- शाहू ने 1713 ई. में बालाजी विश्वनाथ को पेशवा के पद पर नियुक्त किया। इस नियुक्ति के साथ ही पेशवा का पद वंशानुगत हो गया।
- 1749 ई. में शाहूजी की मृत्यु हो गयी। इनके मृत्यु के बाद मराठा प्रशासन की सारी शक्तियाँ पेशवा के हाथ में आ गयी।

➢ पेशवा का काल (1713-1818 ई.)

- पेशवा वंशानुगत था, इसका निवास पूणे था।

बालाजी विश्वनाथ (1713-1720 ई.)

- इन्हें पेशवा शाहू जी ने बनाया इन्ही के सहयोग से शाहूजी छत्रपति बने थे।
- शाहूजी ने इन्हें अपना प्रतिनिधि बनाकर मुगल शासक फर्रुखशियर के दरबार में भेजा (1717 ई.) था। फर्रुखशियर ने छत्रपति के पद को मान्यता दे दिया। इस संधि को मराठा शासन का मैगनाकार्टा कहा जाता है।
- 1720 ई. में बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु हो गयी।

बाजीराव प्रथम (1720-1740 ई.)

- यह बालाजी विश्वनाथ के पुत्र थे, इन्हें लड़ाकू पेशवा भी कहा जाता है।
- शिवाजी के बाद गुरिल्ला पद्धति का सर्वाधिक प्रयोग बाजीराव प्रथम ने किया।
- बाजीराव प्रथम ने 1728 ई. में हैदराबाद के शासक निजाम-उल-मुल्क को हराकर उनसे मुंशी शिवगाँव की संधि किया।
- बाजीराव प्रथम ने छत्रपति शाहू को संबोधित करते हुए कहा कि ''आओ हम इस पुराने वृक्ष के जड़ों पर वार करें, शाखाएं तो स्वयं गिर पड़ेंगे।'' इस पर शाहूजी ने यह प्रतिक्रिया दिया कि आप नि:संदेह ही एक योग्य पिता के एक योग्य पुत्र हैं। आपके प्रयासों से मराठा साम्राज्य का पताका कटक से अटक तक लहराए जाएंगे।
- बाजीराव प्रथम ने 1737 ई. में मात्र 500 घुड़सवार लेकर मुगल शासक मोहम्मद शाह पर आक्रमण कर दिया और दिल्ली को पूरी तरह लूटा और मोहम्मद शाह से एक संधि की जिसके तहत 5 लाख प्रति वर्ष लेकर विदेशी आक्रमण के समय सैन्य मदद देने का वचन दिया।
- 1739 ई. में इरान तथा एशिया का नेपोलियन कहे जाने वाले नादिर शाह ने दिल्ली पर आक्रमण कर दिया किन्तु बाजीराव ने कोई भी सैन्य मदद नहीं दिया।
- बाजीराव ने पुर्तगालियों से सालसेट तथा बसीन (महल) छीन लिया।
- बाजीराव हिन्दू पद पादशाही की स्थापना करना चाहते थे।
- बाजीराव का सम्बन्ध मस्तानी नामक एक मुस्लिम महिला से था।
- शाहू जी बाजीराव-I के समय ही पूरे मराठा साम्राज्य को पांच परिसंघ में बांटा था–

(i)	बड़ौदा	गायकवाड़ (प्रशासक)
(ii)	पुना	पेशवा
(iii)	नागपुर	भोसले
(iv)	इन्दौर	होल्कर
(v)	ग्वालियर	सिंधिया

बालाजी बाजीराव (1740-1761 ई.)

- बालाजी बाजीराव को नाना साहब के नाम से भी जाना जाता है।
- इनके समय मराठा साम्राज्य का सर्वाधिक विस्तार हुआ। यही कारण है कि बालाजी बाजीराव को शिवाजी के बाद मराठा का दुसरा संस्थापक कहा जाता है।
- 1749 ई. में छत्रपति शाहूजी की मृत्यु हो गयी और संगोली के संधि के तहत छत्रपति के पद को समाप्त कर दिया गया और मराठा साम्राज्य पूरी तरह पेशवा के अधीन हो गया।
- 1752 ई. में झलकी की संधि के द्वारा हैदराबाद के निजाम ने मराठों की अधीनता स्वीकार कर लिया।
- 14 जनवरी, 1761 ई. को मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय के अफगान सेनापति अहमद शाह अब्दली ने मराठों के साथ पानीपत का III युद्ध किया। इस युद्ध में मराठा बुरी तरह पराजित हो गए।
- इस युद्ध में मराठों की तरफ से वास्तविक सेनापति सदाशिव राव भाउ थे, जबकि नाममात्र का सेनापति विश्वासराव भाउ था।
- मराठों को पराजय की खबर सुनकर पेशवा बालाजी बाजीराव की मृत्यु हो गयी।
- इतिहासकार सिडनी ओवेन ने कहा है कि पानीपत का III युद्ध यह सिद्ध नहीं कर सका कि भारत में किसका शासन होगा लेकिन यह जरुर सिद्ध कर दिया कि भारत में किसका शासन नहीं होगा।

माधव नारायण राव (1761-1772 ई.)

- इसके समय मराठा साम्राज्य की खोई हुई शक्तियां दुबारा मिलने लगी। यह एक योग्य पेशवा था इसने मुगल शासक शाह आलम-II को दुबारा मुगल गद्दी पर बैठाया जो कि अहमद शाह अब्दाली के डर से दिल्ली छोड़कर भाग गया था। किन्तु इसी वर्ष माधव नारायण की मृत्यु हो गयी।

➢ नारायण राव

- इसका कार्यकाल बहुत छोटा था। इनका चाचा रघुनाथ ने इसकी हत्या कर दी।

माधव राव-II (1773-1795 ई.)

- यह अल्पायु था। अत: इसे सहायता देने के लिए बारभाई परिषद का गठन किया गया। यह परिषद 12 मंत्रियों का एक समूह था। इसमें सबसे प्रमुख नाना फडनवीस तथा महादजी सिंधिया थे।
- रघुनाथ राव (रघोवा) ने खुद पेशवा बनने के लिए अंग्रेजों के साथ 1775 ई॰ में सूरत की संधि कर ली और अंग्रेजों को उपहार में बेसीन तथा सालसेट दे दिया किन्तु बाद में अंग्रेज अपने वादे से मुकर गये।
- अंग्रेजों तथा मराठों के बीच यही तनाव आंग्ल मराठा युद्ध का रूप लिया और 3 आंग्ल मराठा युद्ध हुआ।

प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध (1775-1782 ई.)

- यह युद्ध महादजी सिंधिया के अध्यक्षता में सालाबाई के संधि के तहत समाप्त हुआ।
- इस संधि के तहत अंग्रेजों ने बारभाई परिषद को मान्यता दिया तथा माधव नारायण-II को पेशवा स्वीकार किया।
- इस युद्ध के दौरान बंगाल के गर्वनर जनरल वारेन हेस्टिंग्स थे।
- 1795 ई॰ में महादजी सिंधिया तथा माधव नारायण-II की मृत्यु हो गयी और अगला पेशवा बाजीराव-II बना।

बाजीराव-II (1795-1818 ई.)

- यह अंतिम पेशवा था। इसके समय II आंग्ल मराठा युद्ध हुआ। इस पेशवा ने अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली।

द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध (1803-1806 ई.)

- यह युद्ध बेसीन की संधि के तहत समाप्त हुआ। इस संधि के तहत पेशवा बाजीराव द्वितीय ने अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली।
- इस युद्ध के समय बंगाल के गर्वनर जनरल लॉर्ड वेलजली थे।
- इस संधि को भोंसले, होल्कर तथा सिंधिया ने स्वीकार नहीं किया और यह III आंग्ल मराठा युद्ध का कारण बना।
- अंग्रेजों ने भोंसले के साथ 1803 ई. में देवगाँव की संधि, 1803 में सिन्धिया से सुर्जी- अर्जनगाँव की संधि तथा 1805 ई. में होल्कर से राजपुरघाट की संधि की।

तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध (1817-1818 ई.)

- यह युद्ध पूणे की संधि के तहत समाप्त हुआ और इस युद्ध के समाप्ति के बाद पेशवा बाजीराव-II को अंग्रेजों ने पेंशन भोगी बना दिया गया।
- इस युद्ध के समय बंगाल के गर्वनर जनरल लॉर्ड हैस्टिंग्स थे।
- अंग्रेजों ने अंतिम रूप से पेशवा को किर्की के युद्ध में पराजित कर उसे पेंशन देकर कानपुर के पास बिठूर भेज दिया।

- इसी पेशवा बाजीराव-II का दत्तक पुत्र (गोद लिया हुआ) नाना साहब था। बाजीराव-II के बाद इसे भी पेंशन दिया जा रहा था। किन्तु लॉर्ड डलहौजी ने उनका पेंशन बन्द कर दिया। यही कारण था कि नाना साहब 1857 ई. के विद्रोह में भाग लिये।

➢ **तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध के बाद हुई संधियाँ–**

क्षेत्र	प्रशासक	सन्धि
1. पूना	पेशवा	पूना की सन्धि
2. नागपुर	भोंसले	नागपुर की सन्धि
3. इन्दौर	होल्कर	मंदसौर की सन्धि
4. ग्वालियर	सिंधिया	ग्वालियर की सन्धि

- बड़ौदा का गायकवाड़ के साथ कोई संधि नहीं की गयी क्योंकि यह तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध में शामिल नहीं था। इसने स्वत: ही अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली।
- 1818 ई. आते-आते मराठा शक्ति समाप्त हो गयी और मराठा क्षेत्र पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

➢ **पिण्डारी**

- पिंडारी हिंदू-मुस्लिम का संयुक्त संगठन था। इनमें सांप्रदायिक एकता थी।
- इनके प्रमुख नेता वासिल मुहम्मद, करीम खाँ, चीतू थे।
- यह मराठा के छोटी टुकड़ी थी यह जंगलों में रहती थी तथा छापामार युद्ध (गुरिल्ला युद्ध) करके अंग्रेजों से लड़ती थी।
- मेल्कम ग्रे नामक इतिहासकार ने पिण्डारियों को मराठों का कुत्ता कहा है।
- लार्ड हेस्टिंग्स ने पिण्डारियों का अन्त कर दिया।

मराठा सैन्य व्यवस्था

- मराठों का मुगलों से संघर्ष शाहजहां के काल से ही प्रारम्भ हो गया था।
- मराठों के पास 250 किला था। जिसमें से 23 किला को शिवाजी ने पुरन्दर की संधि के तहत मुगलों को दे दिया।
- शिवाजी ने पुर्तगालियों से लगभग 200 तोप खरीदे थे। शिवाजी ने कर्नाटक के कोलावा में नौसेना का गठन किया था।
- मराठा सैनिकों को धार्मिक स्थल, बच्चे, महिला तथा आम नागरिकों पर आक्रमण पर निषेध था।
- शिवाजी के घुड़सवारों को दो भागों में बांटा जाता है-

1. बरगीर

- यह स्थायी घुड़सवार थे और नियमित रूप से सेना में रहते थे।

2. सिलहदार

- यह अस्थायी घोड़सवार थे। यह युद्ध के समय सेना में रहते थे।
- पैदल सैनिक = पागा

मराठा प्रशासन व्यवस्था

- मराठा प्रशासन की शुरुआत शिवाजी ने की। उन्होंने प्रशासन के लिए 8 मंत्रियों की नियुक्ति किया जिन्हें संयुक्त रूप से अष्ट प्रधान कहा जाता था।
- मराठा प्रशासन में सबसे बड़ा पद छत्रपति का था उसके बाद पेशवा का पद था।

अष्ट प्रधान

➢ शिवाजी की सहायता और परामर्श हेतु आठ मंत्रियों की परिषद को ही अष्ट प्रधान कहा गया। प्रत्येक मंत्री अपने विभाग का प्रमुख होते थे। इनके पद अनुवांशिक नहीं होते थे। इनकी नियुक्ति के अधिकार शिवाजी के पास था।

1. **पेशवा–** यह प्रधानमंत्री होते थे। यह छत्रपति के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण पद था इसका कार्य छत्रपति की अनुपस्थिति में प्रशासन की देख रेख करना।
2. **मजुमदार/अमात्य–** यह वित्त मंत्री का पद था जो राजस्व का लेखा जोखा रखता था।
3. **सर-ए-नौबत–** यह सेनापति का प्रमुख पद होता था।
4. **सुमंत–** यह विदेश मंत्री का पद था। इसका कार्य विदेशी राज्यों से तालमेल बनाना था।
5. **वाकयानवीस–** यह सूचना गुप्तचर एवं संधि करने वाला मंत्री था।
6. **चिटनिस–** इसका कार्य पत्राचार व्यवस्था को देखना था।
7. **पण्डित राव–** इसका कार्य धार्मिक मामलों की देख-रेख करना था।
8. **न्यायाधीश–** इसका कार्य न्याय व्यवस्था की देख-रेख करना।

Note :– शम्भाजी के समय ही अष्टप्रधान का विघटन हो गया।

मराठा राजस्व व्यवस्था

- मराठों की कोई व्यवस्थित राजस्व व्यवस्था नहीं थी।
- शिवाजी का राजस्व व्यवस्था मलिक अम्बर के राजस्व व्यवस्थ से ली गयी थी। शिवाजी के समय राजस्व का सबसे बड़ा स्रोत कृषि कर था (भूमिकर)
- शिवाजी ने भूमिकर को 33% से बढ़ाकर 40% कर दिया।
- शिवाजी के समय सबसे महत्त्वपूर्ण कर चौथ तथा सरदेश मुखी था।

➢ **चौथ**

- यह कर शिवाजी अपने पड़ोसी देश से लेते थे। यह कुल कृषि का 1/4 भाग था।

➢ **सरदेश मुखी**

- शिवाजी यह कर अपने ही देश की जनता से लेते थे। इस कर को देने वाला इस बात को स्वीकार करता था कि उसके देश के प्रमुख शिवाजी ही हैं।
- यह कर कुल कृषि के 1/10 भाग पर था।
- मराठा सम्राज्य की सबसे छोटी इकाई गांव था जिसका प्रधान पटेल होता था।

❐❐❐